१४

सूर्य पुराणादि . १५५ रत्न.

(१८६६)

AS A DAILY HEALTH SUPPLEMENT

The daily use of Liv.52 protects the hepatic parenchyma against all kinds of toxins whether they come from the food we eat, the water we drink or even the air we breathe. As a daily health supplement Liv.52 keeps the liver functioning at its optimum, with obvious health benefits.

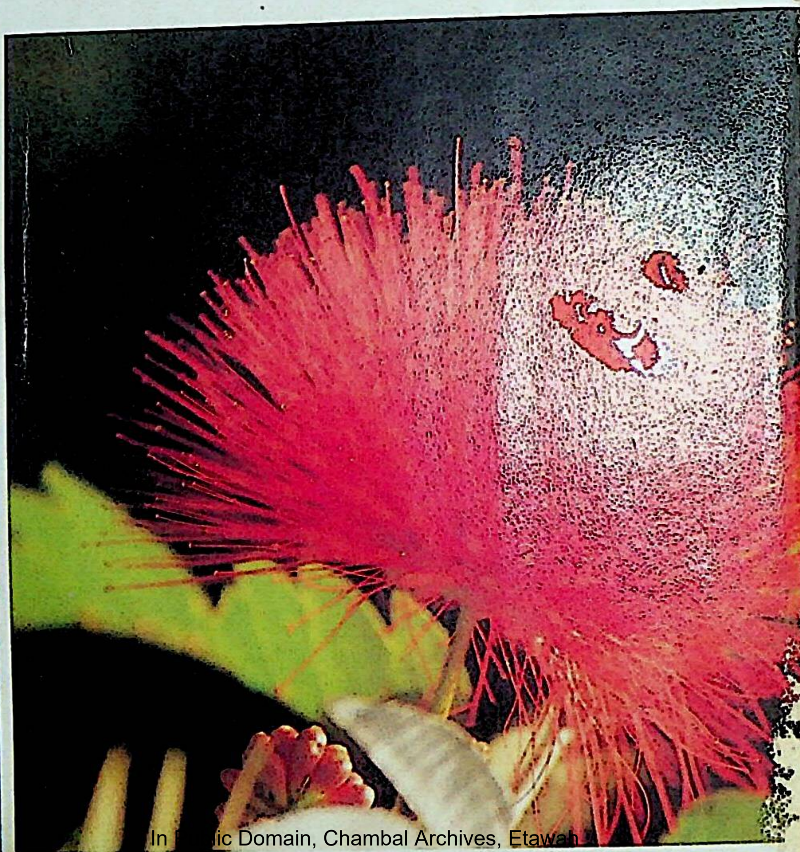
Liv.52 taken daily as a health supplement promotes growth, improves appetite and digestion and ensures better assimilation. The individual experiences a general feeling of well-being.

In underweight patients the daily use of Liv.52 encourages normal growth. In alcoholics and social drinkers the daily use of Liv.52 ensures protection against hepatic damage. In individuals taking hepatotoxic medications like anti-tubercular drugs, anti-cancer therapy, oral contraceptives etc., the daily use of Liv.52 as an adjuvant not only protects against possible hepatic damage but also overcomes the anorexia often seen with these therapies.

The Dosage

2 tablets twice a day





श्रीः

सूर्यपुराणादि.

१९९ रत्न.

सरलहिन्दीभाषामें संग्रह करके

शुद्ध करवाकर

हरिप्रसाद भगीरथजीने

मुंबईमें

"जगदीश्वर" छापखानेमें छपवाया.

आवृत्ति ७ वीं.

संवत् १९५६ शके १८२१

सन् १८९९

लीजिये ! लीजिये ! ! लीजिये !

आल्हखण्ड बड़ा २३ लड़ाई असली ५२ गढ़की मारका छपकर तैयार है.



सम्पूर्ण आल्हारसिक जनोंको विदित हो कि हमने असली आल्हखण्ड बड़ा २३ लड़ाई ५२ गढ़की मारका सुन्दर व सुवाच्य अक्षरोंसे अत्यन्त पुष्ट व सचिक्कण कागजपर छापकर प्रकाशित किया है. यह अनेक प्राचीन पुस्तकोंसे असली २ बातोंका सारांश लेकर और बड़े २ आल्हा गानेवालोंसे सत्य २ बातोंको चुनकर बनाया गया है. अतएव सर्वोपरि होगया है; इससे चढ़बढ़कर दूसरा आल्हखण्ड नहीं है; कारण यह कि इसमें सत्य २ आशय वर्णन किया गया है, कोई अ-सत्य बात इसमें नहीं पाई जाती. इस लिखनेका तात्पर्य यह है कि प्रायः मनुष्य आल्हखण्डको असत्य समझते हैं, परन्तु असलमें आल्हखण्ड असत्य नहीं है, किन्तु गाने-वालोंने असत्यरूप नामक मिर्च मिला दिया है. और हमारे २३ लड़ाइवाले आल्हखण्डमें कोई ऐसा वचन नहीं है जो अ-सत्य जान पड़े. इसीसे हमारा आल्हखण्ड असली है. क्यों कि इसमें सब लड़ाइयां प्रमाणसहित लिखी गई हैं. और इन्ही २३ लड़ाइयोंके अन्तर्गत ५२ गढ़के महाराजाओंको आल्हाआदि वीरोंने अपने पराक्रमसे जीतकर स्वाधीन किया था; वह सविस्तर वर्णित है. तथा मल्हनाके साथ विवाह क-रनेमें राजा परिमालकी वीरता, सिरसाकी पहिली लड़ाई

नर मलिखानकी वीरता, धाँधूके विवाहमें महाराजा पृथ्वीराजको सहायता देनेमें महोबेवाले सब शूरोंकी वीरता, कीर्तिसागरपर भुजरियोंकी लड़ाईमें राजकुमार ब्रह्मानन्दकी वीरता, नदिया बितवैकी लड़ाईमें लाखनि राणाकी वीरता, गांजरकी लड़ाईमें ऊदनकी वीरता, बेलाके सती होनेपर समरके अन्तमें आल्हाकी वीरता भलीभांति वर्णित है. और बड़े भारी आनन्दका हेतु हमारे आल्हखण्डमें यह है कि प्रत्येक लड़ाई प्रारंभ करनेके समय देवतावोंकी स्तुतिमें दोहा, सोरठा, कबित्त, सवैया, कुण्डलिया और आल्हा छन्दमें अच्छे प्रकार मंगलाचरण करके लड़ाईका प्रारंभ किया गया है. और भूमिका इस प्रकार लिखी गई है कि राजा परिमाल, महाराजा पृथ्वीराज, दस्सराज, बच्छराज, चौंड़ा, धांधू, आल्हा, ऊदन, ढेबा, मलिखान, ब्रह्मानन्द, लाखनि, इत्यादि शूरवीरोंका जन्मसमय तथा जीवनचरित्र संस्कृतश्लोकबद्ध प्रमाणसहित भाषामें वर्णन किया गया है. और समस्त लड़ाइयोंका तथा लड़ाइयोंके पृथक्२विषयोंका सूचीपत्रभी लगा दिया है. जिससे पाठकोंको कोई विषय ढूंढ़नेमें परिश्रम न पड़े. यद्यपि ऐसे परमोत्तम और सर्वोपरि आल्हखण्डका मूल्य अधिक रखना उचित था, तथापि सर्व साधारणको सुलभता होनेके लिये हमने बहुत थोड़ा अर्थात् केवल २॥- रुपया नियत किया है. पोष्टव्यय पृथक् लगैगा.

हरिप्रसाद भगीरथजी
कालकादेवीरोड–रामवाड़ी, मुम्बई.

श्री

॥ अथ सूर्यपुराणादिरत्नोंकी अनुक्रमणिका ॥

श्री



गणेशमंगल.

त्रिभंगीछंद.

करबंदनमण्डितओजअखंडितपूरणपण्डितज्ञानघनं ॥ गिरिनन्दिनिनंदनअसुरनिकंदनसुरउरचंदनकीर्तिकरं ॥ भूषणमृगलक्षणबीरबिचक्षणजनप्रणरक्षणपाशधरं ॥ जयजयगणनायकखलगणघायकदाससहायकविघ्नहरं ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ श्रीगणेशस्तुतिप्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ षट्पद ॥ प्रथमसुमुखयकरदन, कपिलगजकर्णसुदायक ॥ लंबोदरपुनिबिकट, बिघ्ननाशनशुचिनायक ॥ धूम्रकेतुअरुगणाध्यक्ष,

शिरचंद्रगजानन ॥ द्वादशनामप्रभात, नित्यसुमि
रोनिजआनन ॥ रटबिद्यारंभबिबाहमैं, गृहप्रवेश
गमनेसदा ॥ शुभश्रीधरगणपतिनिरबिघन, संग्रामे
संकटछिदा ॥ इतिश्रीधरकृतगणेशस्तुतिःसमाप्ता ॥

अथ गणेशाष्टकं लिख्यते.

जय२गणनायकनवनिधिदायकबुद्धिविनायकबल
वंता॥ बंदौंशिवदायकसबगुणलायकभक्तिसहायक
भगवंता ॥ कलिमलभयछायकदुष्टदहायकसुखउप
जायकशुभकरणं॥जय २जगबंदनबिघ्ननिकंदनगौ
रीनंदनतुमशरणं ॥ १ ॥ बामैअँगरिद्धीदाहिनसि
द्धीसकलसमृद्धीनवनिद्धी ॥ सबमिलतसुरद्धीभ
णगुणवृद्धीध्यानलबुद्धीचितशुद्धी ॥ मेटतदुरबुद्धी
देतसुबुद्धीउक्तउदद्धीउद्धरणं ॥जय२ ज०॥२॥ ग
जबदनगणेशंसुंदरबेषंसकलसुरेशंअग्रेशं ॥ अजरा
अकुलेशंकुँवरमहेशंकृत्तिनसेशंसिद्धेशं॥नारदमुनि

शेषंरटत महेशंकृत्तिकलेशंपापरणं ॥ जय२ज० ॥३॥ अतिज्योतिउजासाप्रगटप्रकाशाबाकुबिलासासुख रासा॥बिद्यागुणदासाध्याननिवासापूरणआसानि जदासा॥ मेटतयमपाशादरिद्रबिनाशासंकटनाशा सुखकरणं॥ जय२ ज० ॥४॥ मनमतवालासहजसुँ डालादेवबड़ालाढुंढाला॥ कुंडलकिरणालामुकुटज टालाज्योतिउजालामणियाला॥ बिंदलाभालालर कमालासलकैंग्यालाआभरणं॥ जय२ज० ॥५॥ यकदंतालानैनबिशालारूपरसालारलियाला ॥ सं तनरक्षपालाकर्मकृपालादीनदयालाप्रतिपाला॥ख लदलमलडालासुरपरिपालाभीमभुजालाभयहरणं ॥जय२ज० ॥६॥ अनादिअखंडंअतिबलदंडंप्रबल प्रचंडंभुजदंडं॥ पाखंडजखंडंदैत्यनमुंडंकरोबिहंडंखँ डखडं॥ पूजतब्रह्मांडंब्रक्षरकुंडंरबितुंडंमदझरझरणं॥ जय०॥७॥शोभितासिंदूरंअगरकपूरंकुंकुमकेशरक स्तूरं॥आनँदअतिपूरंबर्षतनूरंसदाहजूरंदुखदूरं॥मो

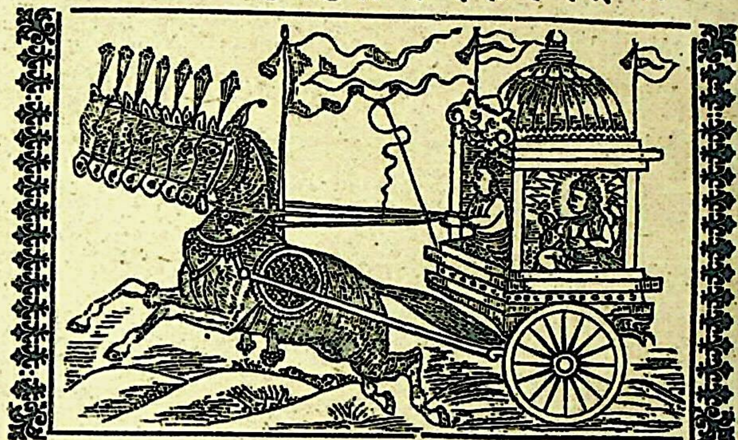
दक घृतपूरंखुरमाखूरंमोतीचूरंभाभरणं॥जय२ज० ८
मंदिरमहलानंमहिरतालंभलहरभानंसहसानं ॥ सं
भृतमणियानंकक्षकुरानंरटतपुराणंरैसानं ॥ दरगाह
दिवानंघुरतनिशानंजोरितपाणिंमुनियानं॥जय २
ज० ॥९॥ पोहोकरणान्पातंजगतबिख्यातंकलाकु
लउद्योतभणं ॥ भलगढ़जोधानंअभिरामंगावतमं
गलबंदभणं ॥ अनघनअतिपारंभर्तिभँडारंनितप्र
तिमंगलव्यारभणं ॥ जय२जगबंदनविघ्ननिकंदन
गौरीनंदनतुमशरणं ॥ १० ॥ इति गणेशाष्टकम्॥

॥ अथ श्रीगणेशबन्दन ॥

गणपतिविघ्नविनाशनहारे ॥ मंगलकरनअमंगल
नाशनसुखकेसदनउमाकेप्यारे॥ एकदंतगजमुखलं
बोदरसेंदुरतिलकनयनरतनारे ॥ होहुप्रसन्नमनोज
दहनसुतकामक्रोधकेनाशनहारे ॥जाकरध्यानधर
तसुरनरमुनिलोकहुवेदविदितसंसारे॥ ममइच्छातु
मजानतहोप्रभुतासेसेवौंचरणतिहारे ॥ तुलसिदा

सआनंदजबैहोयरामसियाउरबसतहमारे॥ इति०॥

॥ अथ सूर्यपुराण लिख्यते ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बंदौंचरणनहृदयध
रि, भक्तिप्रेमलवलीन ॥ महिमाअगमअपारहै,
सोबहुज्ञानप्रवीन ॥ १ ॥ बंदौंचरणनजोरिकर, श्री
पतिगौरिगणेश ॥ तुलसिदासअतिप्रेमसे, वर्णत
कथादिनेश ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
सूर्यदेवतासुमिरौंतोहीं ॥ सुमिरतज्ञानबुद्धिदेमो
हीं ॥ ज्योतिरूपआदितबलवाना ॥ तेजप्रतापसुअ

भिसमाना ॥ तुमआदितपरमेश्वरस्वामी ॥ अलख निरंजनअंतरजामी ॥बर्णिनजाइज्योतिकीलीला॥ धर्मधुरंधरपरमसुशीला ॥ ज्योतिकलाचहुँओरबि राजै ॥ जगमगकाननकुंडलछाजै ॥ नीलबर्णछबि हयअसवारी ॥ ज्ञाननिधानधर्मव्रतधारी ॥ परम पुनीतअदितअबिनाशी॥अजनअनादिसकलघट बासी ॥ जासुकथामैंकरौंबखाना ॥ सोपूरुषहैअ भिसमाना ॥महिमाआदितअगमअपारा ॥ तीन हुलोकज्योतिउजियारा ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ आदि तकथापुनीतहै, गावहिंशंभुसुजान ॥ तीनलोकछ बिउदितहै, करहिंप्रतापबखान ॥ २ ॥ चौपाई ॥ सुनहुउमाआदित्यप्रतापा ॥ बर्णौंबिमलजासुमैं जापा ॥ नाथमहातमसुनहुभवानी ॥ कहौंकथा पुनीतशुभबानी ॥ गिरिजासुनहुकथामनलाई ॥ मैंतोहिंअर्थकहौंसमुझाई ॥ बांझसुनैयकमासपुरा ना ॥ मनबचकर्मसुचितधरिध्याना ॥ नेमधर्मसें

करैअहारा ॥ द्वादशबर्तकरैइतवारा ॥ कुशनबिछा इकरैबिश्रामा ॥ हर्षितलेइसूर्यकोनामा ॥ इतनी टेकधरैत्रियजबहीं ॥ होहिंदयालुदयानिधितब हीं ॥ वृथाबचनभाषौनाहिंतोहीं ॥ मनबचकर्मजो पूंछौमोहीं ॥ निश्चयतौप्रसन्नबलवाना ॥ पांचपुत्र होंइअग्निसमाना ॥तिनसेजीतिसकैनहिँ कोई ॥ विद्यावंतगुणीबड़होई ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ बांझ कथामनलाइकै, टेकधरैब्रतध्यान ॥ निश्चयहोवैंपु त्रपँच, योद्धाअग्निसमान ॥४॥

इतिश्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणे बांझपुत्रपावनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥ सूर्यकथाहैअम्मृतबानी ॥ मनअस्थिरकरिसुनहुभवानी ॥ कुष्ठबर्णहोइजाके अंगा ॥ सोयहकथाकरैसुप्रसंगा ॥ रबिदिनभोज नकरैअलोना ॥ पुष्पसुबासचढ़ावैदोना ॥ विप्रबु लाइकेहोमकरावै ॥वहीभस्मलैअंगलगावै ॥ निश्च यकुष्ठबर्णछुटजाई ॥ धनिमहिमाहैसूर्यगुसांई ॥१॥

॥ दोहा॥ जाकोअंगसकुष्ठहै, सोयहसुनेपुरान ॥
निश्चयसूर्यप्रतापते, पावैकायादान ॥ १ ॥

इतिश्रीसूर्यपुराणे कुष्ठीकायादानपावनोनाम
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ सूर्यकथामैंकहौं बुझाई ॥ मनवचकर्मसुनहु चितलाई ॥ जाकेबर्णअंगमहँहोई ॥ अस्थिरकथापढ़ैनरसोई ॥ जाकेगाढ़परैअति भारी ॥ सोयहकथाकरैअनुसारी ॥ पांचरतनरक रहतवारा ॥ मनवचकर्मकथाअनुसारा॥ अगरसुचंदनलेपनकरई ॥ निशिदिनध्यानसूर्यपरधरई ॥ निश्चयवर्णसकलमिटिजाई ॥ धनिमहिमाहैसूर्य गोसांई ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाकेबर्णअंगमहँ, सोनितसुनेपुरान ॥ धन्यधन्यआदित्यकी,महिमा करौंबखान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सूर्यकथामैंकहौं बुझाई ॥ मनअस्थिरकैसुनुचितलाई ॥ जोनरहोयअंधदोउलोचन ॥ सोयहकथासुनैदुखमोचन ॥ निशिदिनकरैअलोनअहारा ॥ त्रिविधभांतिकरने

मअचारा ॥ पीपरतरुतरसुनैपुराना ॥ पावैन यनैअंधबलवाना ॥ अंधालोचननिश्चयपावै ॥जो यहकथासुचितलवलावै ॥ २॥ दोहा ॥ अंधालोच नपावही, जोजानैप्रभुएक॥ पुलकिततनेमपुनीतम न, धरैकथापरटेंक ॥२॥ मनबचकर्मसुप्रीतिदृढ, भो जनकरैअलोन॥रविदिनहर्षितसुचितमन, पुष्पच ढावैदोन ॥ ३ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणे अंधलोचनपावनोनाम तृतीयोध्ययः ॥ ३ ॥

॥चौ०॥यात्राकरिनरचलैबिदेशा॥सोयहपढैपुरा णसुदेशा ॥ निश्चय तासुसकलसिधिहोई ॥ लाभभ वनचलिआवैसोई ॥ जाकेगाढ़परैअतिभारी ॥ सो यहकथाकरैअनुसारी ॥ निश्चयऋणहुसकलमिटि जाई॥धनिमहिमाहैसूर्यगोसांई ॥१॥दोहा॥ यात्रा करिनरचलैजब,तबयहपढैपुरान ॥ निश्चयसकलम नोरथ, पुरवहिँ श्रीभगवान ॥१॥ चौपाई ॥ सुन हुउमामैंकहौंबुझाई ॥ मनबचकर्मसुनहुचितलाई॥

ऐसीमहिमाआदितदेवा ॥ जासुकरहिंसुरनरमुनि
सेवा ॥ मेटतगाढ़सकलतनुत्रासू ॥ पुलकप्रेमहिय
हर्षहुलासू ॥ दीनानाथनिरंजनसाँई ॥ महिमासु
खतेबर्णिनजाई ॥ जोदंडवतकरैब्रतदाना ॥ सोनतु
लेयहिकथासमाना ॥ तेजप्रतापबर्णिनाहिंजाई ॥
सूरजकथापढ़ैमनलाई ॥कहैंशंभुयहकथापुनीता ॥
रविप्रतापतेभयेउँअजीता ॥ २ ॥ दोहा ॥ अस
महिमाआदित्यकर, बर्णौंप्रेमउछाह ॥ सुनहुउमा
अतिप्रेमसे, प्रभुकीरतिअवगाह ॥ २ ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ कहौंकथापुनीतशुभबानी ॥ छठोंमहा
तमसुनहुभवानी ॥ कार्तिकचैत्रपुण्यबहुभारी ॥
साजहिँ अर्थसकलनरनारी ॥ चंदनअगरकपूरकी
बाती॥पूजानाथकरहिँ बहुभांती ॥ जोउरमनोका
मनाराखै ॥ पुलकिध्यानधरिमुखतेभाखै ॥ सोका
रजपुरवहिंभगवाना ॥ ऐसेहैंप्रभुज्ञाननिधाना ॥
॥ ३ ॥ दोहा ॥ लीलाअगमअपारहै, कृपासींवब

ल्वान॥बर्णहुँकथापुनीतअति, सुनुअस्थिरंधरिध्या
न ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥सुनहुउमाप्रभुचरितअ
पारा ॥ नाथकथाबर्णौंविस्तारा ॥ सिंहलद्वीपनग
रकानाँऊ ॥ तिहिंमेंबसतपरीक्षितराऊ ॥ महापु
नीतधर्मउपकारी ॥ तासुभवनएकसुताकुमारी ॥
सोनितकरैसूर्यकीपूजा ॥ सेवैसूर्यऔरनहिंदूजा॥प्रे
मसेभक्तिकथामनलावै ॥ निशिदिनटेकसूर्यजप
ध्यावै ॥ इहिकारणपरसंगगुसांई॥सेवैसूर्यहिंमन चि
तलाई ॥ तासुभवनप्रभुकरहिंकलेवा ॥ तीनभुव
नपावैंनहिँ भेवा ॥ एकसमयअसअचरजभयऊ॥
कन्यासुरसरितीरहिंगयऊ ॥ मज्जनकरनलगीसोबा
ला ॥ हृदयबिराजतमोतिनमाला ॥ तेहिअंतरऋषि
नारदआए ॥ ताहिदेखिमुनिनयनलुभाए॥ ठाढ़भ
एमुनिसुरसरितीरा ॥ लियेउछीनिकन्याकोचीरा ॥
कन्याजलमैंकरतपुकारा ॥ अंबरदीजियऋषयहमा
रा॥कहनारदसुनुकन्याबाता ॥ हमसेकरहुपुरुषकर

नाता॥सुनुमुनितुम्हारीमतिबौराई ॥ऐसेबचनकहो कहुँजाई॥मोसीकन्यालाखपचीशा॥ ऐसाबचनन कहौमुनीशा ॥ अबबिनतीममसुनहुसुजानी ॥अंब रदेहुहमहिंमुनिज्ञानी ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ नभना रिजलमैंअहौं, तुमहिंकहौंकरजोरि ॥ करिकरुणा करुणायतन, अंबरदीजैमोरि ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ जबकन्याबहुबिनतीलाई ॥ तेहिक्षणमुनितबगय उलजाई ॥ अंबरदैमुनिभवनसिधाए ॥ तेहिअव सरतहँशंकरआए ॥ सोसुनिमुनिहिँ शापबशकी न्हा ॥ सोआदितसौंकहवैलीन्हा ॥ जहांकरतहीमैं असनाना ॥ मुनिअंबरलैगेअज्ञाना ॥ ताहिसमय आएशिवभोरा॥संगउमाजसचंद्रचकोरा॥भक्तिस हितप्रभुनायउँमाथा ॥ पूंछिकुशलतबत्रिभुवनना था ॥ कुशलकहाशिवमनमुसकाई ॥ बैठेउप्रभुतहँ कहाबुझाई ॥ पूंछाप्रभुहिँ शिवहिंकरजोरी ॥ नाथ सुनहुयकबिनतीमोरी ॥ काअपराधकीन्हमुनिभा

री ॥ सोप्रभुमोसोंकहौबिचारी ॥ तबप्रभुकहासुन
हुहोभोरा ॥ कन्याप्राछितसेवकमोरा ॥ सोज्रुसुना
मुनिकरअज्ञाना ॥ दिष्टबिलोकेमनकरध्याना ॥ य
हिकारणमुनिशापजोदयऊ ॥ तेहितेअंगबर्णमुनि
भयऊ ॥ इतनासुनिमनशिवमुसकाने ॥ दिष्टभुला
नेउमनअज्ञाने ॥ सुनतबचनक्रोधितमनभयऊ ॥ क
न्यासहतबमुनिपहँगयऊ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ ॥
मुनिसोंकहाबचनतब, क्रोधकियेमनलाइ ॥ जस
कौतुकतुमकीन्हेउ, मोहिंकहहुसमुझाइ ॥ चौपा
ई ॥ ॥मुनिकरजोरिसुबचनसुनाए ॥ धरिपद
कमलसूर्यगुणगाए ॥ कहमुनिप्रभुसुनुबातहमारी ॥
मोसोंचूकभईअतिभारी ॥ यहअपराधक्षमहुप्रभु
मोरा ॥ बिनवौंनाथदोउकर जोरा ॥ तबप्रभुकहा
सुनहुममबानी ॥ इहांकेलोगसकलयुरुज्ञानी ॥
तातेमुनिममलेहुज्रुशापा ॥ जसकीन्हेउतसभुगत
हुपापा ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तीनभुवनकेस्वा

मिहैं, ज्योतिकीन्हपरकास ॥ हर्षिकथाजोगाइहै, लहैसोरविढिगबास ॥ ६ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणेराजपरीक्षितकन्या नारदशापदानंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥ पंपापुरयकनगरकनाऊँ ॥ हलधर बिप्रनृपतिवहिठाऊँ ॥ नगरबसैमानहुँकैलासा ॥ धर्मकथातहँहोइप्रकाशा ॥ पूजैसूर्यहिँ सोदिन राती ॥ निशिदिनटेंकधरैबहुभांती ॥ अग्नि कोटचारौंदिशिताहां ॥ श्रीसूरजकोआश्रमजाहां ॥ तहांतडागअखंडसुहावा ॥ चारौंघाटसुवर्णबँधावा ॥ तहांथंभयकबड़ाबिशाला ॥ शतयोजनसोरहेउपताला ॥ तेहिथंभश्रीआदितकरबासा ॥ प्रातहिंथंभसोलागुअकासा॥ यहिबिधिआदितआवहिंजाहीं ॥ सुनहुकथापुनीतमनमाहीं ॥ मैंतोहिँ अर्थकहौंसमुझाई ॥ आदितकथापढ़ैमनलाई ॥७॥

दोहा॥धनिआदितपरमेश्वर,महिमाअगमअपार ॥ तीनभुवनतमभागेउ,भयउसकलउजियार ॥१॥ क्रु

छीध्यानहिलावै, पावैकायादान ॥ असप्रभुअंतर जामी, कृपाकराहिंभगवान ॥ २ ॥ कपटछोंड़िजो लावही, मनबचक्रमअनुराग ॥सुरजनसबअस्तुति करहिँ ,प्रसबहोइबड़भाग ॥ ३ ॥ सबगुणआगरशी लतुम, जगमहँरूपनिधान ॥ मनबचकर्मतेहर्षित, सज्जनकरहिंबखान ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ गिरिजासुन हुकथामनलाई॥पूरबदिशिजहँउगहिंगोसांई ॥ ता हिदिशायकश्रीपुरदेशा॥तहांकोराजारूपमहेशा ॥ करैसदाआदितकीपूजा ॥ वहिसमानकोउभक्तन दूजा ॥ यहिबिधिसकलनगरउजियारा ॥तहांशैल यकबड़बिस्तारा ॥ सहसकोशपरबतपरमाना ॥ त हांबसहिंआदितबलवाना ॥ दोइपहरतहँकरहिँ नि बासा ॥ फिरिपश्चिमदिशिप्रेमहुलासा ॥ मनबचक र्मकथागुणगाई ॥ सूर्यचरितमैंतुमाहिंसुनाई ॥ सु निगिरिजाचकितभयबानी ॥ तेजप्रतापसुनतहर्षा नी ॥ धनिआदितजिनकोयहलीला ॥ धर्मधुरंधर

परमसुशीला ॥ जोनरकथासूर्यकीगावै ॥ चढ़िवि
मानबैकुण्ठसिधावै॥ सूर्यकथाहैअम्मृतसानी ॥ अ
स्तुतिहर्षितकरतबखानी ॥ ८ ॥ ॥ छंद ॥ ॥
तुमप्रभुस्वामीअंतर्यामी ज्योतिकलाछबिउदितम
हाँ ॥ रूपनिधानाश्रीभगवाना करहुकृपाहमअ
धमपहाँ ॥ छबिज्योतिबिराजैकुंडलछाजै तवप्रताप
हैत्रैभुवना ॥ महिमाप्रभुतोरीहृदयधरोरीलेतनामप्र
पातकहरना ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥
गिरिजाकैहदोउकरजोरे॥ एकसंदेहअवरमनमोरे॥
उत्तरदिशिकहँउगहिंगुसाँई ॥ सोमोहिंनाथकहौ
समुझाई ॥ कहनलगेशिवकथारसाला ॥ जेहिबि
धिउत्तरउगहिंकृपाला ॥ उत्तरदिशिकरकथाकहा
नी ॥ मनअस्थिरकरिसुनहुभवानी ॥ तहाँशैलय
कबड़बिस्तारा ॥ शतयोजनसोउच्चपहारा ॥ झंपै
भानुकिरणनाहिंधावै ॥ यहिबिधिपुरअँधियारजना
वै ॥ तहांबासकलियुगकरहोई ॥ तबसोपापमलि

छहोयसोई ॥ यहिबिधिकबहुँनऊगहिंभानू ॥ मैं तोहिँ अर्थकहौंपरमानू ॥ एकसमयअचरजअसभ यऊ ॥ नारदमुनितहवाँचलिगयऊ॥देखानगरसक लअँधियारा ॥ धर्मकथाकरनामबिसारा ॥ फिरिफि रिनगरसकलमुनिदेखा ॥ पापशिवायअवरनहिले खा ॥ मनमेंनारदकरहिँ बिचारा ॥ आयेकहांनगर अँधियारा ॥ असकरिनारदकोपेउजबहीं ॥ नग रहिँ शापदीन्हमुनितबहीं ॥ कुष्ठीहोउसकलनरना री ॥ धर्मकथाकरनामबिसारी ॥ कुष्ठवर्णभयेसबके अंगा ॥ ओठौबदनसकलतनुभंगा ॥ कोउनरहा कुष्ठसनबाँचा ॥ सबकेकुष्ठवर्णभएसाँचा ॥ ब्याकुल भएतहाँनरनारी॥त्राहित्राहिकरतबहिँ पुकारी॥शा पितकरिसूरजपहँआए ॥ उत्तरदिशिकरअर्थजना ए॥ सुनतकथाआदितमुसकाने॥ कहाँगयेमुनिउ तरभुलाने ॥ शापितकरिउत्तरकहँआए ॥ अबहम रेपहँबातजनाए ॥ अबैकहहुमुनिपूँछौंतोहीं ॥ उ

अशापकबछूटैओहीं ॥ कहनलगे मुनिनारदजब
हीं ॥ अंगबर्णमुनिदेखातबहीं ॥ अंगबर्णमुनिदे
खाकैसा ॥ मानहुँहंससरोवर बैसा ॥ चकितभएस
बमुनिकेअंगा ॥ निकसोबर्णसकलतनुभंगा ॥ तनु
महँकुष्ठजोमुनिकेभयऊ ॥ व्याकुलहोयसूर्यसनकह्य
ऊ ॥ अबप्रभुसबमैंपूँछौंतोहीं ॥ केतकेअंगबर्णहैमोहीं ॥
कृपासिंधुप्रभुपरमअगाधा ॥ बर्ण भयोतनुकेहिअप
राधा ॥ सोमोहिँ नाथकहौसमुझाई ॥ जेहितेअंग
बर्णमिटिजाई ॥ तबप्रभुकहासुनहुममबानी ॥ उहाँ
केलोगसकलयुरुज्ञानी ॥ सबकहँशापदीन्हतुमभा
री ॥ व्याकुलभयेसकलनरनारी ॥ सबकरअंगभं
गतुमकीन्हा ॥ उत्तरजाइशापतुमदीन्हा ॥ ९ ॥
दोहा ॥ अबमैंकहिहौंतुमहिँ सन, कथापुनीतअ
भंग ॥ शापअनुग्रहकरहुतौ, बर्णमिटैतब अंग ॥५॥
चौपाई ॥ नीकबचननारदमुनिमाना ॥ उत्तरदि
शिकहँकीन्हपयाना ॥ द्वादशदिनमहँउत्तरगयऊ ॥

नगरशापसुअनुग्रहकियऊ ॥१०॥ दोहा ॥ नारदउ
त्तरजाइकै, शापअनुग्रहकीन्ह॥ तेजप्रतापआदित्य
कर, हर्षितवर्णनकीन्ह ॥ ६ ॥

इतिश्रीसूर्यमाहात्म्ये नारदशापवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ॥५॥

॥ चौपाई ॥ असकहिमुनिआदितपहँआये ॥ उत्त
रदिशिकीकथासुनाये॥ शापअनुगृहकीन्हगुसाँई॥
धन्यप्रतापबर्णिनहिंजाई ॥ असमुनिआदितहर्षि
तभयऊ ॥ दयालगीतबमुनिसोंकह्यऊ ॥ अबज
निऐसेभ्रमभुलाहू ॥ आशीर्वादलेहुघरजाहू ॥ भ
ईकृपामुनिपरबहुभारी ॥ वर्णिनजाइज्योतिअधि
कारी ॥ बिदाहुएमुनिग्रहकोआए ॥ हर्षितहुएसू
र्यगुणगाए ॥ हर्षितमंगलगावहिंनारी ॥ धन्यसूर्य
सबकरहिंपुकारी ॥ धनिआदितकायाकेराजा॥जा
कीज्योतिचहुँओरबिराजा ॥ कोटिविप्रतहँनेवतिप
ठावा ॥ अस्तुतिनारदसूर्यकोगावा ॥ अश्वमेधक
रैनमुनिलागे ॥ तीनभुवनकेदारिदभागे ॥सबकहँ

नारदनेवतिपठाए ॥ रथचढ़िदेवतहाँसबआए ॥ ब्रह्माविष्णुआदित्रिपुरारी ॥आयेसहितसकलनरनारी ॥ बहुप्रकारमुनिसबहिंजिवाए ॥ हर्षितहोयसूर्यगुणगाए ॥ हर्षितमंगलगावहिंनारी ॥ ब्राह्मणबेदपढ़ैंजयकारी ॥ अक्षतचँदनपानपकवाना ॥ पूजाकरहिंधरहिंमुनिध्याना ॥ हर्षितहोयसूर्यगुणगावैं ॥ तालपखावजशंखबजावैं ॥ २ ॥ दोहा ॥ यज्ञकीन्हमुनिनारद, शोभाबर्णिनजाइ ॥ तेंतिसकोटिदेवतहँ, हर्षिकथागुणगाइ ॥ १ ॥

इतिश्रीसूर्यमाहात्म्येमहा ० नारदयज्ञशोभावर्णनोनाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥ जोनरधरैकथापरध्याना ॥ ताकरहोयपरमकल्याना ॥ जोयँहकथापढ़ैमनलाई ॥ तापरआदित्यहोयँसहाई ॥ धनिप्रतापआदित्यबलवाना ॥ तेजप्रतापसुअग्निसमाना ॥ १ ॥ दोहा ॥ गिरिजापूँछैंशंभुसन, सूर्यचरितमनलाय ॥ दक्षिणदिशाकहाँउगहिं ,नाथकहौसमुझाय ॥ १ ॥

चौपाई ॥ कहँशंभुसुनशैलकुमारी ॥ सूर्यचरितमैं कहौंबिचारी ॥ कहनलगेशिवकथाबुझाई ॥ जेहिंबिधिदक्षिणउगैंगुसाई ॥ दक्षिणदिशियकनगरअनूपा ॥ जयमलबिप्रजहांकोभूपा ॥ हर्षितभजनकरैंदिनराती ॥ जहाँरहैंआदित्यबहुभांती ॥ यहिबिधिप्रभुकरज्योतिबिराजै ॥ अनहदनादघंटध्वनिबाजै ॥ तेंतिसकोटिदेवताताहाँ ॥ जगन्नाथकोआश्रमजाहाँ ॥ दक्षिणदिशिमेंकाशिप्रयागा ॥ तहाँअहैयकबिमलतड़ागा ॥ तहँबलभद्रसुभद्रासंगा ॥ जहाँबसहिँ श्री सुरसरिगंगा ॥ कृपासिंधुप्रभुपरमअगाधा ॥ निशिदिनभजनकरैंअवराधा ॥ २ ॥ दोहा ॥ दक्षिणदिशापुनीतहै,सुनहुउमाचितलाइ ॥ आगिलअर्थजुहोइहै, सोमैंकहौंबुझाइ ॥ २ ॥ चौपाई ॥ कलियुगमतीहोइजबजैहैं ॥ मानुषकोतनुमानुषखैहैं ॥ तबप्रभुलैअवतारकलंकी ॥ मानुषतनहोइहैनिकलंकी ॥ दक्षिणदिशाउगहिंरबि जाई ॥ आगि

लअर्थकहौंसमुझाई ॥ धर्मकथाचलिहैंबहुभांती ॥
नेमधर्मकरिहैंदिनराती॥बिप्रजिंवाइआपतबजेंइहैं॥
निश्चयनामसूर्यकेगइहैं ॥ लक्ष्मीघरघरकरहिंनिबा
सा ॥ धर्मकथातहँहोइप्रकाशा ॥ वृथाबचनकोईन
हिंभाषै ॥ निशिदिनध्यानसूर्यपररखै ॥ धर्मबिचा
रसूर्यतहँकरिहैं ॥ द्वादशकलाज्योतिलैबरिहैं ॥३॥
॥ दोहा ॥ ॥ द्वादशकलालैऊगिहैं, आदित्यतब
हींआइ ॥ पूर्वजन्मकेपातकन, कथापढ़तक्षयजाइ॥
॥३॥चौपाई॥ ॥ आगिलअर्थजुटेरिखुनावा ॥ सु
निगिरिजाकेमनअतिभावा॥ मग्नभईसुनिशिवकी
बानी ॥ हर्षिसूर्यगुणकरहिंवखानी ॥ तीनभुवन
जेहिँनावैंमाथा ॥ सोप्रभुनाथअनाथकेनाथा ॥
जोयहकथापढ़ैमनलाई॥बाढ़ैधर्मपापक्षयजाई ॥४॥
॥ दोहा ॥ ॥ याहिकथामनलाइकै, टेकधरैब्रतध्या
न॥जोइच्छाकरिपढ़ैनर,सोपुरवहिँ भगवान॥४॥

इतिश्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणे कल्क्यवतारवर्णनोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

॥ अथ व्रतबिधानंलिख्यते ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ कार्तिकमासजोप्राणीरहई ॥ तीनिपत्रतुलसीदललहई ॥ अगहनमासध्यानजोधरई ॥ शक्करचाटिकैभोजनकरई ॥ पूसमासजोप्राणीरहई ॥ तीनदूबकेभोजनकरई ॥ माघमासकेसुनहुबिचारा ॥ तिलखंडीकोकैरअहारा ॥ फाल्गुनमासजोयहिबिधिरहई ॥ दहीखंडकेढिगहोरहई ॥ चैत्रमासकेसुनहुबिचारा ॥ घृतगंडूषकरिकैरअहारा॥ मासबैशाखजोप्राणीरहई ॥ अमिलतासचाटीसोरहई ॥ ज्येष्ठमासकेसुनहुबिचारा॥ अँजुलितीनिजलकैरअहारा ॥ आषाढ़मासजोप्राणीरहई॥ तीनिमिरचकाभोजनकरई॥ सावनमासयहीव्योहारा ॥ कपिलामूत्रगँडूषअहारा ॥ भादौंमासजोयहिबिधिरहई ॥ गोबरखंडीकेढिगरहई॥ आश्विनमासकेसुन

हुबिचारा ॥ चंदनखंडिकैकरैअहारा ॥ इतिश्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणेव्रतमाहात्म्यसमाप्तम् ॥ १ ॥

॥ इति श्रीसूर्यपुराणं समाप्तम् ॥

॥ अथ गणेशपुराण लिख्यते ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ एकरदनगजवदनके पदबंदौंकरजोरि। कृपाकरहुशिवनंदन,बुद्धिबढ़ैजेहिमोरि ॥ १ ॥ व्यासआदिनरपुंगव,नारदआदिमुनीश ॥ दिनकरब्रह्माशेषगुरु, सबकहँनावौंसीश ॥२॥ चौपाई ॥ ॥ राजायुधिष्ठिरउवाच ॥ सुनौ

स्वामितुममदनगोपाला ॥ सदाकरौसंतनप्रतिपा
ला ॥ बिपतिहमारिबिलोकहुस्वामी ॥ कृपासिंधु
उरअंतर्यामी ॥ छलकीन्होदुर्योधनराजा ॥ जीति
लीन्हममराजसमाजा ॥ बनहिंनिकारिदीन्हदुख
दाई ॥ काननफिरौंदुसहदुखपाई ॥ तेहितेप्रभुबिन
वौंकरजोरी ॥ केहिबिधिपावौंराजबहोरी ॥ कृष्णक
हासुनुबचननरेशा ॥ तुमहितलागिकहौंउपदेशा ॥
पूजहुगणपतिमनचितलाई ॥ तोहिंपूजेसबदुखमि
टजाई ॥ बिघ्नहरणहैजाकरनामा ॥ तिन्हपूजेपैहौ
बिश्रामा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णवचनसुनिधर्मसु
त, बोलेपदशिरनाइ ॥ गणपतिकवननाथहैं, सोमो
हिँ कहौबुझाइ ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुनौभूपपरमार
थबादी ॥ गणनायकहैंदेवअनादी ॥ शिवकेतनयबि
दितत्रैलोका ॥ तिन्हैपूजिजगहोइबिशोका ॥ सुनि
कहधर्मतनयकरजोरी ॥ नाथसुनोयहबिनतीमोरी ॥
गणपतिआदिदेवतुमकहेऊ ॥ शंभुतनयकेहिभाँति

सोभयऊ॥ यहससुझाइकहौयदुनाथा ॥ बारबारना
वौंपदमाथा ॥ हँसिकहकृष्णसुनोतुमभूपा ॥ गण
नायककीकथाअनूपा॥आदिदेवकोउपारनपावैं॥
वेदपुराणहुमुनिजनगावैं॥आदिकल्पतेजगबिस्ता
र॥ तबतेगणपतिपूज्यसुवारा ॥ दोहा ॥ तीनलो
कसबपूजते, सुरनरआतमशेष ॥ शंभुतनयजेहि
भांतिभे, सोअबसुनोनरेश ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥
एकसमयगिरिवरकैलासा ॥ सहितउमाशिवकरत
बिलासा॥ करिकछुरामकथागुणगाना ॥महादेवत
बगयेअस्नाना ॥ बैठीगिरिजासदनसुहाये॥ तेहीस
मयनारदऋषिआये ॥उठिकैउमाबिनयबड़िकीन्हा
आसनदैचरणोदकलीन्हा ॥ धन्यभाग्यमुनिआजु
हमारे ॥ कृपाकीन्हमुनिइहपगुधारे॥ केहिकारण
आगमनतुम्हारा ॥ कहौऋषीश्वरकरतबिचारा ॥
तबबोलेनारदमृदुबानी ॥ बचनएकममसुनहुभवा
नी ॥ दोहा ॥ बहुदिनबीतेब्रह्मपुर, मनमहँभयउँ

उदास॥ शिवदर्शनकेकारने, चलिआयउँकैलास ४
॥चौपाई॥ शंभुकहांगयेशैलकुमारी ॥ सोतुमह
मसोंकहौबिचारी ॥ बोलींबचनउमाहितकारी ॥ म
ज्जनकरनगयेत्रिपुरारी ॥ तबनारदबोलेमृदुबानी॥
सुनोएकआश्चर्यभवानी ॥ नरशिरमालशंभुउरजे
ऊ॥ तुमजानहुतेहिकरकछुभेऊ ॥ उमाकहाप्रभुमैं
नहिंजानौं ॥ आपसोंमिथ्याकहाबखानौं॥ तबना
रदकहबचनरसाला ॥ तुम्हरेशिरनकेरिहैमाला ॥
तुमसेशिवकछुअंतरराखा ॥ जोयहकथाकबहुँनहिं
भाखा ॥ जबआवैंशिवकरिस्नाना ॥ तबतुमपूँ
छेउसकलविधाना ॥ ॥ दोहा ॥ असकहिनारद
नाइशिर, चलेभवनहर्षाय ॥ मुनिबरकेरेबचनसु
नि, बैठिउमाबिलखाय ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ यहि
अंतरशंकरचलिआए ॥ देखीउमाबिषादबढ़ाये ॥
तबशंकरबोलेमृदुबानी ॥ केहिकारणदुखकीन्हभ
वानी ॥ उमाकहाशिवपदशिरनाई ॥ संशयएकअ

हैममसाँई ॥ तुम्हरेहृदयमुंडनकीमाला ॥ सोकेहि केशिरआहिंकृपाला ॥ तबशंकरबोलेमुसकाई ॥ क वनेतुम्हरीमतिभरमाई ॥ मुंडमालममहृदयभवानी ॥ तेहिकीकथातुमसुनोसयानी ॥ जबजबजन्मतु म्हारोहोई ॥ रामकृपासोंऽयाहौंसोई ॥ समयपायज बत्यागहुदेहा॥तुमशिरकेसबमालजुएहा ॥ दोहा॥ जितनेजन्मभयेतव, देहतजेकरिभोग॥ तबतुमशि रकेमालकिय, प्रियातुम्हारेशोग ॥ ॥ चौपाई ॥ यहसुनगिरिजाबचनउचारी ॥ सुनहुबचनममना थपुरारी ॥तुमअवतारभयोउप्रभुयेका ॥ काबिकार ममजन्मअनेका ॥ मोरेमनप्रभुभयउअँदेशा ॥ सो समस्तमोहिँ कहौमहेशा ॥तबशंकरशुभगिरासुना ई ॥ हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई ॥ बीजमंत्ररघुना- यककेरा ॥ सोममहृदयमेंकरतबसेरा ॥ तातेमोरहो तनहिंनाशा ॥ बीजमंत्रदियअल्पप्रकाशा ॥ बीज मंत्रतुमजानतनाहीं ॥ तातेजन्मधरेबिपुलाहीं ॥

तबगिरिजाबोलीकरजोरी ॥ विश्वनाथसुनुबिनती
मोरी ॥ दासीजानिकृपाअबकीजे ॥ बीजमंत्रहमहूँ
कहँदीजे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शंकरबोलेबचनतब, सु
नहुउमाममबानि॥बिपुलजीवबसशैलपर, केहिबि
धिकहौंबखानि ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जोयहमं
त्रसुनैकोउपावा ॥ ताकेकालनिकटनहिंआवा ॥
अजरअमरसोहोइभवानी ॥ तातेक्यहिबिधिकहौंब
खानी॥ तबगिरिजाकहगिरासुनाई॥ देहुजीवप्रभु
सकलभगाई ॥ तबशंकरचितयेकरिक्रोधा ॥ भागे
जीवसकलचहुँरोधा ॥ आदिपिपीलजहाँतहँजाई ॥
सर्बजीवउड़िचलेपराई ॥ जीवरहितगिरिदेखिकृपा
ला ॥ बैठिबिछाइनागरिपुछाला ॥ जेहितरुतरबैठे
सुरनाहा ॥ तहँबसिदीनकीरयकराहा ॥ ॥ दोहा ॥
तेहिमैंअंडाएकधरि, करसोंगयोउड़ाय ॥ जोभावी
सोनामिटै, सुनोयुधिष्ठिरराय ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥
बीजमंत्रशिवउमहिंसुनावा ॥ अंडाजीवसुनाचित

लावा ॥ कहतसुनतअंडासुखभयऊ ॥ बारहवर्ष
बीतितबगयऊ ॥ जोजोमंत्रउमहिँशिवदीन्हा ॥
सोसबअंडसुनाऔलीन्हा ॥ वर्षद्वादशकगयेशिरा
ई ॥ माताकहँआईअलसाई ॥ सोवतजानिगिरी
शकुमारी ॥ तबतेकीरदीन्हहुंकारी ॥ यहिअंतरम
हँकथाशिरानी ॥ उमाजगाइकहाशिवबानी ॥ जहँ
लगिसुनाकहौसबलाई ॥ अंतरलखिशिवकहाबुझा
ई ॥ कथापुनीतमैंकहाबखानी ॥ हुँकारहिंकेहि
दीन्हभवानी ॥ उमाकहाप्रभुमैंगइसोई ॥ देखहु
नाथजीवकोइहोई ॥ तबशंकरचितयेधरिध्याना ॥
सुनाबीजखगकीरनिधाना ॥ करत्रिशूललेउठेरिसा
ई ॥ कीरदेखिउड़िचलेउपराई ॥ भागोखगव्याकु
लअतिशोका ॥ भरमतफिरेउसकलत्रैलोका ॥ ज
हँजहँखगशरणागतभाखा ॥ शिवद्रोहीकाहूनहिंरा
खा ॥ ॥ दोहा ॥ पाछेशिवधावतफिरे, कियेक्रो
धदुखमूल ॥ जोभावीसोनामिटै, छूटैनहींत्रिशूल

॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जबअतिकीरविकलमनभयऊ ॥ उड़तैउड़तव्यासघरगयऊ ॥ व्यासनारितेहिसमयभुआरा ॥ ऋतुमज्जनकरिसूर्यनिहारा ॥ ताहिसमयआईजमुहाई ॥ वदनपंथखगगयउसमाई ॥ पाछेशंभुपहूंचेजाई ॥ भयदेखाइत्रियमाथनवाई ॥ कहैंशंभुसुनुऋषिकीनारी ॥ चोरहमारोदेहुनिकारी ॥ मुनित्रियकहैनाथनहिंजानौं ॥ कहांचोरमैंकहाबखानौं ॥ तबहींबोलेशंभुसुजाना ॥ उदरतुम्हारेचोरसमाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देनिकारिरिपुमोरहै, करोबचनबिश्वास ॥ नाहींतोमुनित्रियअबहिँ, करौंतुम्हारोनाश॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ याहीमध्यव्यासऋषिआये॥देखिशंभुमुनिशीसनवाये॥ समाचारसुनिकह्योमुनीशा ॥ बचनहमारसुनौजगदीशा ॥ त्रियाजानिप्रभुबधनहिंकीजे ॥ बालकहोइसोआपहिलीजे ॥ मुनिकेवचनसुनतअतिहेतू ॥ भयेप्रसन्नतबैवृषकेतू॥तबमुनिसोंहँसिकहेउमहेशू॥

दीनपुत्रतोहिँ तजोअँदेशू ।।होईपुत्रमहाबिज्ञानो॥ तासुचरित्रतिहूँपुरजानी ॥ हाथजोरिमुनिबिनती कीन्हा॥होइप्रसन्नतबैशिवदीन्हा ॥ बरदेशंभुगयेक लासा॥ मुनिहिंपुत्रकीउपजीआशा॥ ॥दोहा॥ पूरेदिनबालकभयो,सुखतेसुनहुभुआल ॥शुकाचा र्यधरिनामतेहिँ ,राखोऋषीविचार॥११॥ चौपाई ॥ इहांशंभुआएकैलासा॥ बैठेंजाइलागिअतित्रासा॥ देखतशिवहिँक्रोधभयोभारी ॥ तबहिंउमासोंकहा बिचारी ॥ तुम्हरेसँगनहिँकार्यहमारा ॥ जाउज हांमनरुचैतुम्हारा॥जबगिरिजाशिवआयसुपाई ॥ उठिकैचलींचरणशिरनाई ॥ शिवंशिवभाषतउरअ भिलाषा॥ गईंतहांजहँपुत्रबिशाखा ॥ मातालखि ग्रहकीन्हप्रणामा ॥ कहुजननीआईकेहिकामा ॥ सबप्रभावजबउमासुनावा ॥ षण्मुखहृदयशोचतब आवा ॥ करिबिचारबोलेउसुनुमाता ॥ राखौंइहां क्रोधकरिताता॥पितावचनमोहिँ मेटिनजाई ॥ क

ठिनकर्मकीन्हेउतुममाई ॥ ॥दोहा॥ शिवप्रभावको समुझिकै, कहीषडाननबात ॥ मातुतपस्याकरहुतुम सिद्धिकरहिंगेतात ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुतकेबचनसुनतमनभाये ॥ उमाचलींकिष्किंधहिँ धाये ॥ तेहिगिरिपरयकगुहासुहाई ॥ तहाजाइशिवतपमनलाई ॥ यहिबिधिकालबीतिकछुगयऊ ॥ सुनौभूप आगेजसभयऊ ॥ एकसमयनिजदेहनिहारी ॥उबटनकीन्हगिरीशकुमारी ॥ तनुकामलजोछूटभुआरा सोउठायमनकीन्हबिचारा ॥ बालकरचिकीन्हेउहरिध्याना ॥ तनयसजीवकरौभगवाना ॥ हरिइच्छा सोंगयेनरेशा ॥ गणनायकतहँकीन्हप्रवेशा ॥ तनयशीसकरपरसेउजबहीं ॥ कीन्हसजीवरमापति तबहीं ॥ दोहा ॥ ॥ तनयसजीवनदेखिकै; मन आनँदतबकीन्ह॥अतिज्ञानीसुतहोहुतुम, माताआशिषदीन्ह ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुतसोंबोलीबचनभवानी ॥ सुनहुतातमानहुममबानी ॥ गु

फाद्वारधरिबैठहुजाई ॥ हमकरिहैंशिवतपमनलाई ॥ भीतरआवनपावनकोई ॥ जोहमकहैंसुनौसुत सोई ॥ बालकबैठद्वारपरआई ॥ उमाकरततपशिवमनलाई॥यहिबिधिबीतिगयेउकछुकाला ॥ आगे सुनहुकथानरपाला ॥ जबतेउमाशंभुकहँलागी ॥ जगीसमाधिअधिकअनुरागी ॥ ध्यानछूटशंभूतब जागे ॥ मनअनुमानकरनतबलागे ॥ कहाँगईधौं शैलकुमारी ॥ तनुकिजीवबिनभयेदुखारी ॥ दोहा॥ गिरिजाहेरनकारणै,शंभुगयेतजिधाम ॥ बनमहँगिरिखोजतफिरे, मननलहेउबिश्राम ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शरजन्मापहँगयेमहेशा ॥ लागीहर्षविषादअँदेशा ॥ दंडप्रणामपुत्रजबकीन्हा ॥ आशीर्बादतबैशिवदीन्हा ॥ तबशंकरबोलेमृदुबानी॥ दीखतातातुमकतहुँभवानी ॥ अहैतातमैंमृषानभाखौं ॥तुमबिनआयसुकिमिकरिराखौं ॥ गईबिपिन तपकरनगोसांई ॥ स्थलमाताकाजानोनांई ॥ सु

निशंकरसँगतेहिलगाई ॥ खोजतचलेबिपिनसमुदाई ॥यद्यपिशिवजानतसबबाता ॥ हरिइच्छारास्वतसुरत्राता ॥ खोजतकतहुँउमैनहिंपावा ॥ तबशिवहृदयक्रोधहोइआवा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥डमरूपटकाभूमिपर, तीनलोकअकुलान ॥ धेनुरूपहोइधरणितब, बिनयकीन्हबहुमान ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कवनभांतिमैंचूकिउँसेवा ॥ तेहितेक्रोधकीन्हतुमदेवा ॥ शंकरकहेउधरणिसमुझाई ॥ गिरिजाकहँतुमदेहुबताई॥तबधरणीबोलीमृदुबानी ॥ किष्किंधागिरिबसैंभवानी ॥ सुनिशंकरसँगतनयलगाई ॥ खोजतचलेबिपिनसमुदाई ॥ गुफाद्वारयकदेखिकुमारा ॥ पूंछाशिवतिहिंबचनउचारा ॥ गुफामध्यहैमातुहमारी ॥करततपस्याशिवअधिकारी॥यहसुनिपेलिचलेत्रिपुरारी॥बालकदेखिक्रोधभयोभारी॥ ॥दोहा॥ ॥गुफाद्वारधरिठाढ़भो,करगहिशक्तिहिंजोहि ॥ बिनामातुकीआयसु,जाननदेहौंतो

हिं ॥१६॥ चौपाई॥यहसुनिपेलिचलेप्रियपाहीं ॥
बालककोपकीन्हमनमाहीं ॥ क्रोधवंतसुतगिरिजा
भारी॥शिवपरतीक्षणशक्तिपँवारी ॥ आवतशक्तिदे
खिखरधारा॥तेजशक्तिसोंकाटिनिबारा ॥ लखिशं
करशरतेजअपारा ॥ बालकधनुषकाटिशिवडारा॥
मातासुनिमारेकिनबारा ॥ गुफासोंनिकसीशक्तिअ
पारा॥मारततनयनमानतहारी ॥क्रोधवंततबभेत्रिपु
रारी॥ जौलौंशिवशिशुहतैप्रचारी॥ तौलौंशिवयह
युक्तिविचारी ॥ देखायुद्धभयंकरनाना ॥ कोपेशिव
भयेअनलसमाना ॥ गहित्रिशूलतेहिहतैप्रचंडा ॥
उड़िगामाथपड़ाब्रह्मंडा ॥ यहिबिधिबालकमारिम
हेशा ॥ तनयसमेतगुफामेंपैसा ॥ जबहींउमाशंभुक
हँदेखा॥उठतभईतबप्रीतिबिशेषा॥ ॥दोहा॥आसन
दैपदकमलगहि,चरणोदकतबलीन्ह ॥शंभुबैठिआ
सनसुभग, बहुबिधिआशिषदीन्ह ॥१७॥ चौपाई
॥ उमाशंभुसनकहमृदुबानी ॥ सुनोताततुमस

बसुखखानी॥गुफाद्वारशिशुहमबैठाये॥ तासोंकेहि विधिआवनपाये ॥ सुनतबचनतबबोलेशंकर ॥ तिहिंतोकीन्हासमरभयंकर॥ विषमयुद्धतेंहिंहमसन कीन्हा ॥ताकोमारिइहाँपगुदीन्हा ॥ सुनिगिरिजा उठिबाहिरआई ॥सुतकोंदेखिपरीमुरझाई ॥ सुनो नाथयहतनयहमारा ॥जेहिबिधिजियैसोकरौबिचारा ॥ तबपूँछाशिवउमहिंभुवारा ॥ केहिप्रकारभात नयतुम्हारा ॥ ॥दोहा॥ ॥ शंभुबचनसुनिपारबति, जोरिपाणिशिरनाइ ॥ जेहिबिधिउपज्योबालशुभ, सकलकहीसमुझाइ॥१८॥ ॥चौपाई॥सुनिशंकरबोलेमृदुबानी ॥बिनामाथकिमिजियैभवानी ॥ क्रोधितलागत्रिशूलप्रचंडा ॥ उड़िगामाथपड़ाब्रह्मंडा॥बोलीउमासुनौममबानी ॥ कृपासिंधुउरअंतर्यामी ॥ आजुकभयोतनयजहँहोई ॥ मातापीठिदेहितहँसोई॥तेहिबालककामाथमँगावहु ॥ कृपाकरौममतनयजियावहु ॥ तबशिवदूतनलीन्ह

बुलाई॥सकलकथाकहितिन्हहिसुनाई ॥ आजुके भयेतनयलैआवहु ॥ जननीपीठिदयेजहँपावहु ॥ सोसुनिदूतदसौंदिशिधाए ॥ हेरिखोजिपुनिशिवप हँआये ॥ ॥ दोहा ॥ कहैंशंभुसनजोरिकर, स कलदूतशिरनाइ ॥ तेहिप्रकारकाबालक, हेरिरहे नहिंपाइ ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ पुनिबोलेगण गिरासुहाई ॥ सुनोनाथकरिणीयकजाई ॥ सोबा लकपीछेहैनाथा॥आज्ञाहोयतोआनौंमाथा ॥ आ यसुपाइदूतबहुधायो ॥करिसुतमाथकाटिलैआये॥ माथलायजोड़ेउसोइग्रीवा ॥भयोठाढ़प्रगटेउतबजी वा ॥ पुत्रदेखिमातासुखपायो॥ आशिषदेशिवहृद यलगायो॥तनयदेखिसुखकीन्हभवानी ॥ शंकरसों बोलीमृदुबानी ॥ करिणीकोसुतदेहुजिवाई ॥ ऐसे नाथवहौदुखपाई ॥ तबशिवकिरकिटमाथमँगावा॥ कृपाकीन्हहरतिन्हैजिवावा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कि रकिटकोआशिषदियो, जीवोतुमबिनसीश ॥ त

बगिरिजाअस्तुतिकियो, धन्यधन्यजगदीश ॥२०॥
॥ चौपाई ॥ उमाशंभुसँगलयदोउबालक ॥ च
लेजहाँजगतीप्रतिपालक ॥ पहुँचेहरिपुरसहितस
माजा ॥ तहाँविष्णुबैठेसबराजा ॥ तैंतिसकोटिदे
वतहँसोहा ॥ हरिकोरूपदेखिमनमोहा ॥ शंभुजा
यपदबंदनकीन्हा ॥उमासहितचरणोदकलीन्हा ॥
सुरनरमुनिउठिकैकरजोरी ॥ सबपरशिवकैप्रीतिघ
नेरी॥शिवसुतयुगलदेखिसुखधामा ॥ परदक्षिण
ककीन्हप्रणामा ॥ बालकदेखिदेवसुखपावा ॥ हरि
आशिषदैनिकटबुलावा॥हरिकेकरमोदकयकरहा ॥
दोउबालनसोंप्रभुहँसिकहा ॥ जोसुततीनिलोकफि
रिआवै ॥ आवैबेगिसोमोदकपावै ॥ शरजन्मातु
रतहिंशिरनावा ॥ चढ़िकैरथहिंतुरतसोधावा ॥ दू
सरसुततबयहबिधिकीन्हा ॥ उठिहरिकैपरदक्षिण
दीन्हा ॥ दोहा ॥ ॥ देखातबबुधिवंतगुण, देव
नजय२कीन्ह ॥ करमोदकअतिमोदसों, तेहिबाल

ककोदीन्ह ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ यहिअंतरषणमुख
चलिआये ॥ हरिकेचरणसीसतिननाये ॥ देखामो
दकबालकहाथा ॥ शरजन्माकोपेउनरनाथा ॥ मो
दकलीन्हबदनपरमारा ॥ एकदंतगाटूटिभुआरा ॥
तबहरिहँसिकह गिरासुनाई ॥ षण्मुखकहाकीन्हल
रिकाई ॥ वहबालकहैयेकसजाता ॥ दाँतटूटिगा
कायहबाता ॥ तबगुहकहायुगलकरजोरी ॥ नाथ
सुनोयकबिनतीमोरी ॥ सबसंसारदौरिमैंआयों ॥
बैठरहेउसोमोदकपायों॥हरिकहतुमसोंआगेआवा॥
तेहिकारणइनमोदकपावा ॥ यहसुनिगुहअतिशंका
कीन्हा ॥ तबहरिचरितलखावलीन्हा ॥ हँसिकैज
बहरिबदनपसारा ॥ तीनलोकतबदीखकुमारा॥ दे
खिषडाननलज्जितभयऊ ॥ तबहरिगुहैप्रबोधितकि
यऊ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुनिसबदेवनजोरिकर, प्रभु
हिँ कहासमुझाइ ॥ सोबालकबुधिवंतहै, कृपाकरौ
सुखदाइ ॥ २२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देवगिरासु

निप्रभुमनभाये ॥ तेहिबालककोनिकटबुलाये ॥ सावधानहोथसुनहुनरेशा ॥ नामधरेउहरिताहिगणेशा ॥ जानागणपतिदेवअनादी ॥ बिधिहरिहरदियआशिरबादी ॥ पूज्यनित्यतुमहोहुगणेशा ॥ जोपूजैतेहिमेटुकलेशा ॥ जोहमरेचरणनमनधरई ॥ सोप्रथमहिँ तवपूजाकरई ॥ यहसुनिदेवनजयरकीन्हा ॥ सुमनबर्षितबपूजाकीन्हा ॥ स्वामीकार्तिकअतिहिँ लजाई ॥ परेचरणगणपतिकेआई ॥ क्षमाकरोगणनाथगुसांई ॥ चूककरीसोमेटेउभाई ॥ गणपतिगुहैलाइउरलीन्हा ॥ शोचमिटाइआशिषादीन्हा ॥

॥ दोहा ॥ ॥ पूज्योगणकरजोरिकै, हरिचरणनशिरनाइ ॥ अस्तुतिकरतअनेकबिधि, सुनौयुधिष्ठिरराइ ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ॥ तुमत्रैलोक्यनाथप्रभुएका ॥ मायाबशप्रभुजीवअनेका ॥ जेहिकाजसतुमआयसुदीन्हा ॥ सोतेहिभांतिरहैलवलीन्हा ॥ जोप्रभुहमपरदयाकरेहू ॥ तौप्रसन्नहोयहवरदेहू ॥

प्रथमहिँनाथभक्तितवपाऊँ ॥ पुनिदूसरबरजोमैंगा
ऊँ ॥ जोकोईपूजामनलावै ॥ मनवांछितफलसोप्र
भुपावै ॥ बोलेप्रभुबिहँसेमृदुबानी ॥ सुनेहार्षिशिव
सहितभवानी ॥ सुनिप्रभुपदवंदनकरिसेवा ॥ निज
निजलोकगयेसबदेवा ॥ शंकरप्रभुपदउरमहँराखी ॥
बिदाभयेविनतीबहुभाषी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुहग
णपतिप्रभुचरणगहि, चलेआशिषापाइ ॥ गिरिजा
सहितमहेशतब, गमनकीन्हहर्षाइ ॥ २४ ॥ चौ
पाई ॥ पहुँचेविश्वनाथकैलासा ॥ सुतनसहितशि
वपरमहुलासा ॥ कहेउँकथामैंसकलनरेशा ॥ जेहि
बिधिसोशिवतनयगणेशा ॥ पूजेनितगणपतित्रैलो
का ॥ तिन्हैंपूजिजगहोयविशोका ॥ तेहितेपूजोग
णपतिराजा ॥ मिलहितोरसबराजसमाजा ॥ यहसु
निधर्मतनयशिरनावा ॥ धन्यकृष्णयहकथासुनावा ॥
अबजानेगणनाथपुरारी ॥ सुनतकथाछूटादुखभा
री ॥ औरौएकलालसामोरे ॥ कहौकृष्णविनवौंकर

जोरे ॥ प्रथमहिँ केहिंपूजागणनाथा ॥ सोसमझाइ कहौंयदुनाथा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ धर्मतनयकेबचनसुनि, कहाकृष्णबिहसाइ ॥ यहसबसादरभाषिहौं, सुनहुभूपमनलाइ ॥ २५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रथमबरतराजानलकियऊ ॥ ताकोसबसंशयमिटिगयऊ ॥ सुनतबचनकहधर्मकुमारा ॥ नलकहँकवनपरादुखभारा ॥ सुनिहँसिकृष्णबचनपरकासा ॥ सुनहुभूपसुंदरइतिहासा ॥ नवौखंडकोराजाभयऊ ॥ तेहिँ कछुकालराज्यसुखलियऊ ॥ एकसमयबिपत्तिपरिआई ॥ छूटाराजदेशसमुदाई ॥ नारिसमेतविपिनकहँगयऊ ॥ तहँपरतियाबिछोहिलभयऊ ॥ कतहुँभूपकतहूँगइरानी ॥ महाबिपिनकिमिकहौंबखानी ॥ दमयंतीबहुकरैबिलापा ॥ मूर्च्छितपरीमहासंतापा ॥ गतमूर्च्छाहेरैबनमाहीं ॥ महाबिकलतनुसुधिकछुनाहीं ॥ फिरतबिपिनयकआश्रमदेखा ॥ बैठेऋषितहँपूजिबिशेषा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दमयं

तीमनधीरधरि, गईऋषिनकेपाय ॥ करजोरेठाढ़ीभ
ई, आरतबचनसुनाय ॥२६॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सु
नहुनाथममबचनबिशेषा ॥ तुमकहुँराजानलकोदे
खा ॥ ऋषिनकहानाहिंदेखेउँमाई ॥ सुनतबचनरा
नीमुरझाई ॥ भइसचेतआगेचलिरानी ॥ नदीएकत
हँदेखिसयानी ॥ तहांअप्सरामज्जनकरहीं ॥ मंगल
गानसुनतदुखटरहीं ॥ दमयंतीताहाँचलिआई॥ पू
छातिनसोंप्रीतिलगाई ॥ केहिकैपूजाकरौसयानी ॥
कहउचरिततासोमृदुबानी ॥ गणनायककीपूजाक
रहीं ॥ तेहिपूजेसंकटदुखटरहीं ॥त्रियापुरुषब्रतकरै
जोकोई ॥ मनबांछितफलपावैसोई ॥ ॥ दोहा ॥
दमयंतीनिजदुखकहेउ, सकलभांतिसमुझाइ ॥ सु
नतअप्सराप्रीतिसों, बोलीबचनसुहाइ ॥ २७ ॥
चौपाई ॥ गणपतिकोब्रतकीजैरानी ॥ मिलिहैंभूप
सत्यममबानी ॥ दमयंतीगणपतिब्रतसाजा ॥ तिन
केसँगपूजागणराजा ॥ पूजिअप्सरासुरपुरगई ॥

रानीहृदयबिचारतभई ॥ बहुदुखबिपिनअकेलीरा
नी ॥ जाउँपितागृहअसजियआनी ॥ तबउठिच
लीपितागृहआई ॥ शोकसहितकछुदिवसगमाई ॥
श्रीगणनाथकृपातबकीन्हा ॥ आनिपासराजातब
दीन्हा ॥ रानीराजाभयेइकठाई ॥ व्रतप्रभावसब
बातजनाई ॥ सोईव्रतराजानलकियऊ ॥ ताकरस
बसंकटमिटिगयऊ ॥ वैसहिंराजभयोतबराजा ॥छू
टेताकेशोकसमाजा ॥ दोहा ॥ कथाबढ़नकेकारण
हिँ ,संक्षेपैसमुझाइ ॥ औरकथागणनाथकी, सुनौ
युधिष्ठिरराइ ॥ २८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मांधाता
कोशलपुरराजा ॥ धर्मनीतिसबसकलसमाजा ॥ ता
हिसमयनिशिचरअवतारा ॥ धुंधूसुततेहिनामभु
आरा ॥ तेहिंसबलोकजीतिजबलीन्हा॥ सुरनरना
गसबहिंदुखदीन्हा ॥ सर्वदेवमिलिकरहिँ विचारा॥
केहिबिधिजाइनिशाचरमारा ॥ सुरगुरुकहाबचन
सुनुमोरा ॥ मांधातासोंकहौनिहोरा ॥ तासोंकरिये

युद्धबिचारा ॥ यहिविधिजाइनिशाचरमारा ॥ सुरगुरुसहितदेवतहँआये ॥ मांधाताकोकथासुनाये॥ राजाकहाकहौगुरुमोहीं ॥ केहिबलसोंमारौंसुरद्रोही ॥ सुरगुरुकहाभूपसुनिलीजै ॥ गणपतिकीपूजाव्रतकीजै ॥ युक्तिदेवगुरुदीन्हबताई ॥ तेहिबिधिसोंपूजामनलाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृपाभईगणनाथकी, बलसमूहव्हैजात ॥ मांधातापरसन भये, धुंधूसुतहिंनिपात ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ यहइतिहाससकलजगजाना ॥ तातेमैंसंक्षेपबखाना ॥ गणपतिउहैकृपाकरिनाना ॥ धुंधुमार असनामबखाना ॥ औरकथासुनुधर्मकुमारा ॥ वृत्रासुरसोंसुरपतिहारा ॥ गुरुउपदेशसुरेशहिँदीन्हा ॥ तबगणपतिकीपूजाकीन्हा ॥ व्रतकेफलपायेउबलभारी ॥ मारेउवृत्रासुरहिँप्रचारी ॥ औरकथासुनुधर्मकुमारा ॥ जोसुनिकैटसकलदुखभारा ॥ महादेवकहँसंकटभयऊ ॥ त्रिपुरादैत्यमहादुखदय

ऊ ॥ गिरिजालेनत्रिपुरमनकीन्हा ॥ तबशिवगण
पतिपूजाकीन्हा ॥ मारादैत्यमहाबलहारी ॥ तब
तेनामपरोत्रिपुरारी ॥ पुनिव्रतकीन्हषडाननबीरा॥
सावधानहोसुनुमतिधीरा ॥ तारकअसुरभयउपर
चंडा ॥ जीताकोपिसकलब्रह्मंडा ॥ गुहगणपतिपू
जाअनुरागी ॥ हतेउतारकहिँबारनलागी ॥ ॥
दोहा ॥ औरकथाअबभाषिहौं, चितदैसुनहुनरे
श ॥ रुक्मिणिसुतकेकारणै, पूजादेवगणेश॥३०॥
चौपाई ॥ व्रतफलतेहिँप्रद्युम्नसुतभयऊ ॥ अति
आनँदशोभाफलल्यऊ ॥ पुनिव्रतकरिपूजागणरा
जा ॥ रत्नजडितआरतिसोसाजा ॥ चीररोपिपुनिक
हेउनरेशा ॥ पुत्रदानतबदीन्हगणेशा ॥ तियासहि
तप्रद्युम्नघरआये ॥ रुक्मिणितनयदेखिसुखपाये ॥
औरसुनहुधर्ममतिधीरा ॥ सोसुनिकटैसकलपुनि
पीरा ॥ माहिष्मतीनगरसुखधामा ॥ नीलध्वजरा
जाकरनामा ॥ तापुरबासीब्राह्मणएका ॥ ताकेयक

सुतसोअबिवेका ॥ धेनुबत्सपुरकेरचरावै ॥ ब्राह्म णिभिक्षामाँगिलेआवै ॥ यहिबिधिसोंकछुकालबि तावा ॥ पुनितीयागणपतिहिँ मनावा ॥ व्रतप्रभाव सोंसंपतिपावा ॥ कछुकज्ञानबालककहँआवा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नीलध्वजकीसभामहँ, बालकआवै जाइ ॥ ताहिदेखिकैभूपसुनु, प्रीतिकरहि अधिकाइ ॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जादिनसभानबालक जावै ॥ राजहिँ नींदनभोजनभावे ॥ बहुअधिकारी द्विजसुतजाना ॥ अतिअभिमानहृदयमहँआना ॥ एकदिवसब्राह्मणिव्रतकियऊ ॥ गणपतिकीपूजामन दियऊ ॥ तेहिअंतरताकरसुतआवा ॥मातासोंतबब चनसुनावा ॥ क्षुधालागिमोहिंमातबहूता ॥ जन निकहाधरुधीरजपूता ॥ गणपतिकीपूजाकरिलेहूं॥ तेहिपीछेतोहिंभोजनदेहूं ॥ तबवहबालकउठारिसा ई ॥ माताकेसन्मुखचलिआई ॥ ॥ दोहा ॥ गण पतिकीप्रतिमाहनी, लातनदीन्हगिराइ ॥ मूरति

पटकीक्रोधकरि, पुनिबोलासुरखाइ ॥ ३२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मूरतिपूजिपढ़कछुटोना ॥ पूजाछोंड़िबैठुयककोना ॥ यहकहिगयउसभानृपकेरी ॥ भलअनभलनाहिंनमनहेरी ॥ तबबोलीमाताअकुलानी ॥ पूजासाजिउठायलैआनी ॥ थापितकैपूजा मनलावा ॥ करजोरेगणपतीमनावा ॥ गणपतिकेद्विजसुतपदमारा ॥ ताकरफलअबसुनहुअपारा ॥ जबब्राह्मणिसुतगोनृपद्वारे ॥ सभासूनिलखिमहलसिधारे ॥ भीतरजाइसोकौतुकदेखा ॥ शयनकियेदंपतिकोलेखा ॥ देखतद्विजसुतअतिभयमाना ॥ भ्रमवशबिसरेपगकेत्राना ॥ ॥ दोहा ॥ अपनेपदकीपानहीं, छोड़ीभूपअवास ॥ राजाकीपगपनहिलै, आयेउनिजपितुपास ॥ ३३ ॥ ॥ चौपाई ॥ भोरभयेनीलध्वजजागे ॥ चरणत्राणलखिकहबेलागे ॥ काकीपदकीहैपदत्राना ॥ रानिकहाप्रभुमैंनहिंजाना ॥ सुनुतियद्विजसुतताकीआहीं ॥ नीलध्वजबोलेउमन

माहीं ॥ तुरतैबालकपकरिमँगावा ॥ पुनिचंडाळ
नभूपबोलावा ॥ कहतेहिद्विजसुतआनमँगाई ॥या
हिबिपिनमहँमारहुजाई ॥ बालकलैचंडालसिधा
ये ॥ समाचारपुनिमातापाये ॥ तबगणपतिकोकी
न्हेसिध्याना ॥ करजोरेबिनवैबिधिनाना ॥ कृपा
करौगणपतिलखिसेवा ॥ बिप्ररूपधरिप्रगटेदेवा ॥
गयेजहाँनीलध्वजराजा ॥ देखिबिप्रनिजअस्तुति
साजा ॥ करिप्रणामनृपसीसनवावा ॥ आशिषदेद्वि
जबचनसुनावा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ द्विजसुतकहँनपा
पकछु, कहिमृदुमीठीबात ॥ बिनुअपराधहिंसुनो
नृप, बालककरियनघात ॥ ३४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
सोसुनिराजातुरतबोलाये ॥ बिप्रजानिकैसीसनवा
ये॥ बिप्रतनयनिजमंदिरगयऊ ॥ देखिमातुतबकियो
बधाऊ ॥ धन्यदेवगणनाथगोसांई ॥ दीन्हाबालक
मोरछोंड़ाई ॥ नृपघरआवैजायसोबालक ॥ तैसी
प्रीतिकरैनरपालक ॥ सोबालकमतिमंदगोसांई ॥

गणपतिमहिमानाहिंबुझाई ॥ सोकारणसुनुधर्मकु
मारा ॥ जसबालककाभाव्यौहारा ॥ एकदिवसनृप
कोसुततहवाँ ॥ब्राह्मणिसुतचलिआवाजहवाँ ॥ मु
खमञ्जनकरिभूपकुमारा ॥जलभाजनलियब्राह्मणि
बारा ॥ भैअनकृपानाथगणकेरी ॥ ताकरफलअब
सुनोबहोरी ॥ मुखमञ्जनछूरीतबभयऊ ॥ जलको
पात्रमाथहोइगयऊ ॥ राजपुत्रतहँभयोअलेखा ॥य
हकौतुकपुरबासिनदेखा ॥ ॥दोहा ॥ ॥ द्विजसुतदे
खिचरित्रयह, मनमहँअतिभयमान ॥ ठाढ़बिसूर
हिमनहिमन, काहकीन्हभगवान॥३५॥ चौपाई ॥
सबैकहैंयहभयउअलेषा ॥ जायभूपसोंकहियबिशे
षा ॥ ब्राह्मणितनयकुँवरकहँमारा ॥ महाराजकाक
रियबिचारा ॥ सुनिकैभूपबिपुलदुखमाना॥ कहारि
सायतोरलेउँप्राना ॥ मारौयाहिबारजनिलावहु ॥
ताकरमुखजनिमोहिंदिखावहु ॥ सुनतबचनतबमा
रनधाये ॥ समाचारतबमातापाये ॥ व्याकुलहोय

सुमिरेउगणदेवा ॥ जोरीपाणिबिनयकरिसेवा ॥अ-
होनाथगणनाथगोसाँई ॥ बालकदानदेहुमोहिंधा
ई ॥ मोहिंसबभांतिभरोसतुम्हारा ॥ धावहुनाथन
लावहुबारा ॥ आरतिहरणकृपाअबकीजे ॥ संकट
काटिपुत्रमोहिंदीजे ॥ आरतगिरासुनीगणराई ॥ध
रिद्विजरूपप्रगटभयेआई ॥ ब्राह्मणिकहिगणपति
समुझावा ॥ तुमसुतकर्मकेरफलपावा ॥ हमकहँकी
न्हेसिचरणप्रहारा ॥ सोफलभुगतैअधमगँवारा ॥
॥ दोहा ॥ ॥ ब्राह्मणिजानेगणपत्ती, परीचरणकर
जोर ॥ अस्तुतिकरतअनेकबिधि, सुनहुबचनप्रभु
मोर ॥ ३६ ॥ ॥चौपाई ॥ ॥ यहबालकहैपर
मअज्ञाना ॥ तापरकृपाकरौभगवाना ॥ बोलेगण
पतिगिरासुहाई॥देहौंबालकतोरछुड़ाई ॥ यहकहि
गणपतिआयेतहँवाँ ॥ संकटमेंद्विजसुतहैजहँवाँ ॥
चंडालनसोंकहगणनाथा॥किमिकारणकाटौशिशु
माथा ॥ सबदूतनसमुझावाभेवा ॥ राजकुमारह

ताइनदेवा ॥ बोलेगणपतिबचनबिशेषा ॥ राजकु
मारमैंखेलतदेषा ॥ धायेतबराजापहँआये ॥ माथना
यकैकथासुनाये ॥ सुनिमनअचरजकीन्हभुआरा ॥
कहाबुलावहुराजकुमारा ॥ आयसुपायसोसेवकधा
ये ॥ नृपसुतबेगिभूपपहँआये ॥ देखितनयनृपअ
तिसुखपावा ॥ दूतनसोंसबबचनसुनावा ॥ तेहिज
निमारहुबेगिसिधावहु ॥ ब्राह्मणितनयइहाँलेआव
हु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनितबधायेबिपिनकहँ, जात
नलागीबार ॥ ब्राह्मणिकोसुतसंगलै, आयेजहांभु
आर ॥ ३७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देखिभूपअतिआदर
कीन्हा ॥ सँगबिठायचरणोदकलीन्हा ॥ यहिकाब
धनचहादुइआरा ॥ बचियहजायसोकवनविचारा ॥
यहिकीमातुयोगकछुजाना ॥ तासोंबालकबचोनि
दाना ॥ असबिचारिकैदूतपठाये ॥ ताकीमातातुर
तबुलाये ॥ आइब्राह्मणीदेइअसीसा ॥ प्रथमैंभूप
नवायेउसीसा ॥ ब्राह्मणितनयदेखिसुखपाये ॥ त

बहींराजाबचनसुनाये ॥ कछुचेटकतुमजानुसया
नी ॥ सोबिधिहमसोंकहहुबषानी ॥ कहेब्राह्मणीसु
नोहोराजा ॥ मैंजानोंगणपतिकीपूजा ॥ दोहा ॥
गणपतिकीपूजाकरौं, ध्यानधरौंमनलाय ॥ परसन
होतेभूपसुनु, सकलकष्टमिटिजाय ॥ ३८ ॥ ॥
॥ चौपाई ॥ ॥ सत्यसत्यराजाकरिमानी ॥ ब्रा
ह्मणिसोंबोलामृदुबानी ॥ केहिबिधिपूजौगणपति
राई ॥ तबब्राह्मणिकहिकैसमुझाई ॥ कनकबसन
भरिबिपुलमँगावा ॥ ब्राह्मणिकोदेपदशिरनावा ॥
तनयसमेतपरमसुखपाई ॥ आशिषदैब्राह्मणिघरआ
ई ॥ गणपतिकीपूजातबभयऊ ॥ सबसुखभयउस
बैदुखगयऊ ॥ व्रतप्रभावनीलध्वजराजा ॥ सुखप
त्नीसुखसंपतिभ्राजा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तातेसुनहुध
र्मसुत, व्रतकरुपूजुगणेश ॥ बिघ्नहरणहैनामतेहि,
मेटतसकलकलेश ॥ ३९ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुनि
कैकथाजोरिकैहाथा ॥ धर्मतनयतबनायउमाथा ॥

धन्यधन्यतुमधन्यमुरारी ॥ मोपरकृपाकीन्हअति भारी ॥ गणपतिकीसबकथासुनाई ॥ मोरेतनकेपापमिटाई ॥ असप्रभुकृपाकरोमनलाई ॥ताकीबिधिकहियेसमुझाई ॥ हरिबोलेसुनराजभुआरा ॥ व्रतबिधिकहौंसकलसुखकारा ॥ भादौंमासचौथिजबआवै ॥ तादिनव्रतआरंभकरावै ॥ व्रतआरंभिकरैअस्नाना ॥ बहुरिकरैपूजाभगवाना ॥ काहुदेवकीकरैननिंदा ॥ मनमहँसुमिरैबालगोविंदा ॥ रबिअस्ताचलकोजबजावै ॥ तबगणपतिपूजामनलावै ॥

॥ दोहा ॥ ॥ गोगोबरसोंलीपिकै, चौकाचारुपुराय ॥कलशधरैबेदीकरै, अक्षतदूबचढ़ाय ॥ ४० ॥

चौपाई ॥ ॥ पाटाधोयधरैसोइआगे ॥ पूजैगणपतिमनअनुरागे ॥ मूर्तिकनककुंकुमकीहोई ॥ कीपषानपुतरीकीसोई ॥ तेहिमूर्तिकीपूजाकरई ॥ मालचढ़ायपुहुपशिरधरई॥ धूपदीपआरतिकरिनाना ॥बिधिसोंआनिधरैपकवाना ॥ यहसबकरिअँचवनक

खावै ॥ तांबूलपुनिआनिचढ़ावै ॥ जोबिधिबा
रहमासकीहोई ॥ तिहिंबिधिसोंआवहिदेसोई ॥ पा
छेकथासुनैमनलावै ॥ जबलगिचंद्रउदयकरिआवै॥
चंद्रअरघदेकरैप्रणामा ॥ फेरिविसर्जनकरैसुधामा ॥
पुनिब्राह्मणाहिंदक्षिणादेई ॥ आशीर्बादताहिसनले
ई ॥ त्रियापुरुषव्रतधारैकोई ॥ मनबांछितफलपावै
सोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहिबिधिव्रतधारणकरै, पूजैदे
वगणेश ॥ जोबिधिबारहमासकी, सोअबसुनोनरे
श ॥ ४१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भाद्रचौथिपूजाम
नलावै ॥ सुमनतरूवरकेरमँगावै ॥ घृतकेसंगहोम
जोकरई ॥ तीनिजन्मभवसागरतरई ॥ मासकुँवार
चौथिजबआवै ॥ दूबहरीकेदलनमँगावै ॥ घृतसँग
होमकरैजोकोई ॥ सबबिधिसोंफलपावैसोई ॥ का
तिंकमासचौथिजबआवै ॥ उड़ददालिघृतहोमकरा
वै ॥ पूजापूरणताकीहोई ॥ सकलसिद्धिफलपावै
सोई ॥ अगहनमासचौथिजबआवै ॥ कटरसयाके

फूलमँगावै ॥ घृतसोंहोमकरैसुतपावै ॥ रिपुनाश
कदुखनिकटनआवै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पूसमासकी
चौथिका,बंशपत्रघृतहोम ॥ बश्यहोयराजाप्रजा,सि
द्धहोयँसबकाम॥४२॥ ॥ चौपाई॥ ॥ माघचौथि
अँधियारीआवै ॥ व्रतकरिसाँभरिनोनमँगावै ॥ घृ
तसँगहोमकरैनरकोई ॥ राजाबशताकेनितहोई ॥
फाल्गुनकृष्णचौथिकीराती ॥ अमिलतासकीआनै
पाती ॥ सैंधोघृतसोंहोमकरावै ॥ पटमोहिनीभूप
सोंपावै ॥ चैत्रमासचौथीजबआवै ॥ तबनिंबुवाके
बीजमँगावै ॥ घृतसँगहोमकरैजोकोई ॥ बाँझत्रिया
पुत्रवतीहोई ॥ मासवैशाखचौथिजबआवै ॥ राईके
बलिसुमनमँगावै ॥ घृतसँगहोमकरैनरकोई ॥ हो
यसिद्धिफलपावैसोई ॥ज्येष्ठचौथिअधियारीआवै॥
सुमनसेवतीकेरमँगावै॥ घृतसँगहोमकरैचितलाई ॥
ताकेबुद्धिहोइअधिकाई ॥ मासआषाढचौथिजब
आवै ॥ कमलफूलकरलेइमँगावै ॥ युक्तिसमेतहो

मजोकरई ॥ सोप्राणीपुनिदेहनधरई ॥ श्रावणमा
सचौथिनबआवै ॥ कुसुमसेहरुवाकेरमँगावै ॥ सा
वधानहोमघृतकरई ॥ दैत्यदेबताकेवशहोई ॥ ॥
॥ दोहा ॥ यहिबिधिबारहमासकी, कह्यउँभूपसमु
झाय ॥ बिधिसोंपूजेगणपती, सकलकष्टमिटिजाय
॥ ४३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनिकैकथाधर्मशिरन
वा ॥ धनिगोपालयहकथासुनावा ॥ जोबिधिकृष्ण
कहाव्रतनीती ॥ तेहिबिधिसोंनृपकीन्हप्रतीती ॥
गणपतिकीभइकृपाअपारा ॥ माराशत्रुलागिनहिं
बारा ॥ सुखसमेतराजतबकीन्हा ॥ गणपतिकीदा
यालखिलीन्हा ॥ गणपतिकेरिबातचितआई ॥
जोंमनसाकरिसोफलपाई ॥ ऋधिसिधिसंपतिसुख
नअपारा ॥ धरणिधामसुतसंपतिधारा ॥ नारीपुरु
षकरैव्रतकोई ॥ सकलसिद्धिफलपावैसोई ॥ जोय
हकथासुनैअरुगावै ॥ अंतकालसुरपुरपहुँचावै ॥
॥ दोहा ॥ ॥ श्रीगणपतिकीकथायह, संस्कृतम

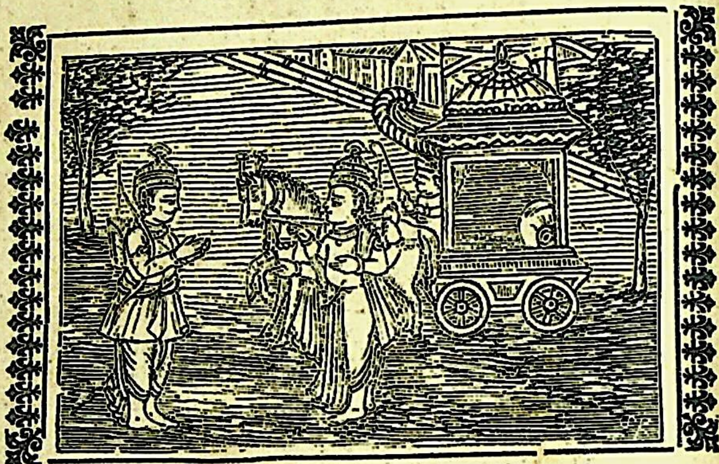
भ्यविशाल ॥ यथाबुद्धिभाषारचेउ, जड़मतिमोती लाल ॥ ४४ ॥ ॥ इतिश्रीगणेशपुराणंसंपूर्णम् ॥

॥ अथ गणपतिकी आरती लिख्यते ॥

सिंदुरलालचढ़ायोअच्छोगजमुखको ॥ तुंदिललालबिराजैसुतगौरीहरको ॥ हाथलियेगुड़लड्डूसाईंसुखरको॥महिमाकहीनजावैलागतहमपदको॥ १ ॥ जयजयजीगणराजविद्यासुखदाता ॥ धन्यतुम्हारा दर्शनमेरामनरमता ॥ धृ० ॥ अष्टौसिद्धिदासीसंकटकोबैरी ॥ बिघ्नबिनाशनमंगलमूरतिअधिकारी ॥ कोटिसूर्यप्रकाशकरैंऐसीछबितेरी ॥ गंडस्थलमदमस्तकझूलैंशशिबहारी ॥२॥ज०॥ भावभक्तिसेकोईशरणागतआवै॥ संततसंपतसबहीभरपूरनपावै ॥ ऐसेतुममहाराजहमाहिंकोअतिभावै ॥ गोसांईनंदननिशिदिनगुणगावै ॥ ३ ॥ जयजयजीगणराज विद्यासुखदाता॥धन्यतुम्हारादर्शनमेरामनरमता ॥

॥ इतिगणपतिकीआरतीसंपूर्णा ॥

॥ अथ सनेहलीलाप्रारंभः ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा—एकसमयब्रजबासकी, सुरतिकरीहरिराय॥ परिजनअपनोजानिकै, उद्धव लियोबुलाय ॥ १ ॥ कृष्णबचनऐसेकह्यो, उद्धवतुम सुनिलेहु ॥ नंदयशोदाआदिलै, जाब्रजकोसु खदेहु ॥ २ ॥ ब्रजबासीवल्लभसदा, मेरेजीवनप्रा न ॥ तातेनिमिषनबीसरैं, मोहिंनँदरायकीआन ॥ ३ ॥ हमउनसेऐसेकह्यो, आवैंगेरिपुजीत ॥

अबतोरेकैसेबनै, पितामातसोंप्रीत ॥ ४ ॥ उद्ध
वदेव्रजयोषिता, उनकेमेरोध्यान ॥ तिन्हेजायउ
पदेशद्यो, पूरणब्रह्मसुज्ञान ॥ ५ ॥ वाकोअपने
अंगको, क्रीटमुकुटपहिराय ॥ श्रुतिकुंडलमाला
दई, अपनोबेषबनाय ॥ ६ ॥ अरुअपनोरथसा
जिकै, सूतसारथीदीन्ह ॥ उद्धवचरणप्रणामकरि,
रथआरोहणकीन्ह ॥ ७ ॥ विद्यावंतबिबेकयुत,
शीलवंतगुणशुद्ध ॥ चतुरचिन्हजानतसबै, यों
प्रबीणश्रीउद्ध ॥ ८ ॥ परमसखाश्रीकृष्णको,
सुरगुरुशिष्यप्रवीण ॥ तातेलायकपाठयो, ब्रज
कोआयसुदीन्ह ॥ ९ ॥ रथहुजोरिउद्धवचले, अ
तिआनँदमनकाम ॥ दिनकरघरप्रापतिभये, गये
नंदकेगाम ॥ १० ॥ चहुँदिशिगोधनआवहीं, वृ
षभानुनकीगाय ॥ बच्छबचनलागतभले, मानों
थानसुराय ॥ ११ ॥ अपनीअपनीमंडली, मि
लेग्वालकेवृंद॥मुरलीमधुरबजावहीं ॥ गावहिंगु

णगोविंद ॥ १२ ॥ गोदोहनमोहनतिया, टेरत
लैलनाम ॥ गोरजउड़िअंबरलगी, छबिपावतनँ
दगाम ॥ १३ ॥ तबउद्धवरथहाकिकै, गयेनंदकी
पौर ॥ नंदयशोदादेखिकै, सन्मुखआयेदौर ॥
॥ १४ ॥ उद्धवरथतेउतरिकै, मिलेनंदकोधाय ॥न
यनसजलजलसोंभरे, आनँदउरनसमाय ॥ १५ ॥
करगहिगृहकोलेचले, सुतसनेहकेभाय ॥ अशन
बसनबहुविधिदिये, निजमंदिरपधराय ॥ १६ ॥
अरुचंदनबहुपुष्पजल, धूपदीपइत्यादि ॥ बिधि
पूर्वकपूजाकरी, सुखशय्याकुसुमादि ॥ १७ ॥
नंदयशोदाप्रीतिसों, पूँछनलागेबात ॥ शूरसेनके
पुत्रकी, कहोपरमकुशलात ॥ १८ ॥ जिनकेषड्बा
लकहते, बंदिपरेबेकाज ॥ केतिकदिनदूखितभए,
दुष्टकंसकेराज ॥ १९ ॥ भलीभईसेनासहित, कृ
ष्णकियोहतकंस ॥ तादिनतेसुखपावहीं, मातपि
तायदुबंश ॥ २० ॥ जाकेअष्टादशतिया, रामकृ

षणसुतदोय, सरवरतावसुदेवके, कहौकौनपैहोय ॥ २१ ॥ देवनकेमंगलभए, वासुदेवजनमंत ॥ घरवरप्रतिसबसुरनके, दुंदुभिबजेअनंत ॥ २२ ॥ पटरानीदेवकसुता, सुकृतपरमकृपाल ॥ ताकेगृहप्रगटतभए, कृष्णकंसकेकाल ॥ २३ ॥ उद्धवतातेकीजिए, उनकोसुमिरनध्यान ॥ अबकीधौंकबदेखिहौं, अनँदबधायेकान ॥ २४ ॥ सुफलकसुतआएइहाँ, रामकृष्णलैजान ॥ तबतेतनुगतिदोभई, इहाँदेहउहँप्रान ॥ २५ ॥ नयनयशोदाजलभरे, कंठश्वासनहिंलेत ॥ कहिकहिबातेंपुत्रकी, हीयोभरिभरिदेत ॥ २६ ॥ निमिषनिमिषमहँझगरते, वेमोसोंदोउभ्रात ॥ अबकीधौंकबदेखिहौं, चोरिचोरिदधिखात ॥ २७ ॥ मोतिनकीमालागरे, राजहंसगतिदोर ॥ यहिआँगनकबदेखिहौं, रामकृष्णकीजोर ॥ २८ ॥ पीतांबरकीओढ़नी, अरुभाजनमृदुबेनु ॥ अबकीधौंकबदेखिहौं, बनबनचारतधेनु

॥ २९ ॥ वेतोभूँखेहोयहैं, प्रातकालकीबान ॥ उ
हाँकहौकोराखिहै, घृतसौंरोटीसान ॥ ३० ॥
बातकहौंयकदिवसकी, तुमसोंसबविधिसुनाय ॥
हियमेंकरतबनाचलै, चितैचितैवहजाय ॥ ३१ ॥
उद्धवपयऊफनचल्यो, हूंदौरीतजिअंग ॥ पीछेतेमे
रोलला, दधिकोभाजनभंग ॥ ३२ ॥ मोहिदेखे
हीरिसभई, थोरेदधिकेकाम ॥ ऊखलसोंआनंदघ
न, मैंबाँधेगहिदाम ॥३३ ॥ तादिनतेखटकतसदा,
मेरोयहअविवेक ॥ ऐसीकाहौसंभवौं, सुतसौऔ
गुनएक ॥ ३४ ॥ तबउद्धवऐसीकहैं, सुतकेसुनौ
सँदेश ॥ इनकोनाहिनबीसरो, याब्रजकोआवेश
॥ ३५ ॥ तुमहिँ पायलागनकह्यो, जलसोंनयन
भराय ॥ मैयामोहिंनबीसरौ, बड़ोकियोपयप्याय
॥ ३३ ॥ जादिनतेआएइहाँ, छाँड्योगोकुलगांव
॥ तादिनतेकोउनाकहै, कान्हकान्हबलिजांव ॥
॥ ३७ ॥ जबहमतुमतेबीछुरे, आयेमथुरामाँझ ॥

मैंकबहूंनाहींपियो, घियाप्रातअरुसाँझ ॥ ३८ ॥
अरुतुमबाबानंदसों, ऐसोकहियोजाय ॥ वेतुमनी
कीराखियें, धौरीधुमरीगाय ॥ ३९ ॥ मनवचक
र्मसुहेतधरि, करिहौंपूरणकाम ॥ आवैंगेदिनपाँच
मैं, हमभैयाबलराम ॥ ४० ॥ राजपाटसिंहासना,
खानपानसुखदेत ॥ याव्रजसुखपावतभले, बनमें
बटसंकेत ॥ ४१ ॥ बातकहतबीतीनिशा, तमच
रकीन्हागान ॥ मानौगर्जनमेघकी, घरघरदधिमं
थान ॥ ४२ ॥ उद्धवउठियमुनागए, कीन्होयमु
नान्हान, सेवासुमिरनसबकियो, जोअपनोउनमा
न ॥ ४३ ॥ करिकृतआएघोषमें, उद्धवमनआनं
द ॥ याव्रजसुखपावतभले,पूरणपरमानंद ॥ ४४ ॥
अपनेअपनेधामते, बाहरनिकरींग्वारि ॥ रथदेख्यो
श्रीकृष्णको, नंदमहरकेद्वारि ॥४५॥ युवतियूथएकै
भई, कीन्होएहिविचार ॥ यहनाहींसुतनंदको, है
कोऊपतिहार ॥ ४६ ॥ उद्धवपैगोपीगई, कीन्हो

बंदनपान ॥ शीसनाइआदरकियो, सखाकृष्णको जान ॥ ४७ ॥ उद्धवब्रजआएभले, कहौकृष्णकुशलात ॥ उहांजाइकीन्हीभली, कहुकछुउत्तमबात ॥ ४८ ॥ तुमसाँचेउत्तमसखा, मनबचकर्मसहेत ॥ प्राणनकोहरिलैगए, पिंडदानतुमदेत ॥४९॥ उद्धवहमतोबावरीं, करैंकवनसोंप्रीति ॥ उहाँजाइ छोंड़ीसबै, नंदगाँवकीरीति ॥ ५० ॥ याब्रजकबहुँकआइहैं, मैयाकेहितकाज ॥ ब्रजयुवतिनकेनाभए, भयेउहाँकेराज ॥ ५१ ॥ हमश्रवणनछाँड़ीसुनी, मोरपीछबनधात ॥ सुरभीसाँचीचित्रकी, ताहिदेखसकुचात ॥ ५२ ॥ तबउद्धवऐसीकही, सुनोसकलब्रजनारि ॥ बातकहौंपरब्रह्मकी, आतमतत्वबिचारि ॥ ५३ ॥ वेतुमपरकरिहैंकृपा, प्रभुताजानीपर्म ॥ तजियेनातोगामको, भजिए पूरणब्रह्म ॥ ५४ ॥ छायामायारहितहैं, नहींहोतउनमान ॥ हरितुमसोंऐसोकह्यो, भजियेश्रीभगवा

न ॥ ५५ ॥ जापदकोयोगेश्वरा, लगेरहतअनुराग ॥ साधनसोइकीजेसदा, नामधरेबैराग ॥ ५६ ॥ नैनमूँदिमुखमौनगहि, त्रिगुणरहितनिजधाम ॥ तुमसबहीमैंदेखिहौं, आपहिआतमराम ॥ ५७॥ मधुकरअंतरकठिनहै, कठिनबातकहिजात ॥ भूख मरैदिनसातलौं, सिंहघासनहिंखात ॥ ५८ ॥ यद्यपियोगप्रसिद्धहै, तोतुमहींलैजाउ ॥ बहुर्‌योनाहिनपाइहौ, ऐसोउत्तमदाउ ॥ ५९ ॥ उद्धवतातेदेखिहौ, तत्वरूपतनमाहिँ ॥ सोहमसोंसिखवतकहा, तुमहींसाधतनाहिँ ॥ ६० ॥ यहतोउनकोचाहिये, जिनकेअंतरराय ॥ दादुरतोजलबिनजियै, मीनतुरतमरजाय ॥ ६१ ॥ हैंदोऊयकठौरके, दादुरमीनसमान ॥ येजलबिनमारुतभखैं, वेबिछुरततजप्रान ॥ ६२ ॥ उद्धवइतनोअंतरो, व्रजमथुराकेलोग ॥ बिमुखकरैंवारूपको, जारिदेहसोंयोग ॥ ॥ ६३ ॥ पठयेआयेकवनके, कवनमित्रकोजानि ॥

इहाँतुम्हारीकवनसों, कहौकवनपहिँचानि ॥ ६४ ॥ बचनबचनबाढ़ीबिथा, नाहिंजानतपरहेत ॥ मधुकर दग्धेअंगपर, कहालोनघसिदेत ॥ ६५ ॥ तनका रेमनसाँवरे, कपटीपरमपुनीत ॥ मधुकरलोभीबास के, निमिषएककेमीत ॥ ६६ ॥ तुमतोस्वारथकेस गे, नहींबेलसेभाव ॥ भावैयहगहबरबढ़ौ, भावैज रिबरिजाव ॥ ६७ ॥ तुमतौचरणाजिनछुवौ, ऐ सीगतिकेवीर ॥ मधुकररसअतिलालची, नहिंजा नतपरपीर ॥ ६८ ॥ रहतनिकटतिनश्यामके, ता तेनिपटनपीर ॥ बिछुरोगेहरिसंगते, तबजानोगेबीर ॥ ६९ ॥ उद्धवहरिबिछुरनबिथा, तुमपैबीतीनाहिँ ॥ बिछुरोगेजबश्यामते, तबजानोमनमाहिँ ॥ ७० ॥ हमतुमतेकैसेकहैं, मधुकरसुनौसँदेश ॥ नाहरिजा तिनपांतिके, कहाकरौंउपदेश ॥ ७१ ॥ कितबि धनाशिरजीहमैं, कितदियोब्रजकोबास ॥ कित मिलापश्रीकृष्णसों, कितबिछुरनकीआस ॥ ७२ ॥

नयनहमारेमधुकरा, आननकृष्णसरोज ॥ ब्रज छाँड़ेतादिवसते, बैरीभयोमनोज ॥ ७३ ॥ मनमोहनवेनामहैं, मोहननयनविशाल ॥ मोहनपढ़िकछुमोहिनी, लैमोहीब्रजबाल ॥ ७४ ॥ सबअँग मोहनरूपहैं, मोहनवेणुरसाल ॥ मोहनमूरतिमाधुरी, मोहनबचनमराल ॥ ७५ ॥ बचनबचनमोहीतिया, हमतुमकेतिकबात ॥ सुरनसहितसुरयोषिता, थकितधामनहिँ जात ॥ ७६ ॥ एकसमय निशिशरदकी, मोहनबेणुबजाइ ॥ बैनसैनदैसाँवरे, लीन्हीसबैबुलाइ ॥ ७७ ॥ अरसपरसहमसों मिले, कुंजनकियोबिहार ॥ सोसुखनाहींबीसरै, सुमिरतबारंबार ॥ ७८ ॥ एकसमयजलकेबिषे, करतकेलिअस्नान ॥ चीरचोरतरुपैचढ़े, वेयशुदाके कान्ह ॥ ७९ ॥ बहुऱ्योनाहिंनबीसरो, भुजबलकीअनुहार ॥ राखिलियेब्रजकुलसबै, नखपर गिरिवरधार ॥ ८० ॥ एकसमयबनकेविषे, कुंजकुं

जबनधाम ॥ हरिहमसोंक्रीड़ाकरी, पलपलपूरण काम ॥ ८१ ॥ एकदिवसयकगोपिका, गईगेह केद्वार॥दधिचोरतरोंकेहरी, चालेचापटमार॥८२॥ एकदिवसहरिमोमिले, गएसाँकरीखोर ॥ मटुकी पटकीभूमिपर, हँसेहारकोतोर ॥ ८३ ॥ ऐसीदिन दिनकीकथा, बर्णतनाहींओर ॥ हमरीवेजानतस बै, मोहनचितकेचोर ॥ ८४ ॥ लीलागोकुलगाँ उकी, हमजानतमनमाहिँ ॥ उद्धवतुमश्रवणनसु नी, नयननदेखीनाहिँ ॥ ८५ ॥ जोतुमलाएयो गको, यदुपतिकेपरधान ॥ हरिरसकीसींचीसबै, न हिंभावतरसआन॥ ८६ ॥ पतिव्रताकहुँरंककी, सा खिभरतसबगाउँ ॥ यदपिभजेकोउभूपको, तौव्य भिचारिणिनाउँ ॥ ८७ ॥ सीपरहतसागरविषे, मन मिलापनहिंलेत ॥ मधुकरयहउत्तममतो, स्वातिबुं दसोंहेत ॥ ८८ ॥ मानसरोबरतेउड़े, आनभूमि चढ़िजाहिं ॥ बिधिबाहनक्षुधारथी, तोउच्छिष्टन

खाहिं ॥ ८९ ॥ जलनाहिंनथोरोकछू, सागरनदी निपान ॥ स्वातिबुंदचातकपिये, औसबझूंठसमा न ॥ ९० ॥ एदोउनयनबिराटके, निगमकहतहैं नीत ॥ उड़िचकोरअंतरकियो, दिनकरअरिशशि मीत ॥ ९१ ॥ बेलिहोतवर्षासमय, करतवृक्षसोंप्री ति ॥ प्राणगयेछोड़ैनहीं, अपनीउत्तमरीति ॥ ९२ ॥ हमतोनरदेहीधरी, इतनीजानतनाहिं ॥ रसतजि भजियेयोगको, भंगहोतव्रतमाहिं ॥ ९३ ॥ करते आएसोकरत, ऊंचनीचसोंसंग ॥ हमकबहूँनाहि नकिये, इष्टभावव्रतभंग ॥ ९४ ॥ यद्यपिकुब्जाच तुरहै, तोहुकंसकीदासि ॥ भवनगवनकीनोहरी, तुमसेसेवकपासि ॥ ९५ ॥ अपलक्षणतेनाडरो, बडे भूपकेपूत ॥ कीवैसाँचेरावरे, कीतुमसाचेदूत ॥ ९६ ॥ यहीकठिनलागतहमैं, सुनोश्यामकोहेत ॥ इहाँ जायकुब्जारची, हमैंयोगशिषदेत ॥ ९७ ॥ जोकछु लिखाललाटमैं, बिछुरनमिलनसंयोग ॥ दोषक

चनकोदीजिये, जानतहैसबलोग ॥ ९८ ॥ देहध
रीजाकारनै, लगिहैताकेकाम ॥ मनघटयहरससोंभ
रो, नहींयोगकोठाम ॥ ९९ ॥ मोरमुकुटकटिका
छनी, कुंडलतिलकसुभाल ॥ पीतांबरक्षुद्रघंटिका,
उरबैजंतीमाल ॥ १०० ॥ करलकुटीमुरलीगहे, घूँ
घरवारेकेश ॥ वेहमरेनैननबसें, श्याममनोहरवेश
॥ १०१ ॥ तबउद्धवऐसीकही, धन्यधन्यव्रजना
रि ॥ प्रेमभक्तिरसबशकिये, श्यामभुजाउरधारि
॥ १०२ ॥ यहलीलातुमकारने, गोपबेषअबतार॥
निर्गुणतेसर्गुणभये, तुमतेकरनबिहार ॥ १०३ ॥
निगमजाहिखोजतरहे, अगमनपावतअंत ॥ सो
तुम्हारजूंठनगहे, श्रीपतिश्रीभगवंत ॥ १०४ ॥ यो
गेश्वरपावेंनहीं, सिद्धसमाधिलगाय ॥ सोतुमरेर
सबशभए, बनबनचारतगाय ॥ १०५ ॥ कहतसु
नतऐसीकथा, उहाँरहेषटमास ॥ तबउद्धवआज्ञाल
ई, हरिचरणनकीआस ॥ १०६ ॥ नंदमिलेयशु

दामिलीं, मिलेगोपिअरुग्वाल ॥ बंदनकरिकरि सबहिंसों, उद्धवचलेकृपाल ॥ १०७ ॥ नंदकही यशुदाकही, गोपिनकहीबहोरि ॥ वेरजधानीरमिरहे, ब्रजकोनातोतोरि ॥ १०८ ॥ अबकबहूँकरिहैंकृपा, सेवकअपनेजानि ॥ हरिहमकोनाहिंबीसरो, पूरब लहिपहिंचानि ॥ १०९ ॥ तबउद्धवआएइहाँ, कृष्णचंद्रकेधाम ॥ पांयलागबंदनकियो, बोलतलै लैनाम ॥ ११० ॥ ग्वालबालसबगोपिका, ब्रजके जीवअनन्य ॥ तुमहिपाँयलागनकहे, सुनहुदेवब्र म्हन्य ॥ ११ ॥ नंदयशोदाहेतकी, कहियेकथाब नाय ॥ केवैजानततुमभले, मोपैकहीनजाय ॥ १२ ॥ बैचिततेटारतनहीं, रामकृष्णकीजोर ॥ मधुनाय कसुरलीगहे, मूरतिमधुरकिशोर ॥ १३ ॥ अरुगो पिनकेप्रेमकी, महिमाकहूँअनंत ॥ मैंपूँछीषटमास लौं, तौहुँनपायोंअंत ॥ १४ ॥ देहगेहसबछोंड़िकै, ध रतरूपकोध्यान ॥ उनकोभजनबिचारिए, अरुसब

फीकोज्ञान ॥ १५ ॥ संतभक्तभूतलजिते, तेसबब्र
जकीनारि, चरणशरणलागेरहैं, मिथ्यायोगबिचा
रि ॥ १६ ॥ उनकोगुणनितगाइए, करिकरिउत्तम
प्रीति ॥ मैंनाहींदेखीसुनी, ब्रजबासिनकीरिति ॥
॥ १७ ॥ तबहरिउद्धवतेकही, हूंजानतसबअंग ॥
मैं कबहूँछाँडौंनहीं, ब्रजबासिनकोसंग ॥ १८ ॥ ब्र
जतजिअंतनजाइहौं, मेरेतोयहटेक ॥ भूतलभारउ
तारिहौं, धरिहौंरूपअनेक ॥ १९ ॥ उद्धवतुमजानौ
नहीं, प्रेमभक्तिकीरीति ॥ गोपिनकेसम्बंधते, उप
जैप्रेमप्रतीति ॥ १२० ॥ कृष्णभक्तसोजानिये,
जाकेअंतरप्रेम ॥ राखेअपनेइष्टको, गोपिनको
सोनेम ॥ २१ ॥ यहलीलाब्रजबासकी, गो
पीकृष्णसनेह ॥ जनमोहनजोगावहीं, तेनरउत्त
मदेह ॥ २२ ॥ जोगावहिंसीखैंसुनैं, मनबचक
र्मसहेत ॥ रसिकरामपूरणकृपा, मनबाँछितफलदेत
॥ २३ ॥ गोपीअरुउद्धवकथा, भूपरपरमपुनीत ॥

तीनिलोकचौदहभुवन, बंदनीयशुभगीत ॥
॥ २४ ॥ नाशतसकलकलेशअब, सुखउपजतम
नमोद ॥युगलचरणमकरंदमन, पावतपरमबिनोद
॥ २५ ॥ श्रीमुकुंदमनमधुपजहँ, सकलसंतअनुरा
ग॥ यशुदाप्रेमप्रवाहमें, पड़ेरहतबड़भाग॥ १२६ ॥
॥ इतिश्रीसनेहलीलासंपूर्णा ॥

॥ अथदानलीलाप्रारंभः ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चलोसखीतहँ

जाइये, जहाँबसतब्रजराज ॥ गोरसबेंचतहरिमिलें, एकपंथदोकाज ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुपूरणब्रह्मअखंडा ॥ जाकेरोमकोटिब्रह्मंडा ॥ प्रभुसरगुणब्रह्मकहाए ॥ मथुरातेबृंदाबनआए ॥ तहँदेवलोकमुनिजेते॥सबगोपग्वालिनीतेते ॥ देवकिसुतनामधराए ॥ बसुदेवहिंरूपदिखाए ॥ जबगोकुलइच्छाकीन्ही॥बसुदेवहिंआज्ञादीन्ही ॥ जिननंदभुवनपहुँचाए ॥ तहँनंदकेलालकहाए ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जन्मलियोबसुदेवकेगृह ॥ नंदकेबालकभये ॥ छपनकोटियदुबंशमाया ॥ यूथगोपीग्वालके ॥ कृष्णकेसँगबहुतबालक ॥ गोचरावनबनगए ॥ हर्षिगावहिंदानलीला ॥ सुनौसज्जनकानदे ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ सबघरघरकीब्रजनारी ॥ दधिगोरसमधुबेंचनहारी॥मिलियूथमतोसबकीन्हो ॥ यमुनातटमारगलीन्हो ॥ जहँमोहनधेनुचरावैं ॥ मधुरेस्वरबेणुबजावैं ॥ जहँबाटसबनकीसोई ॥ मुरली

सुनिआनँदहोई ॥ सबैघाटऊपरचलिआई ॥ पहिं
चानिलियेयदुराई ॥ यकबालककहतपुकारी ॥ तो
हिसूँझतनाहिंगँवारी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ तोहिसूँझ
तनाहिंगँवारिगूजरि ॥ कृष्णठाकुरघाटके ॥ आइ
काहेनकरोबिनती ॥ अजहूँहैवर्षसातके ॥ हृदयस
मुझिबिचारिग्वालिनि ॥ कृष्णछाँड़िकहाँचली ॥
दानदेहुनिबारिअपनो ॥ हरिभलेतुमहूँभली ॥
॥ चौपाई ॥ मिलियूथगोपिकाआई ॥ पहिँचानि
लियेयदुराई ॥ सुनिबातसबैमुसकानी ॥ हमआ
जसुनेहरिदानी ॥ हमकौनकहाँतेआई ॥ हमकोह
रिचीन्हतनाई ॥ तुमगोकुलकीब्रजनारी ॥ तुमहो
वृषभानुदुलारी ॥ तुम्हरेशिरगोरसभारी ॥ हमहैय
मुनाघटवारी ॥ कछुदानहमारोलागै ॥ हँसिकैमन
मोहनमागै ॥ ॥ छंद ॥ ॥ तीनलोकमैंकवनजाने॥
घाटयमुनातीरको ॥ जातआवतकुंजबनमैं ॥ र
हतलालअहीरको ॥ दानदेवृषभानुलाड़िली ॥ सु

यशहमसोंलीजिए ॥ नंदकोसुतजानिहमसों ॥ ग
बैबहुतनकीजिए ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तबग्वालस
खामिलिघेरे ॥ अरिकामदुकीमहँतेरे ॥ कोइहाथ
डारिदधिकाढ़ै ॥ तबदूँदचहूँदिशिबाढ़ै ॥ यकग्वा
लिनीउठीरिसाई ॥ प्रभुकातुम्हरीतिचलाई ॥ कछु
माँगदहीभरिलीजे ॥ नइदानकीरीतिनकीजे ॥ ज
बकंसराजसुनिपैहै ॥ तुमकोकोउदेशपठैहै ॥ छंद ॥
कंसराइकेराजमेंप्रभु ॥ नईरीतिनकीजिए ॥ नंद
केगृहदूंदउपजे ॥ दुखपरेतनछीजिए ॥ सदाआव
तजातमथुरा ॥ दानहमसोंकिनलिए ॥ दहीमांगत
छाँछदुर्लभ ॥ नीरयमुनापीजिए ॥ चौपाई ॥ जब
ग्वालिनिकहिऐसीबाता ॥ हँसिबोलेत्रिभुवनना
था ॥ तुमतीनलोकमेंदेखौ ॥ हमकोजनिमानुषलेखौ ॥
हमहींसबदैत्यसँहारा ॥ यककाकरेकंसबिचारा ॥
तुमकंसकोकरहुगुमाना ॥ तेहिकालिकरौंपिसमाना
॥ अबउग्रसेनभएराजा ॥ हमहींअबताहिनिवाजा ॥

हमसोंहठबादनकीजे ॥ हँसिदानहमारोदीजे ॥ ॥ छंद ॥ जाकोवेदपुराणगावे ॥ मनमानेसोईकरै ॥ परअधीनबलहीनजोनर ॥ कंसकेडरसोडरै ॥ दहीगोरसकौनबूझै ॥ देखअभरणआपनो ॥ जड़ितहीरालालकंचन ॥ माँगमोतिनसोंबनो ॥चौपाई॥ ॥ कितमोतिनमाँगबिराजे ॥ कितपाँयननूपुरछाजै ॥ कितकंठरत्नकीमाला ॥ हीरामाणिकगुथेलाला ॥ बाजूबंदकँगनभलसोहै ॥ नकबेसरसोंजगमोहै॥सिरबेनीगुँथीबहुभाँती ॥ तहँलागीरत्ननकीपाँती ॥ मणिमाणिककंगनडोलैं ॥ कटिमधुरकिंकिणीबोलैं ॥ कितपाटपितंबरपहिने ॥ कितषोडशभूषणकीन्हे ॥ ॥ छंद ॥ ॥ हृदयदेखिबिचारिग्वालिनिकुंजबनकीबाटहे ॥ लूटिलेइकोसबैभूषणकोतुम्हारेसाथहे ॥इहांसबकोदानलागैहठनकीजैसुंदरी ॥कंसतेहमडरतनाहींसुनतबातैंसबडरीं ॥ ॥ चौपाई ॥ यककंगनलैजबदीन्हा ॥ हरिसों

बिनतीबहुकीन्हा ॥ प्रभुथोरबहुतकछुलीजै ॥ अबपारसबनकहँकीजै ॥ यकग्वालकरीचतुराई ॥ तिनऔघटनावछिपाई ॥ जबआइकृष्णसोंभाषा ॥ प्रभुनावकहांकोइराषा ॥ अकुलाइउठीसँगसाती ॥ प्रभुसाँझपरीयहिभाँती ॥ तबकृष्णसबैसमुझावै ॥ अबनावकहाँकोउपावै ॥ ॥ छंद ॥ ॥ औघटघाटगँभीरयमुनाराातकोनहिंपथचलै ॥ बाघासिंहबटपारबनमैंकवनतुमकोभलिकहै ॥ झूंठमायामोहपरिजनस्वप्नहैदिनचारिकै ॥ कोउकोहूकेसंगनाहींअंतदेखुबिचारिकै ॥ चौपाई ॥ ॥ जबग्वालिनिकेमनमाना ॥ धृगजीवनकैजगजाना ॥ धृगजीवनधनपरिवारा ॥ तुमहींप्रभुनाथहमारा ॥ अबचरणशरणप्रभुदीजै ॥ तनमनअपनोकरिलीजै ॥ अबचरणशरणसबलागी ॥ हमहैंप्रभुपरमसभागी ॥ पथिरातिपरीअँधियारी ॥ जनिछाँड़ियकृष्णमुरारी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जन्महमरोसुफलकरिये

लाजतजिचरणनपरीं ॥ कुलकीलाजगमायग्वालि
निजन्मजन्मसेवाकरीं ॥ रहसिमोहनसंगहिलमि
लमणिमाणिकदीपकबरैं ॥ कृष्णराधेयूथग्वालिनि
कुंजबनक्रीड़ाकरैं ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यकरहसमँड
लप्रभुठाना ॥सबगोपिनकेमनमाना ॥ कोईगंधधूप
लैआवे ॥ नैवेद्यकीयुक्तिबनावे ॥ तहँराधापानख
वावै ॥ कोइमाथेचँवरडुलावै ॥ कोइतालमृदंगब
जावै ॥ कोइआरतिमंगलगावै ॥ नृत्यगीतनादमृदु
बानी ॥ प्रभुमंडलकरतबखानी ॥ जहँबाजततालं
मृदंगा ॥ मधुरीधुनिवेणुउपंगा ॥ करतालबजेक्री
थोरी ॥ रहसमंडलकीघनघोरी ॥ तहँमाँझकिशोर
किशोरी ॥ दोउकृष्णराधिकाजोरी ॥ छंद ॥ श्रीकृ
ष्णघंटबजायआरतियूथमिलिसेवाकरैं ॥ गिरिजानं
दप्रसादपावैजन्मजन्मकेदुखहरैं ॥ जेनरगावहिंदान
लीलासुनहिंजेचितलावहीं ॥ तेतोपावहिंप्रेमभक्ति
औबिष्णुलोकसिधावहीं ॥ इतिदानलीलासंपूर्ण ॥

॥ अथ मित्रप्रशंसा ॥

दोहा ॥ देहगेहसुधिबुधिछुटै, छुटैधर्मतपनेम ॥ जगमेंकुछुदीखतनहीं, होतअधिकजबप्रेम ॥ १ ॥ बनबनमेंमारेफिरैं, घरजनकछुनसुहात ॥ जपतरहतएकान्तमें, मित्रमित्रदिनरात ॥ २ ॥इतिमि०॥

॥ अथसुदामाजीकी बाराखड़ी ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ ककाकमलनयननारायणस्वा

मी ॥ बसैंद्वारकाअंतर्यामी ॥ बासुदेवसंकर्षणछा
जैं ॥ प्रद्युम्नऔअनिरुद्धबिराजैं ॥ ककाकलियुगना
मअधारा ॥ प्रभुसुमिरौभवउतरौपारा ॥ साधुसंग
करहरिरसपीजे ॥ जीवनजन्मसुफलकरिलीजे ॥१॥
खखाखोजोसकलजहाना ॥ जाकोगावैबेदपुराना॥
निर्भयनामहरीकोलीजै ॥ चरणकमलकोध्यानध
रीजै ॥ २ ॥ गगागुणगोविंदकेगावो ॥ मायाजा
लभूलिजनिजावो ॥ धनयौवनतनरंगपतंगा ॥ क्ष
णमेंक्षारहोइयहअंगा ॥ ३ ॥ घघाघटघटबोलैभाई॥
जलथलमेंप्रभुरहैसमाई ॥ ऊँचनीचज्ञानकरिदेखो ॥
एकेब्रह्मसकलमैंलेखो ॥ ४ ॥ ननानिगमखो
जकरिदेखो ॥ दूजोअवरनाहिंकोउलेखो ॥ सप्तद्वी
पऔरब्रह्मंडा ॥ तामहिंछायरह्योनवखंडा ॥ ५ ॥
चचाचितनिश्चयकरिराखौ॥मिथ्याबादझूँठकरिभा
खौ ॥ सत्यशब्दतपहोतप्रमाना ॥ झूँठबचनसोपाप
समाना ॥ ६ ॥ छछाछलबलतजोबिकारा ॥ निर्म

लनामजपोयकसारा ॥ कामक्रोधकोतजोप्रसंगा ॥
सदारहोसंतनकेसंगा ॥७॥ जजाजपोजगतपतिई
शा ॥ जाकोध्यावैंसुरतेंतीशा ॥ निशिबासररहोलौ
लाई ॥ हरिपदकमलसदासुखदाई ॥ ८ ॥ झझा
झेरनकीजोभाई ॥ शिरपरकालरह्योमड़राई ॥ चेत
नहोयहरिशरणैरहिये ॥ कालत्रासकाहेकोसहिये ॥
॥ ९ ॥ ननानिमिषनिमिषहरिरूपनिहारो ॥ चि
ततेंध्यानपलकनहिँटारो ॥ आठौंयामरहौलौलाई
॥ चितचरणनमेंरहेसमाई ॥ १० ॥ टटाटारोजगत
कोनाता ॥ नहिंकोइमातपितासुतभ्राता ॥ हरिसो
हितूनहींकोइअपना ॥ जगव्यवहाररैनकोसपना ॥
॥ ११ ॥ ठठाठाकुरपरमसनेही ॥ जिनएदीनीसुंद
रदेही ॥ नरदेहीकोलाहोलीजे ॥ प्रेममग्नहोयहरि
रसपीजै ॥ १२ ॥ डडाडामाडोलचित्तजनिकरो ॥
हृदयध्यानहरिहीकोधरो ॥ आनदेवकाहेकोध्यावै॥
दृढ़बिश्वासविष्णुगुणगावै ॥ १३ ॥ ढढाढूंढ़नको

कहँजइयेभाई ॥ रोमरोमप्रभुरहोसमाई ॥ पिंडब्र ह्मांडरह्योसमपूरा ॥ सदानिकटहरिबासनदूरा ॥ ॥१४॥ ननानामहरिहिँकोलीजै ॥ हरिभक्तनकीसे वाकीजे ॥ साँचिभक्तिभगवानकोभावे ॥ प्रेमसहि तरसनागुणगावे ॥ १५ ॥ ततातेरीसुफलकमाई ॥ नरदेहीसुमिरनकोपाई ॥ हरिभजगर्भबासतेछूटो ॥ रामनामऐसोधनलूटो ॥ १६ ॥ थथाथोराहीजीव नहैभाई ॥ हरिबिनजन्मवृथारथजाई ॥ चितचेतहु हरिनामउचारो ॥ तनुकीत्रिबिधतापनिरवारो ॥ ॥१७॥ ददादेखतहीजगकोव्यवहारा ॥ मायाजाल बँध्योसंसारा ॥ बंधनतेछूटनकोचहिये ॥ शरणजा इसंतनकेरहिये ॥ १८ ॥ धधाधरणीधरहिरदेधरि भाई ॥ संतनकेप्रभुसदासहाई ॥ सदासमीपनिमि षनहिँटरहीं ॥ भक्तजनोंकीसेवाकरहीं ॥ १९ ॥ न नानेहहरीसोंलावौ ॥ प्रेममग्नरसनागुणगावौ ॥ दु बिधाधर्मतजोमनभ्राता ॥ संतजननकोकीजेसाथा

॥ २० ॥ पपापरेपरेसबजन्मगमायो ॥ गुणाबाद प्रभुकोनहिँगायो ॥ मायाभर्मभूलिरहोअंधा ॥ जन्मगमायोकरिकरिधंधा ॥ २१ ॥ फफाफिरिफिरि परेमोहकेफंदा ॥ अजहुँनचेतमूरुखअंधा ॥ गुरुचरणनकीधरुमनआशा ॥ हरिभजिमेटोयमकीत्रासा ॥ २२ ॥ बबाबोलोअमृतबानी ॥ स्नेहप्रीतिरसना गुणसानी ॥ हरिहीराहिरदैधरिराखौ ॥ कटुकबचनमुखतेंजनिभाखौ ॥ २३ ॥ भभाभूल्योमनसमुझावौ ॥ जासोंभवजलफेरिनआवौ ॥ ऐसीभक्ति करोमनमेरा ॥ जरामरणहोवैनाहिंतेरा ॥ २४ ॥ ममामोहजालभवसागरभारी ॥ धीमरकालमीनसंसारी ॥ जाललियेयमफिरतअहेरा ॥ हरिबिमुखनपरदेतदरेरा ॥ २५ ॥ययायहअवसरनहिँबारंबारा ॥ तातेपुनिपुनिकरतपुकारा ॥ सुनहुमित्रतुमचतुरसुजाना ॥ बिषरसछांड़िभजौभगवाना ॥ ॥ २६ ॥ ररारटनाहरिहीसोंतुमलावौ ॥ हीराजन्म

नबादिगमावौ ॥ ऐसाहीराजोगमजाई ॥ अवसरचूकेफिरपछिताई ॥ २७ ॥ ललाललअमोलकहेमनहरना ॥ तनुभंडारयत्नकरिधरना ॥ प्रभूलालगुरुदेवलखाया॥तृष्णालोभसबदूरिभगाया ॥ २८ ॥ ववावुनगुरुकीबलिहारीजैये ॥ जासोंबस्तुअगोचरलहिये ॥ बारबारनावौपदमाथा । उनपदकमलशरणचितजाता ॥ २९ ॥ ससासद्गुरुकीकाकरौंबड़ाई ॥ महिमामुखतेबर्णिनजाई ॥ चितलागोसद्गुरुकेचरणा ॥ रसनाएककहाँलगिबरणा ॥ ३० ॥ षषार्षींचलियोगुरुअपनीओरा ॥ मायाफंदपलकमेंतोरा ॥ निर्भयभयेपापसबत्यागे ॥ जबगुरुचरणोंमेंचितलागे ॥ ३१ ॥ शशाशोचबिचारमिटेजियजगते ॥ दीपकज्ञानदियेगुरुतबते ॥ नाश्योतिमिरभयोपरगासा ॥ मानौरबिपूरणकरिभासा ॥ ३२ ॥ हहाहरिगयेपापराछितआपू ॥ श्रीगुरुचरणकमलपरतापू ॥ जैसेधूंधचहूंदिशिघेरा ॥ प्रगटभानुजब

भयउउजेरा ॥ ३३ ॥ ललालेबेकोहरिजीकोनामा ॥ देबेकोअनदानसमाना ॥ धरनेकोप्रभुजीकोध्याना ॥ सेवनकोगुरुचरणसमाना ॥३४॥ छछाछाँड़नविषयवदनजोचहिये ॥ सद्गुरुचरणनिकेहोरहिये ॥ नामप्रधुररसपिवोसुजाना ॥ गर्भबासनहिंहोयपयाना ॥ ३५ ॥ बाराखड़िआनँदगुणगावौं ॥ सबसंतनकोसीसनवावौं ॥ दीनपतितहैदाससुदामा ॥ नमस्कारगुरुदेवसुनामा ॥ ३६ ॥ इति सुदामाजीकी बाराखड़ीसंपूर्णा ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥

॥ अथ मधुरवचनप्रशंसा ॥

सो०–सबै अनन्दित होय, मधुर वचनके सुनतही॥
तेहिते बेलिय सोय, वचनहु कहा दरिद्रता १

॥ अथ सत्यप्रशंसा ॥

दो०–सत्यहिते रवितपतहै, सत्यहिपर भुवभार॥
बहै पवनहू सत्यते, सत्यहि सबआधार॥१॥

॥ अथ करुणाबत्तीसी प्रारंभः ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ गिरिको उठायब्रजगोपकोबचायलियोअनलतेउबार्योपुनि बालकमँजारीको ॥ गजकीअरजसुनिग्राहतेछुटाय लीनोराख्योव्रतनेमधर्मपांडवकीनारीको ॥ राख्यो गजघंटतरेबालकबिहंगमको राख्योपणभारतमेंभी षमब्रह्मचारीको ॥त्रिविधतापहारीनिजसंतनसुसुख कारीमोहिंतोभरोसोभारीऐसेगिरिधारीको ॥ १ ॥

कमलानिबासनिजदासनकीपूरैआशताकेविश्वास
विषभख्योमीराबाईहै ॥ केशवकमलनैनसंतनक
रनचैनसैनहितभयेभूपमंजनकोनाईहैं ॥ इंद्रजूकोह
न्योमानसुदामाकोदियोदानभक्त जानिछानिना
मदेवजीकीछाईहै ॥ नंदकेकन्हाईनिजसंतनसुखदा
ईबलदेवजूकेभाईसोहमारेहूसहाईहैं ॥२॥ काहूकेअ
धारसेवाबणिजव्योपारकोकाहूकेअधारथितवितखे
तगाँवको ॥ काहूकेअधारतनुसारभ्रातबंधुनकोका
हूकेअधारप्रियसारनिजनामको ॥ काहूकेअधारबि
द्याबुद्धिबलग्रोहैअरुकाहूकेअधारहाथीघोड़ाधनधा
मको ॥ मैंतोनिराधारमेरीहरिहिकरोगेसारमेरेतोअ
धारएककेवलहरिनामको ॥ ३ ॥ केऊकर्मबादीकेऊ
अन्नभोप्रसादीभये केतनकीमतिभईन्यायसांख्यम
त्तकी ॥ केतेजगदानीयमनेमकोप्रमाणकरैंकेतेपरती
तगहैंतीरथहूव्रत्तकी ॥ केऊब्रह्मचारीकेऊयोगीजटा
धारीभयेबानप्रस्थकेतनकोदयासाँचसत्यकी ॥ मैं

तोहूंपतितमेरीकौनघोसव्है हैगतिकमलापतिराखौ पतिमोसेपतितकी ॥ ४ ॥ केऊकरैंसेवाकेऊराखतहैं लेवादेवाकेऊकरिखानताकेखेतहीकाहिल्लाहै ॥ केते कमेवासीकेतेदानहुंकेआसीकेतेकगानतानबिषयकी बिधिरखिल्लाहै ॥ केतेमहाक्रूरकेतेसबगुणपूरकेते धीरकेतेअतिबांकेरणखेतमेंअरिल्लाहै ॥ मैंतोमहाक्रूर ताकोउद्यमनहिंमूरएकयशोमतवारोकारो हमारोउ सिल्लाहै ॥ ५ ॥ केऊप्रेमलक्षणाभक्तिमैंविचक्षणव्है नीकेभांतिसेवाकरजानैंनिधिज्ञानकी ॥ केऊतत्वबो धसेतीआतमकोशोधकरैंसाधैंनित्ययोगगतिजानैंरो धपानकी ॥ केऊतनुसासनासबासनायतनसहैंकेऊ कउपासनागणेशशिवभानकी ॥ हूंतोहूंअजानता केकाहूसेपिछाननाहीं कोऊकछुजानैंहूंतोजानुना थजानकी ॥ ६ ॥ जैसेखगबालककोराखिलियो घंटातरेलाक्षागृहबीचराख्योपांडवसबसाथको ॥ राखिलियोपरीक्षितकोमाताकेउदरमाहिंराख्योब्रज

ग्वालगिरीधाऱ्योनिजहाथको ॥ पारथकेस्वारथ कोसारथीभयेहौ तुमसखानिजजानिकैजितायोहै भारतको॥पावकप्रजारितहाँराखीहैमँजारीकोसुवैसी भांतिराखौनाथमोसेअनाथको ॥७॥ केऊध्यानधार णासमाधिविषैलीनभयेमिलावैंपरमात्माकोआत्मा विचारीको ॥ केतेंनिष्काममनअजपाकोजापजपैं केतेभजैंशंकरधतूरकेअहारीको ॥ केतेसकाममंत्र यंत्रआठौयामजपैंकेतेलोभदामकेतेगणेशसुखकारी को ॥ तेरोध्यानज्ञानतेरोआसरोतिहारोमोहिंकोई कछूध्यावौमैंतौध्यावौंगिरिधारीको ॥ ८॥ लीलाअ गाधब्रजबासिनकेहेतसेतीधनाजूकेखेतबिनबोयेउ पजाईहै ॥ भीषमकोपणऔरद्रौपदीकीलाजराखीअ शरणशरणकीर्तिवेदमध्यगाईहै ॥ बूड़तबचायोब्र जकरपरगिरिधाऱ्यो साहबननरसीकीहुंडीसकराई हैं ॥ करियेनबारअबसुनियेपुकारमेरीमोपैब्रजरा जगजराजकीसीआईहै ॥ ९ ॥ दीनबंधुदयासिं

धुमेटनदुखद्वंदके ऐसेतौअनेकबिबिधग्रंथनमेंकही है ॥ गोपमेहतेउबारेराजाबंधतेनिवारेभारतमेंपारथ हितएतेशरसहीहै ॥ नामाकबीरगीधगणिकारु कीरतारेचीरबाढ़िद्रौपदीकोजगयशलहीहै ॥ बेर मॉंझधारमेरोदुखवारदेकैएहोनाथकरुणानिधिमेरो हाथहीगहीहै ॥ १० ॥ छंदमत्तगयंद ॥ ॥ आ रतनेकगुहारसुनीतबदीनदयालुकीरीतखरीकी ॥ दौ रतभेतजिकैनिजधामसुबातसुनीतबभीरपरीकी ॥ मेरियबेरविलंबरहेसुकहातकसीरकरीजुहरीकी ॥धा यसबेरसुनीजबटेरकरीनहिंबेरसुबेरकरीकी ॥ ११॥ तादिनटेरसुनी ततकालसहायककाजकीआनखरे हौ ॥ संतनहेतअनंतअपारजुआपसबैअवतारधरे हौ ॥ मेरीगुहारसुनीनहिंकानसुकान्हकहौकिनबा परेहौ ॥ पौढ़रहेबटपातमेंनाथहोभोरभयेकिजुराज करेहौ ॥ १२ ॥ कबित्त ॥ तबतोभक्तनसहायकाज ब्रजराजकंसकोबिदारिमतिधरीनचित्तमामाकी ॥

बालदभरल्यायेजुलाहाकेदयालुहोयगवुहिंजिवाई अरुछानछाईनामाकी ॥ संतनकोपणग्वालगणरा ख्यो व्यालसेतीविपत्तिहरिसंपतिअमितदेसुदामा की ॥ अहोबलवीरतुमद्रौपदीकोबाढ्योचीरहरत क्योंनपीर अबमोसेनिकामाकी ॥ १३ ॥ द्रौपदी कीलाजकाजद्वारिकासेदौरिआयेचीरकोबढ़ायटेंक राखीसभ्यशीलकी ॥ पुत्रहेतनारायणनामलेततत कालकाटेयमजालगतिभईअजामीलकी ॥ मूठीए कचावलकीखातहिनिहालकियोकैसीदशाभईउन ब्राह्मणकुचालकी ॥ मेरेहूंकरोवीढीलहोतहोकहा वमीलतबतोनकरीढीलटेरसुनापालकी ॥ १४ ॥ कबकोपुकारतहौंसुनतनएकोबातएहोनँदलालतुम कैसेप्रतिपालहो ॥ कहतेदयालुसोतोदयाउनदे खियतमेरीमतिऐसीआछेनीकेपशुपालहो ॥ धन्यो होनृसिंहरूपतबहींप्रल्हादकाज अबतोनलाजकछु गोधनमैग्वालहो ॥ डान्योतेलकाननमैंबस्योजा

यबनमैंशेषशयनलेटकीधौंपौढ़ेघरपातालहौ ॥१५
बेरबेरटेरटेरजीभहू शिथिलभई हरतनमेरीपीरकैसे
अभिमानीहौ ॥ कृपणभयेहोकीधौंमौनकोगहेहौ
कान्हदयाउनआवैअबकैसेउनमानीहौ ॥ कैसेकैउ
दारतुमहोतहौमुरारिगोपिनकेप्यारेछाँछदूधहूकेदा
नीहौ ॥ बकिबकिथकीबानीकछुहूनचित्तआनी
जानीहमजानीबूझिकरतआनाकानीहौ ॥ १६ ॥
वेदऔपुराणनमेंकरतबखानऐसेसतयुगबीचध्रुवप्रह
लादकोतूठेहौ ॥ त्रेताकेबीचनीचकुलकीनकरीका
निभीलनीकेहाथप्रेमभाखेबोरजूँठेहौ ॥ द्वापरकेअं
ततुमद्रौपदीकिलाजराखीपांडवकेकाजदलकौरवके
रूठेहौ ॥ अबकलिकालमेंजोकरौनसहायमेरी
तोसबलोगहँसकहैंहरीझूँठेहौ ॥ १७ ॥ हमैंतुमैं
बनैगाढ़ीअतिहिबयसबाढ़ीताकोकरोकौनसानिबेरो
अबन्यावरो ॥ टेरतहूंभोरसाँझताकीपरवानकछुजा
नतहोऐसोजुबकैहैकोऊबावरो ॥ मैंतोनाथदीनतुम

नाथकहेदीननकेनामसोंप्रमाणअबकरौक्योंनचाव
रो ॥ बिरदबिचारिकैमुरारिमेरीलाजराखो मेरीला
जखोयेजाइबिरदरावरो ॥ १८ ॥ जादिनभोतभ
ईतबकीकहीजानतनहीं सुनौकानदेकैजोहैबाततंत
की ॥ भयेहोकठोरऔरकियोकहाचाहतहोनंदके
किशोरलाजराखौक्योंनसंतकी ॥ करोगेसहायअब
दुखितभयोहौंअतिमोपैयदुरायहायपरीहैदुदंतकी॥
टेरतहौंबेरबेरभँवरमाँझमेरीअरजएहोहरीतोकौकछु
कबरहैबसंतकी ॥ १९ ॥ एहोयदुरायमैंकहतहौं
सुनायसोअबनीकचितधरीप्रभुनेकनरिसायहो ॥
हूंतोपऱ्योगैलताकीकियहीबनैगीटैलसबसेबसायप्र
भुमोसेनबसायहो ॥ दयावंतकहावैतौदयाहूकोका
जराखिमोसेपतिततीनलोकमैंनपायहौ ॥ खेवतहौं
बिपतिएकघेरलईचहूँओर मेरीकरहोसहायकीधौलो
कनहँसायहौ ॥ २० ॥ जगतकेस्वामीअंतरजामीहूँ
कहावतहोहरतनाहींमेरीपीरएतेअभिकूकेपर॥ सुदा

माबिभीषणकोछिक्रमहिँ राजाकियोअरीकरियेवो
कहामोसेएकटूकेपर ॥ मोपरपरीहैभीरदेखतहोबि
नापीरएहोघनश्यामघनवृथाखेतसूकेपर ॥ करनी
सहायजोतोबेगदेसहाय करोपीछेकहाहोतकियेऔँ
सरकेचूकेपर ॥२१॥ कहाभयोजोपैतुमद्वारिकाकेरा
जाभयेगोकुलकेबासीखाँसीछाछकेपिवय्याहो ॥ क
बहूँमच्छबाराहनृसिंहपरशुरामभये कबहूँभयेबाम
नअच्छेस्वांगीभँवय्याहो ॥ धेनुकेचरय्यागुंजमाल
केधरैय्यापुनिबंसीकेबजैय्याअरुबनमेंरहैय्याहो ॥
टेरतहौंप्रातरातबूझीनाहिंमेरीबातजानीहमतातभ्रू
गुलातकेखवय्याहो ॥ २२ ॥ कौरवकोबंसबोऱ्यो
कंसजूकोकंधतोऱ्योगोपिनकोदधिचोऱ्योदोऊबट
पारेहौ ॥ वृंदाअरुबकीबोरीकुबिजासोंप्रीतजोरीदा
नदेतबलिबोऱ्योचोरचिरवोरहौ ॥ कबहूंकुलीनकी
सहायकरिसुनीनाईवेश्याअरुकीरगीधएैसेनकोतारे
हौ ॥ जरासंधसेतीहारेद्वारिकापधारेतुमकवनकेका

जसारेऔरकेबिगारेहौ ॥ २३ ॥ गौतमकीनारीता
कीकथाबहुतविस्तारी यद्यपिउधारीतनछिद्रउघरा
यकै ॥ दुःशासनद्रौपदीकेसभाबीचकेसखैंचेतबला
जराखलुईलाजकोगमायकै ॥ भयोबलहीनजबअ
तिहीअधीरछिन्नतबगजकाजहरिआयेतुमधायकै ॥
दीनकेदयालप्रभुयामेंतोसँदेहनाहींकरतसहायआ
पनीकेतनतायकै ॥ २४ ॥ काहूकेतोहेतकरिखेतही
निरायदियोकाहूपरप्रीतिकाजबालभरिल्यायेहौ ॥
काहूकेमँजूरहोइछानिहींछवायदईनाईहोइनृपतिको
आरसीदिखाईहौ ॥ काहूपैदयालहोइदारिदबि
दारिदियोकाहूहेतसाहबनहुंडीसिकराईहौ ॥ करि
हौंजोहोमजापदेखतहोआपसबमोंसोंतोतिहारेनई
बातहींबनाईहौ ॥ २५ ॥ जानतहौंभलीबिधिबड़े
बिश्वासीपरछलकोकरैयथाऐसोदेख्योकोइधूतना ॥
पांडुपुत्रहेतकुरुक्षेत्रमैंमचायोयुद्धकौरवबंसबोरबेको
ऐसोकोउदूतना ॥ महानिरदईकछुबातहीनजात

कहीयादोबंसबोरबेकोऔरकोउसपूतना ॥ स्तनको
पानकरप्राणनकोपानकियेपूतनासुपूतनापुकारत
मोंपूतना ॥ २६ ॥ दाससुदामाकोसंपतदीचुटकीभ
रिचावलपाहिलीने ॥ सागकेपातपचोलिकैखाइ
तबैऋषिभोजनदीनेनबीने ॥ कंसकीदासीपैचंदन
लेपटरानीकरीकहौंमानकरीने ॥ कारययाजगमैं
यदुरायअकोरलियेबिनकौनकेकीने ॥ २७ ॥ या
हिजगहेतप्रभुकेतेअवतारधरे ताकेअबपालबेकोकै
सेमनमोरोगे ॥ एहोजगजीवनजगदीसपोषणभर
णतुमबिरदनिबाहनमैकैसेदिल चोरोगे ॥ बिरद
काजअतिहीअधीरभयेजातहौसोकहाश्रेष्ठसेतीनेह
तिनकासोतोरोगे ॥ धरिकेबराहरूप अवनीज्ञ
तुंडधारिअबकहापृथिवीकोबिनामेहबोरोगे ॥२८॥
ब्रह्ममहेशशेषनारदगणेशकहैं भक्तनकेकाजहरि
आपदेहधारीहै ॥ मंगलकरणदुखद्वंदकेहरणपुनिपो
षणभरणऐसेरटैंनरनारीहै ॥ बिरदभक्तबत्सलसोबेद

औपुराणकहैंजानतहौंजाकेअबखोबेकीबिचारीहै ॥ द्वारकाकेबासीभयेजातकेमेवासीअब मेरीहोतहाँसी यामेंहाँसीतोतिहारीहै ॥ २९ ॥ पीपासोपापीअजामीलसोंसुरापीअरुव्याधसोंअधमतान्यो अहल्याउधारीहै ॥ राकाबांकाकीरतारेकेतिकअहीरतारे हाथीसेहजारबारपुनिबारत्यारीहै ॥ कुबरीरैदासपीपाधनानामदेवछीपा ऐसेतोअनेकतारेतान्योनागकारीहै ॥ अधमअधमतारेकेऊअधमीउधारेसबहीकेकाजसारेअबबारीसुमारीहै ॥ ३० ॥ करुणानिधिकीन्हसुनोविनतीसुनबेकेबिनाप्रभुकैसेसरैगो ॥ दीनदयालदयाकरियेजोगईकरियेतोपलाउधरैगो ॥ मोसेकपूतकेकामकृपानिधियाजगमेंकहौकौनकरैगो ॥ तातेमैंनाथकोहाथगह्योरघुनाथबिनादुखकौनहरैगो ॥ ३१ ॥ करतअपराधभोरसांझतरकौरनितअतिहीकठोरमतिबौरकोनकामहौं ॥ आतुरअधीरतातेधीरजधरतनाहींऊँचनीचबोलिग

तिन्नकौंआठौंयामहौं ॥ अरचानजानूँकछूचरचान बूझतहौंकरिहेतप्रातसेनलेतहरिनामहौं॥सबतकसी रबलबीरमेरीमाफकरौ कहैमाधोदासप्रभुतिहारोगु लामहौं॥३२॥ ॥दोहा॥ ॥याकरुणाबत्तीसिको, पढ़ैंसुनैंनरनारि॥ तिनकेसबदुखद्वंद्वको, काटैंकृष्ण मुरारि॥३३॥इतिश्रुं०मा०कृ०तकरुणाबत्तीसीसं०

॥ अथ पंचरत्नवर्णन ॥

दो०-तुलसीयहिसंसारमें, पंचरत्नहैंसार ॥
साधुमिलनऔहरिभजन, दयादीनउपकार

॥ महत्प्रशंसा ॥

शशिकलंक हरिभृगुलता, वड़वानलहिसमुद्र ॥
बड़ेराखिरयागैंनहीं, शेषभूमिबिषरुद्र ॥ १ ॥

रासकी गति

ताथेइताथेइताताथेइताताथेइथेइथेइताताथेइताता ताताथेइतातताथेइताथेइताथेइथेइततथाथेइततथा थेइतथेइतथेइताताताथेइया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथनरसीमेहताकीहुंडीलि०



श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ श्रीगणपतिकोपहिलेध्यावौं ॥ जबनरसीकीहुंडीगावौं ॥ परमभक्तमेहताहैनरसी ॥ रामभजनमैंबुद्धिहैसरसी ॥ १ ॥ निशिदिनरामकृष्णचितधरै ॥ झूँठीदंतकथानहिंकरै ॥ जाकोहैजूनाढ़बास ॥ रामभजनमैंरहेहुलास ॥ २ ॥ तहँआयेसाधूजनदोय ॥ बा

सोलेकररहिगेसोय ॥ प्रातजागपूँछतहैंतहाँ ॥ कौ
नलिखतहैहुंडीयहाँ ॥ ३ ॥ एकमसखरैंकीन्हीहाँ
सी ॥ सुनियोहोतीरथकेबासी ॥ घरमेहतानरसीके
जावो ॥ चाहेजितनीहुंडिलिखावो ॥ ४ ॥ उनके
धनकोछेड़ोनाहीं ॥ बहुतेरीलक्ष्मीघरमाहीं ॥ जब
साधूपूँछतघरआये ॥ नरसीजीघरबैठेपाये ॥ ५ ॥
रामरामसाधूबोलेजब ॥ हाथजोड़नरसीबोलेतब ॥
उज्वलजलसेपांवपखारे ॥ ऊंचेआसनपरबैठारे ॥
॥ ६ ॥ पांवपखारिलियोचरणामृत ॥ धनधनअप
नोभाग्यबखानत ॥ श्रद्धामाफककरीरसोंई ॥ पा
यलियोसाधूजनदोई ॥ ७ ॥ चलकरियेआरामक
रायौ ॥ नरसीपगचापनकोआयौ ॥ साधुनकोपूँछ
तहैऐसी ॥ मोपरकिरपाकीनीकैसी ॥ ८ ॥ साधू
बोलेबातबनाय ॥ नरसीजीसुनियोचितलाय ॥ सं
गतमिलैचलैनहिंसाथ ॥ हमपासेरुपयासौसात ॥
॥ ९ ॥ रोकरुपैय्याघरमेंधरो ॥ नगरद्वारिकाहुंडी

करौ ॥ सोचतनरसीकहाकहुँइनको ॥ करमभोग
भेजेहैंजिनको ॥ १० ॥ मेरेतोहरिनामअधारा ॥
एहीबणिजकरौंब्यौपारा ॥ अबहरिकीअस्तुतीकर
तहैं ॥ तासुमिरेसबकामसरतहैं ॥ ११ ॥ गजसहाय
कीन्हीततकाला ॥ गरुड़छाँड़धायेगोपाला ॥ परसी
शिलाचरणरजधारी ॥ गौतमनारिअहल्यातारी ॥
॥ १२ ॥ पृथ्वीअसुरडुबाईजबै ॥ धरिबराहतनुआ
नीतबै ॥ हिरणाकुसजबखरोरिसायो ॥ नृसिंहरू
पप्रहलादबचायो ॥ १३ ॥ चारमासतुमबलिकेद्वा
रा ॥ आपपधारेश्रीकरतारा ॥ मान्योपापीरावण
राई ॥ लंकबिभीषणकोतुमदाई ॥ १४ ॥ सुतसनेह
हरिनामउचाऱ्यो ॥ अजामीलसोंपापीताऱ्यो ॥
आठौयामपढ़ातीकीर ॥ गणिकातारीश्रीरघुबीर ॥
॥ १५ ॥ जूँठाबोरभिल्लिणीहाथ ॥ आपअरोगेश्री
रघुनाथ ॥ भेजीकंसपूतनाआई ॥ बनीरूपअति
सुंदरताई ॥ १६ ॥ श्रीमुखमैंजबअंचलदीनो ॥

ताकोप्राणखींचतबलीनो ॥ शकटासुरराक्षसजब आयो ॥ बैठोगाड़ाबदनछिपायो ॥ १७ ॥ दीन्हीलातकन्हय्यालाला ॥ मार्योपापीकोततकाला ॥ तृणावर्तअतिगरदउठाई ॥ नंदगाममैंधूममचाई ॥ १८ ॥ लेकरकान्हगयोआकासा ॥ मुष्टिकमारकियोतबनासा ॥ बालपनेमैंमाटीखाई ॥ मातयशोदामारणआई ॥ १९ ॥ देखुमातमैंकछ्नखायो ॥ तीनलोकमुहमैंदरसायो ॥ देखयशोदाबिस्मयभारी ॥ पलमैंमायादूरीकरी ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ पयउफनातोदेखकर, गईयशोदादौर ॥ पीछेदधिकीमाथनी, फोड़ीनंदकिशोर ॥ २१ ॥ रीसभरीमाताजबै, सुतकोपकर्योधाय ॥ ऊखलसौंबांध्योतबै, नंदनंदनब्रजराय ॥ २२ ॥ दोरूखनकेबीचमैं, ऊखलखैंच्योजाय ॥ नलकूबरपरगटभये, टूटपरेवृक्षराय ॥ २३ ॥ नारदजीकोशापजो, दूरभयोततकाल ॥ चढ़विमानसुरपुरगये,

तिनकोकियोनिहाल ॥ २४ ॥ बत्सासुरबछराभयो, रूपकपटकोधार ॥ श्रीकृष्णवाकोमारियो, पटक्यो पाँवपछाड़॥ २५ ॥ बरुणलेगयोनंदको, यमुनामा हिंडुबोय ॥ पिताआँचजानीतबै, कृष्णछुड़ायेमोय ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ चोरेचीरजबैघनश्याम ॥ ब्रजबासिनकेपूरणकाम॥ऋषिपत्नीकेकरकेतीवण ॥ आपअरोगेजगकेजीवण ॥ २७ ॥ जलयमुनाकोमो टोभाग॥जामैनाथ्योकालीनाग ॥ बच्छग्वालब्रह्मा हरिलीन्हा ॥ श्रीनँदलालफेरसबकीना ॥ २८ ॥ बरसएकलागीसबमाया ॥ ब्रजबासिनकछुलक्षन पाया ॥ कोप्योमघवाब्रजपरजबहीं ॥ गोपीग्वाल बचायोतबहीं ॥ २९ ॥ धनिधनिब्रजकेगोपीग्वा ल॥ नितखेलततुमउनसँगख्याल ॥ निशाशरदअ रुबालासाथ॥ रासरच्योश्रीगोपीनाथ ॥ ३० ॥ सा थअक्रूरमधुपुरीआये ॥ लोगनगरकेअतिसुखपा

ये ॥ कुब्जासँगतुमरमेकृपाला ॥ क्रीड़ाकीनीश्री गोपाला ॥ ३१ ॥ हाथीहत्योकुवलयापीड़ ॥ जिनकोकंसचढ़ायोभीड़ ॥ जानिबूझकैभलोखिलायो ॥ पकड़सूंड़करदूरभगायो ॥ ३२ ॥ मुष्टिचणूर हतेदोमल्ल ॥ कुस्तीकरिमान्योयकपल्ल ॥ पापीकंसहत्योमहराज ॥ उग्रसेनकोदीन्होराज ॥ ३३ ॥ आठभईतुम्हरेपटरानी ॥ एकतेएकअधिकमनमानी ॥ अंतरयामिद्वारकानाथ ॥ उनकोहैमेरेसिरहाथ ॥ ३४ ॥ ॥दोहा॥ ॥ अतिसुंदरिहैरुक्मिणी, लक्ष्मीकोअवतार ॥ सतिभामाकोमानहै, जाम्बवतीसोंप्यार ॥ ३५ ॥कालिंदीनागनजिती, भद्राजीसोंहेत ॥ मित्रवृंदाअरुलक्ष्मणा, कुलकोशोभादेत ॥ ३६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पारिजातसुरपुरसेलाये ॥ सतिभामाघरआनिरुपाये ॥ भ्रमउपज्योनारदकोजबै ॥ महलौंमहलपधारेतबै ॥३७॥ बिपतसुदामाकीतुमहरी ॥ घरमेंऋद्धिसिद्धिबहुक

री ॥ अग्निअजीर्णहोगईतबै ॥ बन खांडवमेंजराईज
बै ॥ ३८ ॥ यज्ञराजपांडवकोकियो ॥थालीमांजन
कोतुमरयो ॥ जबजबबोल्योजोशिशुपाला ॥ था
लीफेंकहत्योततकाला ॥ ३९ ॥ जबद्रौपदिकीकी
नीभीर ॥ बस्त्रबढ़ायोघव्योनचीर ॥ शापदेनपांड
वकोआये ॥ बनमेंऋषिकोबहुतअघाये ॥ ४० ॥ दा
सविदुरकोमोटोभाग ॥ अतिहिप्रीतिसोंपायोसाग
॥ भीषमकोपणराख्योजबै ॥ भीड़पड़ीभारतमेंतबै ॥
॥ ४१ ॥ कियोपरीक्षितकेरिसहाय ॥ गर्भवासमें
लियोबचाया ॥ भारतमेंअतियुधमचाया ॥ टीटो
ड़ीकाअँडाबचाया ॥ ४२ ॥ मित्राचारकियोहैपार
थ ॥ जाकोआपजितायोभारथ ॥ पांडवकोअश्वमे
धकरायो ॥ अतिहिप्रीतिसोंहेतजितायो ॥ ४३ ॥
मद्यपियोयादवमिलिसबहीं ॥ तोइच्छासोंप्रगटेतब
हीं ॥ उद्धवकोतुमज्ञानसिखायो ॥ कृष्णरूपप्रभुघा
मसिधायो ॥ ४४ ॥ तुम्हगुणकोकहाविचार ॥ सुर

तेंतीसनपावहिंपार ॥ मैहूंदीनऔरनहिंहाथ ॥ आपकहीजेदीनानाथ ॥ ४५ ॥ तुमअनेकभक्तनको तारे ॥ संतहेतबहुकारजसारे॥ मैंशरणागतआयों तेरी ॥ तुमहिँ प्रतिज्ञाराखोमेरी ॥ ४६ ॥ गदगद होयप्रेममैंपाग्यो ॥ अबहुंडीलिखनेकोलाग्यो ॥ नगरद्वारिकासिद्धिश्री ॥ सुभगसुथानजहांबसैंहरी ॥ ४७ ॥ श्रीसाहाजीसांवलनाम ॥ तिनकोनरसी करैप्रणाम ॥ तुमपरतापचैनहैयहां ॥ अतिआनंदचाहियेवहां ॥ ४८ ॥ पानकपूरअरोगणलीजे ॥ डीलांकाबहुयतनकरीजे॥डीलांपाछेसारीगाथ॥ सुद्रामनियोडीलांसाथ ॥ ४९ ॥ अपरँचसमाचारसों काम ॥ हुंडीसिकारदीजोदाम ॥ हमराखासाधूजनपासा ॥ साहयोगतुमदीजोखासा ॥ ५० ॥ सातसैकरारूपयालीना ॥ नेमेजाकासाढ़ातीना ॥ पौनादोयचौगुनाकीजो ॥ देखतसबैदामगनदीजो ॥ ५१ ॥ मितीमाससंबतअरुदीनू ॥ लिखशिरना

मूकोठोकीनू ॥ हुंडीसाधूलीनीजबै ॥ नरसीउनको
बोल्योतबै ॥ ५२ ॥ हांथसांवलेसाहकेदीजो ॥
तुरतरुपइयाअपनालीजो ॥ करिमैंजलसोपहुँच्यो
तहां ॥ नगरद्धारकासांवलजहां ॥ ५३ ॥ जाकर
भेटेश्रीरणछोड़ ॥ पापगयेतबतनकेक्रोड़ ॥ तीरथ
बासीपूंछततहां ॥ सांवलसाहरहतहैंकहां ॥ ५४ ॥
कोइबतावोउनकोबास ॥ सांवलपरहुंडीहमपास ॥
लोकनगरकेऐसीकहैं ॥ सांवलसाहयहांनाहिंरहैं ॥
॥ ५५ ॥ कोउठगारेपासठगाये ॥ तुमतोहुंडीखो
टीलाये ॥ देरनकरौबेगितुमजावो ॥ उसीठगारेको
पकड़ावो ॥ ५६ ॥ उपजीजीकोबड़ीउदासी ॥ पी
छाचलिभोतीरथबासी ॥ दोअरुतीनकोसजबआ
या ॥ बैठेउथकिकरिवृक्षकिछाया ॥ ५७ ॥ भयोजीब
मेहर्षउछाह ॥ तबहींआयेसाँवलसाह ॥ रामरामक
रबैठेआगे ॥ हालहकीकतपूंछनलागे ॥ ५८ ॥ साधू
बोलेमधुरीबानी ॥ कहाकहूंकछुगतिनहिंजानी ॥

सांवलपरहुंडीहमलाये ॥ ताकेदामकछूनाहिं पाये॥ ॥ ५९ ॥ अबपीछानरसीपैजइबे ॥ ईजतउसकीखू बगमइबे ॥ तबबोलेतुमसारोकाम ॥ सांवलसाह हमारोनाम ॥ ६० ॥ बसौंद्वारकाअतहीछानै ॥ कोइकहरीकोसेवकजानै ॥ हुंडीकाढोरुपयालीजै ॥ खरचोखाबोदेरनकीजै ॥ ६१ ॥ तबसाधूजनभयेखु साल ॥ हुंडीकाढिदीनततकाल ॥ गांठरुपइयाबां ध्योजबै ॥ सांवलकोपूंछतभेतबै ॥ ६२ ॥ कहासाख अरुकहापिछान ॥ नरसीकातुमकरोबखान ॥ सां वलकहैंसाधुसुनिलीजै ॥ नरसीमेरासखागनीजै ॥ ६३ ॥ मैंसेवकनरसीकोतनी ॥ उनकीमोपरकि रपाघनी ॥ उनकोबेंच्योहूंबिकजाऊं ॥ अधिकीऔ रकाहदरसाऊं ॥ ६४ ॥ मनआयोआनंदउछाह ॥ कागदलिखतेसांवलसाह ॥ सिद्धिश्रीजूनागढ़बा स ॥ बिराजमानहोहरिकेदास ॥ ६५ ॥ सरबऊ पमालायककरूं ॥ तापरश्रीअष्टोत्तरधरूं ॥ जिनका

हैनरसीजीनाम॥चरणकमलपरकरूंप्रणाम ॥ ६६ ॥
कृपातुम्हारीसुखैहैयहां॥अतिआनंदचाहियेवहां॥
खानपानचितनीकेआनो ॥ मुद्राडीलांपाछेजानो
॥ ६७ ॥ सदाकरतहौहमपरदाया ॥ याहीभांति
राखियोमाया ॥ हुंडीतुम्हारीसाधूलाये ॥ जिनके
दामलियेपरखाये ॥ ६८ ॥ हेतकरोतुमअनँदअपा
र ॥ हुंडीलिखजोबारंबार ॥ यहिबिधिकागदलि
खियोजबै ॥ सौंप्योसाधूजनकोतबै ॥ ६९ ॥
यहदीजोनरसीकेहाथ ॥ एकजबानीकीजोबात ॥
दूजीचितमैंकभीनआनो ॥ सांवलकोसेवकहीजा
नो ॥ ७० ॥ ऐसीबातपरस्परभई ॥ बिदाहुएसा
धूजनसई ॥ फिरतफिरतजूनागढ़आये ॥ सैंदआग
लीचितमैंलाये॥७१॥साधूजनकरआगोकीनू ॥
कागदसांवलतुमकोंदीनू ॥ इसकासमाचारतुमबां
चो ॥ मित्रतुम्हारोसांवलसाँचो ॥ ७२ ॥ कागद
लियोजबैततकाल ॥ बाँचतनरसीभयेखुसाल ॥

धनिधनिसाधुतुम्हारोहियो ॥ तुमसाँवलकोदर्शन कियो ॥ ७३ ॥ इसविधिकीनीभक्तकिसाह॥हुँडीसिकारीसाँवलसाह ॥ कबीरकेघरबालदलायो ॥ धनाभक्तकोखेतनिकायो ॥ ७४ ॥ राणैबिषकोप्यालोभऱ्यो ॥ चरणामृतकोनामधऱ्यो ॥ मेल्योदासीसाथेजबै ॥ मीराबाईपीगईतबै ॥ ७५ ॥ सुखउपज्योपीवतपरमान ॥ करीसहायताश्रीभगवान ॥ षीरअरोग्योश्रीयदुराय ॥ नरसीकीहुंडीसिकराय ॥ ७६ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ नगरनागपुरबास, नामजेठमलजानिये ॥ हरिभक्तनकोदास, संवतसतरासोदसक ॥ ७७ ॥ समोबैठगुरुवार, ज्येष्ठशुक्लपखअष्टमी ॥ हरिगुणकियोउचार, जोबांचैसीखैसुनै ॥७८॥इतिनरसीमेहताकीहुंडीसं० ॥

॥ अथ रामतत्त्वनिरूपण ॥

॥ दोहा ॥ लिखिलिखिलिखिसबजगलिख्यो, पढ़िपढ़िपढ़िकाकीन्ह ॥बढ़िबढ़िबढ़िघटिघटिघटिगयो,तुलसीरामनचीन्ह ॥ १ ॥ इति रामतत्वनि० ॥

८

॥ अथ हनुमानविजयप्रारंभः ॥



दो०॥स्वस्तिश्रीपतिपशुपती,गणपतिमृगपतिमाय
श्रीधरजगपतिखगपती, बंदौंनगपतिराय ॥१॥
विजयहनूबर्णनकरूं, हृदयघनूआनंद ॥
श्रीधरमारुतनंदको, दर्शनपरमानंद ॥ २ ॥
छंदकड़खा ॥ ॐनमः शारदासुमतिमनमैंबसोकुम
तिकाअंधकेफंदतोरै॥ ह्रींनमःहाँकहनुमानमहबीर

कीभीरकादुःखकोसुखमोरै॥श्रींनमःसर्बदासंपदाआ
पश्रीलक्ष्मीनाथकेहाथपावैं॥क्लींनमःक्लेशसंताप
दुखदूरकाबिजयहनुमाननरनामगावै ॥ १ ॥ प्रथम
जानामसेकामजगमैंकरेदुःखकेहरणसुखकरणगन्ना।
बुद्धिकेसिंधुश्रीगिरिपुत्रकेचरणपदशरणकोधरणम
न्ना॥गुरुपदकंजकीरंजमकरंदमनभ्रमरज्योंसुमिरिके
रसीसनाऊँ॥ कोटितेंतीसमिलिदानआशीषद्योहृद
यहनुमानकोध्यानपाऊँ॥२॥ जगतमैंजगमगेज्योति
ज्वालामुखीजाहिपदपंकमैंशंकनाहीं ॥ हनुमानहं
कारटंकारकीशक्ति गुरुशिष्यकीभक्तितिहुँलोकमा
हीं ॥ चलतहैमंत्रश्रीबचनईश्वरतणाँटरतदुखरोगब
हुखुलतभोगा ॥ हृदयहनुमानकोध्यानमुखगान
करमानसन्मानसबकरतलोगा ॥३॥ बिजयहनुमा
नबिस्तारसंसारमैंजीतिगढलंकनिःशंकगाऊं ॥ बु
द्धिकोहीनअतिदीनगुणतीनपणबीरमहाबीरकीभी
रपाऊँ॥ मातुश्रीअंजनीअंशईश्वरतनयदानबरदा

नसुरईशदीयो ॥ अरुणप्रतिबिंबकोउदितहगदेख
करफूलमखतूलज्यौंग्रासकीयो ॥ ४ ॥ बालिकी
बिपतसेबसेऋषिमूकपैतहाँरणधीररघुबीरआये ॥त
हाँतुमआयकैभक्तिपदपायकै मित्रसुग्रीवसोंप्रीति
लाये॥ गयेगढ़लंकपैपवनकेबेगआकाशमेंयक्षिणी
त्रासखाई ॥मुद्रिकाआपरघुबीरकेहातकीबातकरजा
नकीखबरपाई ॥ ५ ॥ बेफिकरबाटिकाताहिखंका
रिअरिपुत्रकामारिकपिनामपायो ॥ दनुजदलतोड़
कपिपूँछकोमोड़पुनिमातढिगदौड़पदशीसनायो ॥
होतहहकारगढ़लंकदरबार लंकेशकेपासकपिआप
आये ॥ बचनसेमोहबशभयेसबराक्षसालंकपुरजार
जगजयतिगाये ॥ ६ ॥ पड़ेहैंआयरघुबीरकेपाँयमें
बीनतीबहुतकरजोरिकीनी ॥ लंकपुरजारितापुत्र
कोमारिश्रीजानकीनाथकोखबरदीनी ॥चढेरणधीर
बहुफौजकीभीरतबदाहिनीबाँहपरअनुजसोहै ॥ द
क्षिणीकोणपरकोपकोनेत्रजबसहायकोकरणअबऔ

रकोहै ॥७॥ गयोगढलंकपरडंकहनुमानकोरंककीशं
कनहिंअंकजेती ॥ द्विबिदसुग्रीवनलनीलऋषिराज
पुनिखबरयुवराजहनुमंतनेती ॥ सिंधुपरसेतुधरपा
जपाखानकरनामपरतापकपिकटकपारा॥जयशब्द
उच्चरैंभूमिसबथरहरैफरहरैंध्वजादशग्रीवद्वारा ॥८॥
कोटपरकूदकरकांगरेकांगरैनागिरैनाडरैबीरहनुमंत
कूदै ॥ उमँगमनमांहरघुनाथकेबनचराजायदाखल्ल
भेमहलसूदै ॥ रामकेछुवतपदआवहोलंकपदनाथ
बकसीसदेलंकतेरी ॥कहतमंदोदरीपीवसुनपापिया
रामदलआयकेलंकघेरी ॥ ९ ॥ दशाननकोपकरक
हतसुनुकामिनीभामिनीदामिनीजातचपला ॥ दा
मिनीचपलघनमेघमैंचलपलैभामिनीहलपलैभुवन
प्रबला ॥ शूरनरघरपलैसमरसंग्राममैंशत्रुकेसीसभु
जदंडतोड़ै ॥ कहतदशग्रीवसुनुरानिमंदोदरीलाज
केकाजक्योंमुःखमोड़ै ॥ १० ॥ कोटगढ़लंकआखा
तदरियावसेमेरुसमबंधुहैकुंभकर्णा ॥ हारकेजांयगे

बनचरामानवायुद्धमेंजीतिहैंलंबकर्णा ॥ जानकी
हेतउद्योगनृपरामकोमनुजकहजीतिहैदनुजहीतै ॥
कहतदशग्रीवसुनुरानिमंदोदरीरामकेअनुजकोतनु
जजीतै ॥ ११ ॥ रामकोदाशआरामकोनाशकरलं
कसीधामनिष्कामझाँपै ॥ अंजनीपूतसोरामकोदूत
हैछूतकीहूतसेभूतकाँपै ॥ एकहीबनचरैंकियोविपरी
तिपुरछांड़िअभिमानसुखठानजीजै ॥ कहतमंदोद
रीपीवसुनुप्रीतिसेजनकजारामकीभेंटकीजै ॥ १२ ॥
नव्योनिशिराजमनरव्योगौरीशकोकव्योतनचाहि
येरामशस्त्रै ॥ सव्योजबसेनमैंघव्योंजूमेघमेंलव्योजू
लेतललकारसबस्त्रैं ॥ चापशरकानमैंधऱ्योतनधर
णिमैंबस्योमनचरणमैंशरणकाजै ॥ जनकजाहीयमैं
रामकोबासरघुनाथकेहीयब्रह्मांडराजै ॥ १३ ॥ अखि
लब्रह्मांडकोभारलैसमरमैंरामकेसंगदशग्रीवजूझै ॥
बीरहनुमानसंदेहकरमोहसेनाथकेकानमैंबातबूझै ॥
कीजियेसहायसबसृष्टिकीकृपानिधिदुष्टकेबाणहिय

टाल्लमारौ ॥ शत्रुकोबद्धकरकार्यकोसिद्धकरभरतके सीसपरहस्तधारौ॥१४॥वीरकीबिनयसुनिबीररघुबीरशरचंडकोदंडधुनिभूमिजागी ॥ ईशकीशक्तिघननादकेहाथसेअनुजकेआयअनमोघलागी ॥ सिंधुकोकूदकरपलकमैंपाड़धरप्राणसंजीवनीबीरआणी। लखणकोप्राणदेशमक्रोनामलेसेनजीवंतकरसिंहबाणी ॥ १५ ॥ रामकोअनुजलैधनुषकोश्रवणलगितानिशरचंडरिपुवक्षभेद्यो॥रामशरचंडलैखैंचकोदंडकेमेरुघटकर्णकोसीसछेद्यो॥समरमेंरुंडमुंडावलीभटनकीसुभटनरवानराशस्त्रमारैं ॥ चढ़ेनभयानसुरसिद्धगंधर्वसुनिसुमनकीवृष्टिआसीसधारैं ॥ १६ ॥होतहुंकारधुनियुद्धमैंक्रुद्धसेरामशरसाधदशग्रीवमाऱ्यो ॥ बीसभुजशीसदश अंगप्रतिअंगसबकाटिलंकेशकोभूमिडाऱ्यो ॥ कऱ्योनिहशंकलंकेशहरिदासकोचमरसिरछत्रगढ़लंकदीन्हों॥ रामकीकृपातेतेलसिंदूरलेबीरकोरूपहनुमंतकीन्हों ॥ १७ ॥ पुष्पकेयान

चढ़जनकजावामभुजदाहिनीबाँहपरअनुजराजै ॥
भालुकपिकीशसुग्रीवकोआदिलेअंजनीपूतहनुमं
तगाजै॥ भरतकोसंगलेअवधकोदरशदेराजकोतिल
कसुनिराजकीन्हो ॥ रामकीराजकोतिलकरघुनंद
कोदासकोतिलकहनुमंतलीन्हो ॥ १८॥ रामके
नामसेसिंधुसिलातिरीरामकोदासआकाशलाँघ्यो॥
रामकेदासकेरामहिरदेबसैंरामकेदासनिजनाममां
ग्यो ॥ रामकेनामसेपापकोनाशहैदासकोनामसं
तापछारी॥ रामकेदासकीराममहिमाकरैंरामसेराम
कोदासभारी ॥ १९ ॥ रामकोचरितशतकोटिवि
स्तारहैप्रीतिसोंनित्यऋषिराजगावैं ॥ रामकेचरित
कोश्रवणकेकाजश्रीरामकेदूतहनुमंतआवैं ॥ वीरम
हबीरहनुमानकीहांकसेमरेमरघट्टकेजीवजागैं ॥ डं
किनीसंकनीबीरवेतालभय मारुतीनामसेभूतभागैं
॥ २० ॥ सालइकबीसउगणीससतऊपरैजेठबदिद
शमशुभकाव्यगावै ॥ प्रीतिसोंप्रगटश्रीबरदखेड़ा

पतीरीतिसोंपटनधनधान्यपावै ॥ गौड़श्रीधरकहै सलेमावादमैंसुबसशुभनग्रकेसर्बलोगा ॥ दुष्टको चोटदेपुष्टसोंरोटलेभावमेंबरतियेभावयोगा ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥ श्रीधरबिजयकपीशकी, पढ़ैसुनैमनलाय ॥ महाबीरखेड़ापती, पूरैमनकीचाय ॥ २२ ॥

॥ अथ इक्कीस कबित्तोंकी अनुक्रमणिका ॥

॥ इति श्रीधरकृतहनुमानबिजय संपूर्ण ॥

॥ पठन करनेका फल ॥

श्रीधरकह्योजोहनुमानबिजयताकोपाठकरैयामंत्र कोमयूरकीपक्षसौंझाड़देवैतोदृष्टिमुष्टिभूतप्रेतादिक

दूरहोय ॥ अन्नधनप्राप्तिहोय ॥ ग्रहपीड़ादूरिहोय ॥ राजमान्यहोय ॥ इतिफलं ॥ ॥ ॥

॥ अथ जानकीमंगलप्रारंभः ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥प्रथमसुमिरिगुरुदेवगणेशमनाइये ॥ शारदकोशिरनाइरामगुणगाइये ॥ प्रभुगुणसिंधुसमानकौनबरणनकरै ॥ जैसीजाकीबुद्धितैसिहृदयेधरै ॥ तबबोलेऋषिराज अवधपुरजाइये ॥ रामभयेअवतारयज्ञहितलाइये ॥

करिसरजूअस्नाननृपतिगृहआइये ॥ बहुबिधिपू
जाकरिसिंहासनबैठाइयै ॥ छंद ॥ ॥ कहततपध
नअवधपतिदोउकुँवरहमकोदीजियै ॥ यज्ञपूरणहो
इहमरोविप्रकोयशलीजिये ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सु
निऋषिकेवचननृपशोचकीनोघनी ॥ कीजैकौन
उपायबातगाढ़ीबनी ॥ तबबोलेगुरुवसिष्ठनृपति
सोचनहिंकीजिये ॥ एपूरणअवतारयज्ञहितदीजि
ये ॥ छंद ॥ प्रेमकोउपकारकरनृपसुतनदोउ
गोदीलिये ॥ महामुनिकीभेटलेश्रीरामअरुलक्ष्म
णदिये ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रतनजड़ितपटबाँधधनु
षलियोहाथसों ॥ कीन्होबहुतप्रणामपिताअरुमा
तसौं ॥ नयनरहेजलपूरिपिताअरुमातके ॥ इनको
नीकेराखियेपुत्रजानिअनाथके ॥ छंद ॥ आगेआ
गेविश्वामित्रमहामुनिपीछेलक्ष्मणरामजी ॥ सजल
तनघनश्यामसुंदरसकलपूरणकामजी ॥ चौपाई ॥
राजतवदनबिशालबाँकेदृगसोहना ॥ नाशापरम

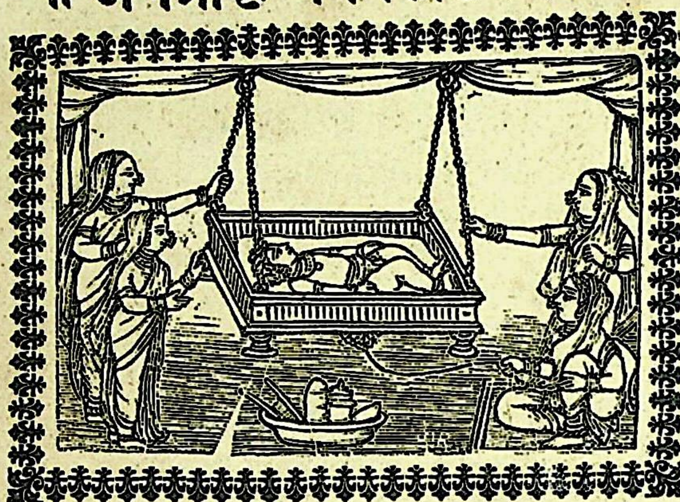
सुढारमदनमनमोहना ॥ यहछबिबिबिधप्रकासराम गुणगायहैं ॥ गौरश्यामदोउभ्रातमुनिनमनभायहैं ॥ ॥ छंद ॥ उठीराक्षसीघोरमहाप्रभुबाणएकैसोंह नी ॥ बिप्रकोयज्ञकियोपूरणकृपाकरीकोशलधनी ॥ चौपाई ॥ मारौगर्बगुमानध्यानहरिसोंधरौ ॥ चौंकिपरीजियमाझशमसरसोंडरौ ॥ ब्रह्मास्त्रकर धारिमारिचकोमारीयो ॥ सोयोजनतनपर्‍योनसु रतिबिसारियो ॥ ॥ छंद ॥ ॥ मारिचटारिसुबाहु मारिअरुमुनिनकेमंगलभये ॥ सुरबिमाननिपुष्पब रषैंहर्षभरिजैजैकिये ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रच्योहैस्वयं बरजनकरामचलिदेखिये ॥ आयेहैंबहुभूपसबैमि लिपेखियै ॥ भलीकहीऋषिरायजनकपुरजाइये ॥ शिवधनुकठिनकठोरदरशदिखवाइये ॥ छंद ॥ ॥ चरणकीरजलागिअहिल्यातुरतहींछबिसोंभरी ॥ करजोरिअंजलिभईठाढ़ीरामकीअस्तुतिकरी ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चरणपरसकुलतारितुरतपतिपुरग

ई ॥ ऐसोकौतुकदेखिकेवटनौकालई ॥ टेरतहैंरघु
नाथतीरनौकाल्याउरे ॥ बेगउतारौज्जुपारडरौंजिन
बावरे ॥ ॥ छंद ॥ ॥ करजोरिकेवटयोंकहैप्रभुवाह
नपैंपारउतारिहौं ॥ शिलाज्यौंउडिजायनौकाकुटुंब
किसबिधिपालिहौं ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जोनौकाउ
ड़िजायधूरिलगिपाँयकी ॥ तातेदूनीदेहुँगढ़ाईनाव
की ॥ केवटचरणप्रक्षालश्रीरामबैठाइयो ॥ क्षणम
हँनौकाखेयकेपारलगाइयो ॥ ॥ छंद ॥ ॥ करुणा
सिंधुदयालरघुबरताहिदासअपनोकियो ॥ योगे
श्वरनकोहोतदुर्लभसोईपदकेवटलियो ॥ चौपाई ॥
नौकाउतरेपारश्रीरामजनकपुरकोचले ॥ तोरैंगेशि
वधनुषसगुनभेंटेभले ॥ बनउपबनबहुबागबिबिधबै
ठकबनी ॥ कंचनहूंमैंजडितहेमरचनाबनी ॥ छंद ॥
ठौरठौरबहुभूपउपमाजनकपुरअतिसोहना ॥ बसेज
नकपुरलोकसुंदरमदनकेमनमोहना ॥ ॥ चौपाई ॥
जनकसभाकेमध्यभूपलखिछकिरहे ॥ ठगकेलाडू

खायमनोसवथकिरहे ॥ पूंछतहैंमिथिलेशकुँवरऋ
षिकौनके ॥ पूरणतिनकेभागदोउसुतजौनके ॥ म
हासुभटरणधीरदोऊगुणलायके ॥ रघुबंशीमहाराज
श्रीदशरथरायके ॥ नरनारीयोंकहैंयेदोऊबयकिशो
रहैं ॥ शिवधनुकठिनकठोरकैसेकरितोरिहैं ॥ छंद ॥
येछबिश्यामऌगौरहरषिनिरखिकरलीजियै ॥ वारे
कामकोटिस्वरूपसुंदरनयनभरिभरिपीजियै ॥ अष्ट
सौमलकष्टकरिकैधनुषसभामधिआनियो ॥ लगेहैंब
ड़भूपयोधाधनुषकाहुनतानियो ॥ चौपाई ॥ ॥
कहतसियासुनुतातधनुषपणजिनकरौ ॥ नातरुतजि
हौंप्राणकिजेइंबरमैंबरौ ॥ करुणासागररामजानकी
जानिये॥पीतांबरकटिबांधिधनुषलैतानिये ॥ छंद॥
जयजयकारभईतिहुँलोकभूपसबैमुरझाइये ॥ श्री
रामचंद्रमुखनिरखिसियनेसुमनमालपहिराइये ॥
चौपाई ॥ ॥ सोहतसीतारामकंचनमंडपतरे ॥ शि
रसोनेकोमुकुटमंजुमुक्तागरे ॥ राजतअंगकपोलकि

मुक्तामोलके॥सुंदरलोचनलोलकमलजनुभोरके॥
सुरँगचूनरीनिकटपीतपटछारही ॥ मनोअरुणघन
श्यामचपलताव्हैरही ॥ यहभूषणप्रतिबिंबरामछ
बिउरधरै ॥ मनोयमुनजलमध्यदीसदीपकबरै ॥
रामभुजाकेनिकटसियाभुजयोंलसै ॥ मरकतमणि
केखंभमनोकंचनकसै ॥ रामभयेतनगौंरसियाभइ
सावरी ॥ सादरसोबुधिवंतबधूभइबावरी ॥ राम
भयेघनश्यामसियाभइदामिनी ॥ मुनिभयेचंदच
कोरचकितभइभामिनी ॥ पुष्पनबरषतमेघमुनीस
बथरहैं ॥ होतजनकपुरव्याहरामभाँवरफिरैं ॥ रा
मसियाकोध्यानसदाशंकरधरैं ॥ ब्रह्मारूपनिहारइं
द्रपूजाकरैं ॥ सुरनरमुनिआनंदसुमनवर्षाकरैं ॥ तु
लसीसीतारामसहितउरआनिये ॥ रामभजनबिनु
जन्मसुमिथ्याजानिये॥इतिश्रीजानकीमंगलंसंपूर्ण

॥ अथश्रीकृष्णमंगललिख्यते ॥



॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ जनमेश्रीकृष्णमुरारीभक्तहित कारने ॥ मथुरालियअवतारगोकुलझूलैंपालने ॥ तिथिआठैंबुधवारभाद्रबदिकीकरी ॥ रोहिणीनक्षत्र आधीरातकोजन्मेहरी ॥ धन्यधन्यबसुदेवदेवकीज हांप्रभुहैंअवतरे ॥ धन्यधन्यसुरनरमुनिसबजयजय करे ॥ दुंदुभिबजतआकाशसुमनबरषाकरै ॥ ब्रजवा सीगोरसभरिभरिकरिलावहीं ॥ दधिकांदौबाबानंद

सुकीचमचावहीं ॥ बाजततालमृदंगबीणअरुबाँसुरी ॥ निरखतगोपीग्वालचलौचितचावरी ॥ यशुमतिचीरपहिरायनौरंगभईग्वालिनी ॥ सुंदरबदननिहारिचकितभईभामिनी ॥ श्रीबलभद्रजीकेबीरअसुरदलखंडना ॥ भक्तबछलमहाराजसुयदुकुलमंडना ॥ शंकरधरतहैंध्यानसुगोदखिलावहीं ॥ सोमुखचूमतिमाइसुपलनझुलावहीं ॥ श्रीनंददाससनेहचरणचितल्यावहीं ॥ हरिगुणमंगलगायगोविंदगुणगावहीं ॥ इतिश्रीकृष्णमंगलसंपूर्ण ॥

॥ परनारीनिंदा ॥

॥ दोहा ॥ परनारीपैनीछुरी, कोउजनिलावोअंग॥
दशौशीशरावणकटे, परनारीकेसंग ॥ १ ॥

॥ अथ बन्धुवर्णन॥

दोहा—आतुरतादुखहूपरे, शत्रुसंकटौपाय ॥
राजद्वारमसानमें, साथरहै सोभाय ॥ १ ॥

९

॥ अथराधामंगललिख्यते ॥



॥ चौपाई ॥ वर्षानेवृषभानुदुलारी ॥ चंद्रवदनमृगलोचनिप्यारी ॥ चंद्रबदनगुणरूपरसाला॥खेलनगईजहाँनँदलाला ॥ निरखिरूपनँदजीकीरानी ॥ गोदउठायभवनमेंआनी ॥ ॥ छंद ॥ गोदउठाय भवनमैंआनीआभूषणपहिराइयो ॥ माँगमुक्तापीतपटउरहारसुमनसुहाइयो ॥ बिंदिकाकाजलकी दईकुलदेवमानमनाइये ॥ सूरकेप्रभुसाजनसखिशिख

प्यारीघरापठाइये ॥१॥ ॥ चौपाई ॥ आवोमेरीप्रा
णजुप्यारी ॥ भोरहिखेलनकहँजुसिधारी ॥ कुमकुम
भालतिलककिनकीन्हो ॥ किनमृगमदकोबिंदादी
न्हो ॥ ॥ छंद ॥ ॥ बिंदामृगमददियोमस्तक
निरखशशिसंशयपऱ्यो ॥ एकशरदनिशिकीकला
पूरणमानमनगंधर्वहऱ्यो ॥ हँसिहेरिमुखसोंकहत
जननीअलकबेणीकैंगुही ॥ सुरकेप्रभुमोहव्यापैसाँ
चिकहमोहेउही ॥ २ ॥ चौपाई ॥ नँदजीकेघरनी
यकसोहै ॥ मेरेबदनतनफिरिफिरिजोहै ॥ खेलतडो
लतनिकटबिठारी ॥ मनमैंआनँदकियोहैभारी ॥
॥ छंद ॥ आनंदमनमैंकियोभारीनिरखिमुखबलि
बलिगई ॥ बाबाजूकोनामलेलेतोहिँ हँसिगारी
दई ॥ पाटीतुपारीडारभूषणगोदलेमेवाभरी ॥ सूर
केप्रभुहरखहियमैंबिधिहिंसोंबिनतीकरी ॥ ३ ॥
चौपाई ॥ सुनतबातकीरतिमुसकानी ॥ मैंनंदरा
निकेजियकीजानी ॥ मेरीसुतारूपगुणरासी ॥ का
न्हउदासीबनकोबासी ॥ छंद ॥ कान्हउदासीबन

कोबासीरंगढंगायहक्यौंबणै ॥ एकरत्नअमोलला
लमणिकाचकंचननहिंजुडै ॥ ललिताविशाखासौं
कहैललीआजरातकहाँरही ॥ सूरकेप्रभुभवन
बाहिरजानमतिदीजोसही ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ दि
नदशपाँचहटकजोकीन्ही॥ कुँवरिकोकृष्णदिखारी
दीन्ही ॥ मुरझिपरीजबतननसँभाऱ्यो ॥ लाड़िलि
डस्योभुजंगमकाऱ्यो ॥ छंद ॥ लाड़िलिडस्योभुजं
गकारागारडूहारेसबै ॥ नँदनँदनकेमंत्रबिनयहबि
षमबाधानहिंदबै॥पठयसखीगोपालकाजेल्यावआ
नँदकंदको ॥ सूरकेप्रभुलहरउतरैमिलेब्रजकेचंदको
॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ करमनुहारकृष्णजबलाये॥
देखतहीविषदूरबहाये ॥उठबैठीमनकियेहुलासा॥
कीरतिचलिअपनेपतिपासा ॥ छंद ॥ कीरतिच
लिअपनेपतिपासप्रीतरीतिबधारिये ॥ ब्याहकाय
कमंत्रिकीजोसखियमंगलगाइये ॥ बृंदाबनमेंरच्यो
स्वयंबरकुंजमंडपठाइये ॥ सूरकेप्रभुश्यामघनश्रीरा
धिकापदपाइये ॥ ६ ॥ इतिश्रीराधामंगलस० ॥

॥ अथभरतजीकीबारामासी ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ चैत्रपीछिलेपाखरामनौमीको जन्मलियो ॥ अवधपुरीसुखधामसखिनमिलिमंगलचारकियो ॥ खबरजबदशरथनेपाई ॥ दियेदानगजबाजिगऊदिनथोरेकीष्याई ॥ सभासबपछिछतव्हेआई ॥ कर्मलेखनहिँमिटैकरौकोइलाखनचतुराई ॥ १ ॥ लागतहीबैशाखकेकईबावरिकिरिडारी॥धृकजीवनधिक्कारभईजबतुमसीमहतारी ॥

दुखतैनेनगरकोदीनो ॥ तीनलोककोनाथरामबन
बासीकीनो ॥ कूरमतिकैसीबनिआई ॥ कर्मलेखन
हिंमिटै० ॥ २ ॥ जेठपंचमिलिकहैंभरतगादीबैठा
रौ ॥ भरतधरतकानपरहाथनाथमोरिगरदनक्यौंमा
रौ ॥ सरैनहिंइनबातनकाजा ॥ तीनलोककेनाथ
रामवैअयोध्याकेराजा॥बातयहसबकेमनभाई ॥ क
र्मलेखनहिंमिटै ०॥ ३॥आषाढ़आशाराममिलनकी
मनमेंलागिरही॥रामकौनबनहवैंबताओभारतबात
कही ॥नगरकेनरअरुसबनारी ॥ रथडोलागजबाजि
भीरगइभरतसंगत्यारी ॥ नदीजैसेसागरकोधाई ॥ क
र्मलेखनहिँ मिटै० ॥४॥ सावनभृंगबेरपुरपहुँचेभी
रभईभारी ॥ भीलनिकटकजोरिदललीनेलड़नेकी
त्यारी ॥ भरतसेपूंछिकैरारिकरौ ॥ रामलषणसिय
काजतीरगंगाकेजूझिमरौ ॥ खबरयहभारतनेपा
ई ॥ कर्मलेखनहिँ मिटै ॥ ५ ॥ भादौंभरतभील
सेभेटेभक्तजानमनमें ॥ कंदमूलफलतोरभीलसेभेंट

करीबनमें ॥ भीलजबअगुआकरिलीनो ॥ भारद्वाजप्रयागआनिकैंदर्शनदीनो ॥ प्रयागकीदुनियां सबधाई ॥ कर्मलेखनहिंमिटैं० ॥ ६ ॥ कुवारकरिमहिमानीमुनिनेपूँछीकुशलता ॥ दोऊकरजोरिदेतिपरिक्रमाकौशल्यामाता ॥ आजमेरोजीवनसफलभयो ॥ इतनीबातसुनीमुनिनेजबआशिरबाददियो ॥ भरतकीमातासमुझाई ॥ कर्मलेख० ॥ ७ ॥ कार्तिककूचप्रयागतेकीनोचित्रकूटआये ॥ चीरबलकलशिरजटाजूटसियरामलषणपाये ॥ भरतजबचरणनजायपरे ॥ भरतउठायरामउरलायेनयननीरभरे ॥ भरततुमभाईसुखदाई ॥ कर्मलेख० ॥ ८ ॥ अगहनबारंबारभरतकोरघुवरसमुझावैं ॥ भरतउलटिघरजाउराजतुमकरोअयोध्यामें ॥ लोगसुखजबहींपावैंगे ॥ चौदहबरषबीतिजैहैंजबहमहूंआवैंगे ॥ भरतकोऐसेसमुझाई ॥ कर्मलेख० ॥ ९ ॥ पूसमाससियरामलषणकेज्जुरिगइभीरघनी ॥ जनकवसिष्ठगुरूसमुझावैंकहैंअपनीअपनी ॥ बिनतीबहुत

भांतिकीनी ॥ रामआपश्रीचरणखड़ाऊंभरतहिंदैदी नी ॥ उलटघरजाउमेरेभाई ॥ कर्मलेख० ॥ १० ॥ माहमहीनामानिरामनेसुखपावामनमें ॥ जनकज नकपुरकोपहुँचायोभरतआयोध्यामें ॥ खड़ाऊंगादी धरदीनी ॥ रामचंद्रतेकठिनतपस्याभरतहुनेकीनी ॥ बड़ाईयाहीमैंपाई ॥ कर्म०॥ ११ ॥फाल्गुणफेरिह रीसीताजबरावणबशकीनो ॥ रावणमारिकैरामचं द्रनेराज्यबिभीषणकोदीनो ॥ जीतिकेअवधपुरी आये ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिकदर्शनको धाये ॥ राजारामचंद्रकोगादीठहराई ॥ कर्मलेखन हिंमिटै० ॥ १२ ॥ नवैशालल्लौंदकीभादौंअगहनग हनपऱ्यो ॥ बांसबरेलीकेलालदासनेरामनामको उच्चऱ्यो ॥ भरतकीयहीहैबारहमासी ॥ गावैसुनैपर मपदपावैकटैगीयमकीफांसी ॥ बेदमिलिऐसेहीगा ई॥कर्मलेखनहिंमिटैकरैकोइलाखनचतुराई॥१३ ॥

॥ इतिश्रीभरतजीकीबारामासीसंपूर्णा ॥

॥ अथरामचंद्रजीकीबारामासी ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ चैत्रअयोध्याजन्मेरीराम ॥ चंदनसोंलिपवायेरीधाम ॥ गजमोतियनकेचौक पुराय ॥ सोनेकेकलशदियेभरवाय ॥ घरेंव्रटमंदिर ॥ पठयेतुमनारिबैरनबनबालकमोरे ॥ १ ॥

वैशाखमासऋतुग्रीखमलाग॥चलतपवनमनुबरख तआग ॥ जैसेजलबिनतलफतमीन ॥ सोगतिहमरीकेकईनेकीन ॥ दियेदुखदारुन॥ पठये० ॥२॥

ज्येष्ठमासलुकलागतअंग ॥ रामलषणअरुसीतासं

ग ॥ रामचंद्रपदकमलसमान ॥ परचतधरतीऔ
असमान ॥ चलैंमगकैसे ॥ पठये० ॥ ३ ॥ आषा
ढ़मासघनगरजतघोर ॥ रटतपपीहाकुहुकतमोर ॥
ठाढ़ीकौशल्याअवधपुरधाम ॥ भीजतहोंगेसियल
क्ष्मणराम ॥ खड़ेतरुवरतरे ॥ पठयेतुमनारि० ॥४॥
सावनमेंसरसानेरीनीर ॥ कैसेधरैंकौशल्याधीर ॥
छोटेछोटेबुंदनबरसतनीर ॥ भीजतहोंगेश्रीरघुबीर ॥
झमकझड़लागी ॥ पठयेतुमनारि० ॥ ५ ॥ भादौं
मेंबरसेनीरअपार ॥ घरअपनेसबहीसंसार ॥ गुंज
तगुंजिलफिरतभुजंग ॥ रामलषणअरुसीतासंग ॥
रैनिअँधियारी ॥ पठयेतुमनारि० ॥ ६ ॥ लागा
रीसखीमासकुवार ॥ धरमकरतसबहीसंसार ॥ जो
घरहोतेसियालक्ष्मणराम ॥ बिप्रजिमावतिमैंदेती
दान ॥ थालभरमोती ॥ पठये० ॥ ७ ॥ लागारीस
खिकार्तिकमास ॥ उठतकलेजामेंदुखकीफाँस ॥ घ
रघरदीपसँजोवतनारी ॥ मेरीअयोध्यापड़ीअँधि
यारी ॥ करीकेकईने ॥ पठयेतुमना० ॥ ८ ॥ अ

गहनमैंसखीकुँवरकाकरतीसिंगार ॥ कपड़ासिला
तीमैंसोनेकेतार ॥ पटपीतांबरकुलयसमान ॥ शि
रमेंचीरजरदसीपान ॥ गलेबैजयंतीमाला ॥ पठये
तुम० ॥९॥ लागारीसखीपूसजोमास ॥रैनभईजै
सीखांड़ेकीधार ॥ कुशआसनकैसेपौढ़ेंगेराम ॥ कै
सेकरैंबनमेंविश्राम ॥ भोजनमंजरीके ॥ पठयेतु०
॥ १० ॥ माहमासऋतुफूलेबसंत ॥ कैसेजियौंरी
बिनाभगवंत ॥ मेरीअयोध्याकेसिरमोर ॥ ठाढ़े
भरतजीढारतचौंर ॥ बसंतकरोरी ॥ पठयेतुम० ॥
॥ ११ ॥ फागुनरंगरच्योसबकोई ॥ चोवाचंदनअ
तरसुगंध ॥ ठाढ़ेभरतजीढोरेंअबीर ॥ कौनपैमिडकैं
बिनारघुबीर ॥ मैंकैसीकरोंरी ॥ पठयेतुम० ॥१२॥
जोगावैयहबारहमास ॥ सोपावैवैकुंठहिंवास ॥ क
हतभवानीअवधपुरधाम ॥ बनसेआयेसियलक्ष्म
णराम ॥ मिलेकेकईसों ॥ पठयेतुमनारिबैरनबन
बालकदोऊ० ॥ १३ ॥ इतिश्रीभवानीदासकृतश्री
रामचंद्रजीकीबारामासीसंपूर्णा ॥ ॥ ॥

॥ अथ पंडितबेश्यासंबाद ॥

कोईएकपंडितहोविद्यागुणमण्डितहो डस्यौकाली नागगयोगणिकानिबासमै ॥ कीनोतहँमैथुननिशंक व्हैबिषैमेरतयहिविधिरैनिबीतीकामकेहुलाशमैं ॥ केलिकैभयोहैजबभोरसुखमोरिबोलीएहोप्राणप्यारे मिलोमोहिंअबकासमै ॥ जोएबेदऔपुराणस्मृति सबसाँचेहोतोमेरीतेरीभेटहोयकुंभीपाकबासमैं ॥१

॥ अथ बाँसुरीलीला ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ बांसुरीदीजियेहोब्रजनार ॥

॥ १ ॥ कृष्णबचन ॥ कालिसखीयहठौरबाँसुरीभू
लिबिसारी ॥ लेजुगईतुमधामढाँकहमसुनीतुम्हारी
॥ दोहा ॥ नाहिंनतुम्हरेकामकी, बंसीहमरीदेउ ॥
हमआतुरह्वैमाँगहीं, नाहिंजुनाहिंकरेउ ॥ २ ॥ सखी
बचन ॥ लँगरकन्हैयाढीठतोंहिँअबकौनपतीजै ॥
डारिदियोकहिँऔरदोषहमहींकोदीजै ॥ दोहा ॥ तुम
सेलंगरकेतके, माँगतहमसोंछाछ ॥ चतुराईप्रभुछाँड़ि
कै, कहानचाओनाच ॥ ३ ॥ कैसीबंसीहोतनाहिंहमनै
ननदेखी ॥ बापतुम्हारेसाधुलालतुमबड़ेबिबेकी ॥ इत
उतढूंढ़ततुमफिरतयाब्रजभूलिगई ॥ तेरीसौंबाबा
कीसोंहममुरलीनाहिंलई ॥ ४ ॥ कृष्णबचन ॥ बंसीदेहु
गँवारिकाहेकोरारिबढ़ाओ ॥ मनमेंसमुझिबिचारिक
हेकोलोगहँसाओ ॥ दोहा ॥ हँसैंलोगचर्चाकरैं, म
नमैंसमुझिबिचारि ॥ बंसीहमरीप्रेमकी, काहेनदेत
गँवारि ॥ ५ ॥ सखीबचन ॥ हमकोकहतगँवारिआ
पनीकरतबड़ाई ॥ मारोतमाचातीनतबैबाबाकीजाई ॥

दो०॥ लेलकड़ीमुखपरधरी,बंसीबाकोनांव॥जाघर तुमसेपुत्रहैं,उजरतवाकागांव॥६॥ कृष्णबचन॥बसे किऊजरहोयनहींपरबाहतिहारी॥ तुमसीहैंलखचा रिनंदघरगोबरहरी ॥ दोहा ॥ लाखरहैंदरबारखड़ी, लखआवैंलखजाँय ॥लखनितउठदर्शनकरैं, सुंदरस नपछिताँय॥७॥सखीकाबंसीदेना ॥ ग्वालिनचतुर सुजानबाँसुरीआपुहिदीन्हीं ॥ मोहनचतुरसुजान साँवरेहँसकैलीन्हीं ॥दो०॥ लैबंसीग्वालिनिमिली, योनन्दनन्दनदुराय ॥ सूरदासहारीग्वालिनी, जीते यदुपतिराय ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णकामुरलीबजावना ॥ लैबंसीयदुराय जायजमुनातटकीन्हीं ॥ सुरतेंतीस क्कोटिउहांसरबनजोलीन्हीं ॥ दोहा ॥ भक्तवत्सल सुखदायक,राखौसबकोमान ॥ तिनमैंतुमप्रभुआ पुहौ,गुणगावतसुरजान ॥ ९ ॥ ॥ ॥

इति श्रीसूरदासकृतबाँछुरीलीलासमाप्त ॥

॥ अथश्रीधरकृतकुंडलिया ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ मूसोबिल्लीसोंकहै ॥ सुनमंजा
रीबात ॥ डरतीरहियेबापड़ी ॥ नाहिंतोमारूंलात॥
नाहिंतोमारूंलात ॥ हाथपगहोसीलूली ॥ वहतेरादि
नगया ॥ भरोसेभटकेभूली ॥ कहश्रीधरकविरायहु
वोइकडंक्यो घूंसो ॥ समयबड़ाबलवानकहैबिल्लीसों
मूसो ॥१॥ श्यालीबोलीसिंहसोंसुनौहोबनकेराव ॥
सिंहभोगस्यालाभखैकीजेकौनउपाव॥ कीजेकौनउ
पावतेजसतपुरुषानाहीं ॥ पूजनलगेअपूजपूजकहुँदे
खेनाहीं ॥ कहश्रीधरकबिराय कामकरचाल्याल्या
ली॥समयबड़ाबलवानसिंहसोंबोलीश्याली ॥ २ ॥
जोरूखाबिंदसोंकहै ॥ धोकासोंधमकाय ॥ गुपचु
पघरमेंघुसरहो ॥ घीसोंरोटीखाय ॥ घीसोंरोटीखा
यरहौखुसहमरेपीछे ॥मैंपौढूंगीसेज ॥ परोतुमपौढ़ो
नीचे॥कहश्रीधरकविरायजनैखुपसूरतछोरू ॥ सम
यबड़ाबलवान लड़ैखाविंदसोंजोरू॥ ३ ॥दोहा ॥
श्रीधरसाँचीबातसों, चीकोइराखतहेत ॥ समयपाइ

कैनीपजै, ज्योंकिसानकोखेत ॥ ५ ॥ कुंडलिया ॥
मानैंलोचनयुगसबै ॥ जानतहैनरनार ॥ त्रैलोचन
विद्याकही ॥ ताकोकरौबिचार ॥ ताकोकरौबिचार
बालपणविद्याशीखो ॥ मानुषदेहअमोल ॥ बोल
विद्याकोनीको ॥ श्रीधरकबिताकहैसभामैंआदर
आनै ॥ जाकेविद्याकंठताहिकोराजामानै ॥ १ ॥
राजासीखैनीतिकोपरजाकेहितकाज ॥ मंत्रीसीखै
मित्रतामानैमोटाराज ॥ मानैमोटाराजकाजवि
द्यासोंपावै ॥ हुंडीलिखैअपार साहपदविद्यालावै
॥ श्रीकविताकहै संपदामिलिहैताजा ॥ वि
द्यापढ़ोसुजानमानसन्मानैराजा ॥ २ ॥ जानैपौ
रुषआपकोनहींबापकोकाम ॥ बलिबंधनकेकारणै
वामनपायोनाम ॥ वामनपायोनामसरमनिक्षत्री
कीनी ॥ रघुवररावणमार भक्तकोलंकादीनी ॥ श्री
धरकविताकहैगुणीसँगआदरआनै ॥ करैकृष्णको
यादपिताकोकोइनजानै ॥ ३ ॥ पांचोंकथापढ़ाइये

पंचाख्यानविचार ॥ राजनीतिजाकौकहीहितउपदेशअपार ॥ हितउपदेशअपार बालपनकंठाकीनी ॥ सुखपावैसंतानसभामैंबातनबीनी ॥ श्रीधरकविता कहैपढ़ैसोईनरसाँचौ ॥ चतुरकैसबकाजपढ़ैजोनीतीपाँचौ ॥ ४ ॥ जामेंमित्रमिलापहैमित्रलाभसोजान ॥ तामैंछूटैमित्रतासुहृदभेदसोमान ॥ सुहृदभेदसोमान तीसरोबिग्रहजानौं ॥ युद्धकरावनरीतपरस्परश्रद्धामानौं ॥ श्रीधरकविताकहैसंधिचौथीमिलिजानै ॥ पाँचौलब्धप्रणाशमिलैफिरपाछीभानै ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीधरशोभाजगतकी, बिद्यानीतिबिशेष ॥ स्वारथपरमारथसबै, बिद्याबिनयबिबेक ॥६॥ इतिश्रीधरकृतकुंडलियासंपूर्ण ॥

॥ श्रीगंगामहात्म्य-सवैया ॥

जेतटपूजनकोबिसतारैंपखारैंजेअंगनकीमलिनाई॥
जेतुवजीवनलेतहैंजीवनदेतहैंजेकरिआपढिठाई ॥
दासनपापीसुरापीतपीअरुजापीहितूअहितूबिलगा
ईगंगतिहारीतरंगनसोंसबपावैंपुरंदरकीप्रमताई॥१॥

॥ अथ त्याज्यदेशवर्णन ॥

॥दो०॥ कालउपद्रवसंगशठ, अन्यराजभय होय॥
तेहिथलतेजोभागिहै, जीवतबचिहैसोय ॥ १ ॥

॥ अथ बेनीमाधोकीबारामासी ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ कार्तिककिलोलकरैंसबस खियाँराधाबिचारकरैमनमेंरे ॥ माधोपियाकोआ नमिलावौनाहींतौप्राणतजौंछिनमेंरे ॥ हमकोछाँ

ड़िचेलेबेनीमाधोराधाशोचकरैमनमेंरे ॥ १ ॥ अग
हनगेंदबनायसाँवरेजायखेलेतटयमुनाकेरे ॥ खेल
तगेंदगिरोयमुनामेंकालीनागनाथ्योछिनमेंरे ॥ ह
मकोछाँ० ॥ २ ॥ पूसमासहमसोंछलकीनोआपच
लेसइयाँमधुवनकोंरे ॥ तुमनंदलालजनमकेकपटी
हमसोंकपटकियोमनमेंरे ॥ ३ ॥ माहमासपियाजा
ड़ोलगतहैनींदनआवैमेरेनैननमेंरे ॥ हमकोबैराग
नकीनीमाधोजीघरघरअलखजगावनकोंरे ॥४॥ फा
गुनरंगबनायसाँवरेजायखेलेसंगकुबजाकेरे ॥ फेंट
गुलालहाथपिचकारीमारतहैंतकघूंघटमेंरे॥५॥ चैत
मासफूलेचहुँटेसूऊधोआयेसमुझावनकोरे॥सुमरन
हाथगलेमृगछालाअंगभभूतमलौतनमेंरे ॥ हम०
॥६॥ मासबैशाखबैसमेरीबारीआपनआयेसइयाँम
धुबनसेरे॥ ऋतुग्रीषमअरुबिरहसतावैबिरहकीहूक
लगीतनमेंरे ॥ ७ ॥ जेठमेंज्वालाफूँकैतनमेंरेऊधोक
हियोघरआवनकोरे ॥ एकतोअकेलीदूजोबिरहस

तावतआयगईऋतुबरषाकीरे ॥ ८ ॥ लगोअषाढ घुमड़आयेबदराबिजलीचमकेमेरेआँगनमेंरे ॥ चमकचमकचहुँओरनिहारौंजैसेमीनफिरैजलमेंरे ॥ ॥ ९ ॥ सावनस्वामीहमसोंछलकीनोंप्रीतकरीजाय कुबिजासेरे ॥ अहोनंदलालप्राणकैसेराखूंनाहिंआ येश्यामवृंदावनमेंरे ॥ १० ॥ भादौंभवननींदनहिं आवैमोरवाबोलैवाहीमधुवनमेंरे ॥ कोयलहोयमैंब नबनढूंढूंसूखेतालवृंदावनकेरे ॥ ११ ॥ क्वारमास निर्मलभयेचंदागोरीसोवैअपनेआँगनमेंरे ॥ सूरदास तबआनमिलेहरिसुखीभईराधामनमेंरे ॥ हमकोंछाँ ड़िचलेबेनीमाधो० १२ इ० बेनीमाधोकीबारहसीसं०

॥ अथ रसिक दोहा ॥

तनिककंड़ीउरपरी, नैनभयेबेचैन ॥
वेबपुराकैसेजियैं, जिननैननमेंनेन ॥ १ ॥

॥ अथ सुमित्रलक्षण ॥

दो०॥पापनिवारतहितकरत,गुणगुणिसेगुणढाकि ॥
दुखमेंराखतदेतकछु,शुभमित्रनयेआंकि ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीकृष्णचंद्रकीबारामासी ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ प्रथममहीनाआषाढ़लागावर्षा ऋतुआई॥ प्रीतमहमरेश्यामसलोनेपातीभेजवाई ॥ कहोवैंकैसेनहिंआये ॥ ऐसेचतुरसुजानश्यामचेरीने बिलमाये ॥ डालगलजादूकीफाँसी ॥ श्रीराधागो पीत्यागकरीघरबारनकुबिजासी ॥ १ ॥ सावनमेंमन भावनहमतोंदामनसोंलागी ॥ तबतोहमसोंप्रीतिब ढ़ीअबहरिकाहेत्यागी॥सुनोतुमऊधोनेरीसों ॥ ला

जशरमकितगईप्रीतिअबकीनीचेरीसों ॥ यहीमोहिं आवतहैहाँसी ॥ श्रीराधागोपी० ॥ २ ॥ भादौंरैन अँधियारीबोलेपीतमकीप्यारी ॥ अन्ननभावैनींदन आवैसंकटअतिभारी ॥ प्रीतनहींमोहनकेऊधो ॥ ऐसेकुटिलकुजातश्यामकोजानितिहीसूधो ॥ मारि गयोबिरहाकीफाँसी ॥ ३ ॥ लागतक्कारकनामतआयेसबकोइधरमकरै ॥ मैंभीधरमकरौंगीजबहींप्रीतम नजरपरै ॥ मिलावैहैकोईऐसाछै ॥ अक्रूरगयोमथुराकोक्करीयेरीकैसा ॥ बुद्धिवाकीकीनीअभिमानी ॥ ॥ ४ ॥ कार्तिककौतुककियेकृष्णनेहमसबकोउजानी॥आखिरजातिअहीरश्यामकेकुबजामनमानी ॥ कंसकीतैंआखिरचेरी ॥ याहीतेदिनरैनआँखमेरीफरकतहैडेरी ॥ लगीमेरेजियकोचौरासी ॥ श्रीराधा० ॥ ५ ॥ अगहनमेंमनचमकनलागाधड़कतहैछाती ॥ ऊधोहाथसँदेसाभेजाबाँचौरीपाती ॥ लिखौकुब्जतुमभीबालमको ॥ हमकोयोगपठायरचीप

टरानीकुब्जाको ॥ हमारेजियकेसुखरासी ॥ ६ ॥ पू
समासचलेगयेहमारेप्रीतमसेप्यारे ॥ काननलागेदू
तकरीहमैंनैननसेन्यारे ॥ हमैंयहमदनसतावतहै ॥
जियकेजारनकाजसँदेशोऊधोलावतहै ॥ खबरतुम
लीजोअविनाशी ॥ ७ ॥ माहनाहकेडाहपियातुमछों
डीहमजानी ॥ रोउठतीकैराहबातसबऊधोनेजानी ॥
ज्ञानकीबातेंदरसाई ॥ कृष्णकोदेहुमिलायसकलस
बगोपीसमुझाई ॥ झूठसबहीकेमनभासी ॥ श्रीरा
धा० ॥ ८ ॥ फागुनफीकोलगैरैनदिनहोयरहीबि
षमें ॥ पातीबाँचतछेमसखीयकयोंबोलीरिसमें ॥ ल
गेअबसाहकरनचोरी ॥ हमरेजियतकान्हकितबां
दीसँगखेलैंहोरी ॥ खबरमेरीलीजैकैलासी ॥ श्रीरा
धा० ॥ ९ ॥ चैतचितामेंजरौंबरौंमैंगिरतीकुँइयांमैं ॥
कहियोमदनगुपालसंगकुबजाकोलैआवैं ॥ कछु
इनबातनकोडरना ॥ हमगोपीदर्शनकीप्यासी
तौऔरनहींकरना ॥ खबरमेरीलीजैब्रजबासी ॥
श्रीराधागोपी० ॥ १० ॥ लागतहैबैशाखसाखसब

हीकेघरआई ॥ ऊधोजीनेजायकृष्णसोंऐसेसमुझा ई ॥ पैजतुमहकनाहकरोपी ॥ हाड़मासगलिगयो बावरीहोगईसबगोपी ॥ लैहिंगीकरवटहूंकासी ॥ श्रीराधा० ॥ ११ ॥ ज्येष्ठमासमेंमिलेकृष्णजबराधा गोपीसों ॥ व्रजबासिनआनंदभयोतबछूटीबाधासों ॥ कृष्णकीयहबारहमासी ॥ पढ़ैसुनैवैकुंठसिधारैछूटै यमफांसी ॥ साँचयहमेरेमनभासी ॥ श्रीराधागो पीत्यागकरीघरबारनकुबजासी ॥ १२ ॥ ॥ इति श्रीकृष्णचंद्रकीबारामासी संपूर्णा. ॥

॥ होली ॥

रंगपिचकारीभरिमारीगिरधारी ॥ भीजगईअँगिया अनमोलीचूनरलाखहजारी ॥ गि० ॥ गुरुजनलोग चवावकरतहैंसासुननेदेगीगारी ॥ गि० ॥ पैयांपरूं बलिजाऊंजनार्दनतुमजीतेहमहारी ॥ गि० ॥ १ ॥

॥ अथ कुमित्रलक्षण ॥

दोहा–पाछेकामनशावही, मुखपरमीठेबैन ॥
बरजैऐसेमित्रको, पयमुखघटविषऐन ॥

॥ अथ खलनिन्दा ॥

दोहा–खलहुसर्पइनदुहुनमें, भलोसर्पखलनाहिं ॥
सर्पडसतहैकालमें, खलजनपदपदमाहिं ॥

अथ सत्संगकर्तव्यतावर्णन ॥

दोहा–करतनहींउपदेशकछु, तऊकरियसत्संग ॥
सतपुरुषनकीबातहू, देतचित्तकोरंग ॥

अथ दुष्टत्यागवर्णन ॥

सोरठा–विद्यायुतहूहोय, तऊदुष्टतजिदीजिये ॥
फणिमणिधरजोहोय,भयकारीकहकीजिये॥

॥ बड़ोंकी दयालुता ॥

दोहा–तुलसीवचनगरीबके, सुनतबड़ेदैकान ॥
श्रीपतिऔगजराजकी, कहांकेरिपहिंचान॥

॥ अथ जन्मव्यर्थतावर्णन ॥

दोहा–श्वानपुच्छसमजीवनो, विद्याबिनहैव्यर्थ ॥
डांसनिबारनतनढँकन, नहिंएकौसामर्थ ॥

॥ अथ कौशल्याकीबारामासी ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ कार्तिककूचप्रयागसेकीन्हींकौ
शल्यासोचकरैमनमेंरे ॥ रामलषणसियाबनकोसि
धारेदशरथप्राणतजेघरमेंरे ॥ दर्शनदेमेरेप्राणप्रिया
रे॥तुमबिनकोननहींहैहमारे ॥ १ ॥ अगहनगैलच
लैजबप्यारीदरदहोयतनमेरे॥ चलतचलतजबपाँय
पिरानेकोईनहिंतुम्हरोवाबनमेंरे॥ दर्शनदेमेरे० ॥
॥ २ ॥ पूसभरतजबचलेलेनकोसौतनदाहभयोमन

मैंरे ॥ मैंजानीरघुबरघरआयेहैंफूलीनमाऊंमनमैंरे ॥ दर्शनदेमे० ॥ ३ ॥ माहमासभरतफिरिआये हूकउठीमेरेतनमैंरे ॥ तलफतिफिरैंअयोध्यामाहीं जैसेमीनफिरैंजलमैंरे ॥ दर्शनदेमेरेप्रा० ॥ ४ ॥ फागुनफिरबैठेमनमाहींसीताहरनसुनाजबमैंरे ॥ रामलषणअबढूंढ़तहोइहैंवैदेहीकोकहाँबनमैंरे ॥ दर्शनदेमे० ॥ ५ ॥ चैतमैंचिंताकरैंभरतजीकैसेराजकरूँअबमैं रे ॥ बिनरघुबरमेरोजीवननाहींमैभीप्राण तजूंछिनमैंरे ॥ दर्शनदेमेरे० ॥ ६ ॥ मासबैशाख भरतनहिंमानैंसोचभयोसबनगरीमैं रे ॥ रामलषण प्रभुसियासमेताध्यानधरौसबनिजउरमैंरे ॥ दर्शन दे० ॥ ७ ॥ जेठमिलापभयोसुग्रीवहिँ बालिकेप्राण हरेसरसेरे ॥ बालीमारिशैलफिरिछाजततारांबिकल भईमनमैंरे ॥ दर्शनदे० ॥ ८ ॥ लगेआषाढघुमड़ रहेबादरसोचभयोअबमोमनमैं रे ॥ बिनमोरेलाल बागसबसूनेसोचपड़ौसबनगरीमैंरे ॥ दर्शनदेमे०

॥ ९ ॥ सावनघनगरजतचहुँओरारामलषणमोरे परबतमैंरे ॥ बिनतियसंगसोचमनहोयहैमेरेहुप्राण धरेउनमैंरे ॥ दर्शनदेमे० ॥ १० ॥ भादौंमेंबंदर सबधायेपूर्वपश्चिमदक्षिणमैंरे ॥ कूदसमुद्रहनुमान सिधारेसीताखबरदईछिनमैंरे ॥ दर्शनदे० ॥ ११ ॥ कारत्रिकूटलंकजबजारीरावणप्राणबसैउनमैंरे ॥ रावणमाररामघरआयेअनँदबधाईमोरेगृहमैंरे ॥ दर्शनदे० ॥ १२ ॥ देवीसिंहसियारघुबरकोध्यानधरै घरबाहरमैं रे ॥ तुमविनस्वामीकोइनमेरापाँयधरौ अबमोशिरपैरे ॥ दर्शनदे० ॥ ३ ॥ इतिकौसल्या-कीबारहमासीसंपूर्णा ॥

॥ अथ कुब्जागृहप्रवेशलीला ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीयदुकुलकुलकमलतमारी ॥ दीनबंधुभक्तनहितकारी ॥ करिकैजननिजनकसुख कारी ॥ तबकुब्जाकीसुरतसँभारी ॥१॥ नृपतिभवनतजिकैअभिरामा ॥ चलेबसनकुब्जाकेधामा ॥

कृष्णकृपासबहीपैन्यारी ॥ भावभजनकुब्जाभइप्या
री ॥२॥ साँचोभावहृदयजहँजाने ॥ बिबशहोयति
हिंहाथबिकाने ॥ नारिपुरुषकछुनाहिंनभेदा ॥ ऊँ
चनीचनहिंकरतनिषेधा ॥ सुधिआईमिलिमगमैपा
ई ॥ सोहितमानलियोयदुराई ॥ चंदनचरणतनक
तनदीन्हो ॥ मानहुँतपजोकाशीकीन्हो ॥ अतिअ
कुलीनकंसकीदासी ॥ परसतपावनभईरमासी ॥
आयेप्रभुपुनिताकेधामा ॥ भक्तबछलहैजिनकोना
मा ॥ कुब्जाजान्योहरिजूआये ॥ पाटंबरपाँवडे़बि
छाये ॥ अतिआनंदलगेउठिआगे ॥ पूरणपुंजपुण्य
सबजागे ॥ दोहा ॥ टेढ़ीतेसूधीकरी, दियोरू
पअभिराम ॥ दासीतेरानीभई, पूरेसबमनकाम ॥
सोरठा ॥ कोकरिसकैप्रकाश, अतिविचित्रहरि
केगुणन ॥ सदादासकोदास, भयोहतोप्रभुउनहिंको
॥ चौपाई ॥ पुरवासिनसबहिंनयहजानी ॥ रा
जाहरिकुब्जापटरानी ॥ कियोकहाधौंइनतपभारी॥

ऐसेबचनकहैंनरनारी ॥ मिलीतनिकचंदनलैमग
में ॥ भईबिदितपावनसबजगमें ॥ यहमहिमाकछु
कहतनआवै ॥ कोताकीपटतरअबपावै ॥ भूलिक
हतकुब्जाजेकोऊ ॥ ताहिरिसायउठतसबसोऊ ॥सो
तोभईकृष्णकीप्यारी ॥ दासीकहतडरतनरनारी ॥
करतत्रासमनमेंसबप्रानी ॥ डारिहिमारिसुनेजोरा
नी ॥ जापरकृपाकरैंयदुराई ॥ ताहिनहींकछुयहअ
धिकाई ॥ सदाहरीकेयेहीरीती ॥ मानतएकभक्तसों
प्रीती ॥ धनिधनिकुब्जाहरिकीरानी ॥ धनिधनिकृ
ष्णप्रीतिकरिमानी ॥ धनिधनिचंदनअंगलगायो॥
धनिधनिभवनजहाँहरिआयो ॥ कहिकहिसबसुर
नारिसिहाहीं ॥ आजकूबरीसमकोउनाहीं ॥ दोहा॥
बसेश्याकुब्जासदन, तहँकरिकछुबिश्राम ॥ पु
निआयेवसुदेवगृह, जनमनपूरेकाम ॥ ॥
॥ सोरठा ॥ तबश्रीनंदकुमार, व्रजबासिनकीसुरति
करि ॥ मनमेंकरोबिचार, अबसबचलिहैंनंदपै ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ लेबसुदेवसंगदोउभाई ॥ गयेजहँउ
ग्रसेननृपराई ॥ तहाँबहुरियादवसबआये ॥ अरुअ
क्रूरउद्धवहिंबुलाये ॥ तबहरिऐसेबचनसुनाये ॥ म
महितब्रजबासीसबआये ॥ नंदादिकसबगोपिअने
का ॥ रह्योनहींब्रजमेंकोउएका ॥ गायबत्ससबत
जेअनेरे ॥ हैंसूनेमंदिरसबकेरे ॥ व्हैहैंदुखितयशोम
तिमैय्या ॥ जिनहमप्रतिपालेदोउभैय्या ॥ बहुतहे
तउनसोंहमकीन्हों॥बहुतभांतिअबलौंसुखदीन्हों॥
सकुचतहौंअपनेमनमाहीं ॥ उनसोंउरिणकबहुँमैं
नाहीं॥ पलटोनाहिंजोउनकोदीजै ॥ अबचलिबि
दाउन्हेंब्रजकीजै ॥ सुनिहरिबचनपरमसुखपाई ॥
सबमिलिचलेजहाँनँदराई ॥ सुनोनंदगोपनयहबा
ता ॥ मार्योकंसजायदोउभ्राता ॥ सोचनहींमनमें
सुखमाने ॥ प्रजाभावबसरहेसकाने ॥ ॥दोहा ॥
मनहींमनशोचतखड़े, नहिँआयेबलराम ॥ ब्रजते
आयेव्हैगये,तीनिकदिनद्वैयाम ॥सोरठा॥ अब

कैसेब्रजजाहिँ , बलमोहनदोऊबिना।।अतिव्याकुल उरमाहिँ ,कबधौंनैननदेखिहौं।।इतिश्रीकुब्जागृह०

॥ खेमटा ॥

तड़पेबिनबालममेराजिया ।। चुनिचुनिकलियांमैंसे जाबिछाऊंसूनीसेजपरदेशपिया ।। खलीलपियावह हमसेबिछुरेजिनकारणहमयोगलिया ।।त० ।। १ ।।

॥ अथ शिक्षाककाबत्तीसी ॥



क. क्कारे कर्मधर्मकुलरीतसँभारो ।। १ ।।ख. खखा

रेखालेंऊंचेपगमतिधारो ॥ २॥ ग. गूगारेगर्बछांड़
बेगरबारहियो ॥ ३ ॥ घ.घूघारे घरआयेको आदर
करियो ॥ ४ ॥ ङ.नूनारेनमस्कारनितसूरजदेवन
॥५॥ च. चूचारेचतुरपुरुषकीसंगतिसेवन ॥ ६ ॥
छ. छूछारे छलीबलीकेसँगनहिंफिरजे ॥ ७ ॥ज. जू
जारेजगतसुहायोकारजकरजे ॥८॥ झ.झूझारे झग
ड़ेजायजूँठमतिबोलौ ॥ ९॥ञ ञञारेञांञांञांञां
ञौंमतिडोलौ॥१०॥ट. टूटारेटकापईसाभेलाकरिये
॥११॥ ठ. ठूठारेठाकठोकबोहनीकरधरिये ॥ १२ ॥
ड डूड़ारे ड़ाकुनकीनिंदानाहिंकीजै॥१३ ॥ ढ. ढूढा
रे ढांगढूंगसोंदूरारहिजै ॥ १४ ॥ण. णूणारे नात
जातमैंपहलेजइये॥ १५॥ त. तूतारेतातेभोजनक
बहुँनखइये ॥ १६ ॥ थ. थूथारे थरकणबिनादूधन
हिंपीजे ॥ १७ ॥ द. दूदारेदयाधर्महितचित्तसेकी
जै॥१८॥ध.धूधारेधनदेकरनिर्धननहिंहोई ॥ १९ ॥
न.नूनारे नारायणनैनानितजोई ॥२० ॥ प. पूपारे

परमेश्वरकीआशाकरिये ॥ २१ ॥ फ, फूफारे फलवं
तातरुवरपगधरिये ॥२२ ॥ ब .बूबारे बगरबुहारक
चरनहिंकीजै ॥२३॥ भ. भूभारे भणवामैंआलसन
हिंकीजै॥२४॥म. मूमारे मातापिताकीआज्ञापालो
॥२५॥ य. यूयारे यादकरोगुरुदेवसँभालो ॥ २६ ॥
र. रूरारे रमवामैंबेलामतिखोवो ॥ २७ ॥ ल. लूला
रे लाभहानितनमनसेजोवो ॥ २८ ॥ व.वूवारे व
र्तमानकीबिद्यालीजै ॥ २९ ॥ श. शूशारे शस्त्रप
रायेहाथनदीजै ॥३०॥ ष. षूषारे षटौकर्मआराध
नकरजे ॥ ३१ ॥ स. सूसारे समझबूझपगआगेध
रजे ॥ ३२ ॥ ह. हूहारे हँसतेंहँसतेंरारनकरिये ॥
॥३३॥ ळ.ळूळारे लक्षणसीखकुलक्षणहरिये॥३४॥
क्ष.क्षूमारे क्षमाकरैजासोंनितबोलौ ॥ ३५ ॥ त्र.
त्रूत्रारे त्रणसमानमूरखमनतोलौ ॥ ३६ ॥ ज्ञ.
ज्ञूज्ञारे ज्ञानबिनापशुपूँछबिषाणो ॥ ३७ ॥ अ. अ
आरे अर्थबिनाबिद्याधनकाणो ॥ ३८ ॥ आ. आ

आरे आदरभावसबनसोंकीजै ॥ ३९ ॥ इ. इइरे ईश्वरकोसुमिरणचितदीजै ॥ ४० ॥ ई. ईईरे ईर्षाद्वेषत्यागैजोमनकी ॥ ४१ ॥ उ. उउरे उघरइघरतो देखोतनकी ॥ ४२ ॥ ऊ. ऊऊरे ऊंचपदीपरमेश्वर देसी ॥ ४३ ॥ ए. एएरे एकबारसुखदुखकीकहसी ॥ ॥ ४४ ॥ ऐ. ऐऐरे ऐसीकरणितोकबहुँनरहिये ॥ ॥ ४५ ॥ ओ. ओओरे ओलंभोप्रभुकोक्यूंसहिये ॥ ४६ ॥ औ. औऔरे औरकामतोसबहीकीना ॥ ॥ ४७ ॥ अं. अंअंरे अंगहीनहरिभक्तिबिहीना ॥ ॥ ४८ ॥ अः .अःअःरेअःअःकरतोजलनहिंपीजै ॥ ४९ ॥ ऋ. ऋऋरे ऋणमाथेकबहूँनहिंकीजै ॥ ५० ऌ. ऌऌरे ऌऌकरतोघरघरनाहिंफिरजे ॥ ५१ ॥ ॠ. ॠॠरे ॠद्धिसिद्धिदाताहियधरिजे ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥ यहिशिक्षाबत्तीसिको,जोकोइबाँचैसार ॥ श्रीधरसाँचेहेतसे,परजाकरैजुहार ॥ १ ॥ इतिश्रीधरकृतशिक्षाककाबत्तीसीसंपूर्णा ॥ ॥ ॥

॥ अथ विद्याबत्तीसी ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ दोहा॥ श्रीकृष्णहिकीशर
णहूं ।।सुधिबुधिदेततकाल ॥ बिघनहरनसबसुख
करन ॥ नमोनमोगोपाल ॥ १ ॥ गादीजेसलनग्र
की ॥ राजेश्वररणजीत ॥ यहविद्याबत्तीसिको ॥ ह्मे
ताकरीअजीत ॥ २ ॥ प्रातहिंउठिगुरुध्यानधर ॥
प्रभुकेचरणसँभार ॥ सादरगणपतिसुमिरिकै ॥ कर
विद्याउपचार ॥ ३ ॥ कानोंसेगुरुवाक्यसुन ॥ मुख
सोंकरोउच्चारि ॥ फेरिहृदैधरकरलिखो ॥ अक्षरनैन
निहारि ॥ ४ ॥ पंचवर्षसेआदिले ॥ करबिद्याअ
भ्यास ॥ जबलगकारेश्वेतव्है ॥ छाँड़नबिद्याआस
॥५॥अक्षरमात्राअंकसिख ॥ फिरसंयोगबिचार ॥
इनविद्याकापारनहिं ॥ होयअपारअपार ॥ ६ ॥
तजछलआलसअंगमैं ॥ ढीलापनमतधार ॥ बिद्या
श्रमअरुलगनसे ॥ सदासँभारसँभार ॥ ७॥ एकचि
त्तहोयबैठिकरि ॥ पूरणगुरुसेपाय ॥सुधिबिद्याको

समुझकै ॥ सीखोनितप्रतिजाय ॥ ८ ॥ थोड़ोहीप
ढ़बोभोलो ॥श्रद्धासेनरश्रेष्ठ॥ बिनश्रद्धाकोबिरुधहो
य ॥ बहुतपढ़ैफिरकष्ट ॥९॥ क्रमक्रमबिद्यासीखिकै॥
मूरखपंडितहोय ॥ बूँदबूँदजलबरसिकै ॥ सागर
पूरणसोय ॥ १० ॥ बिद्याकोसंग्रहकरो ॥ विद्यार
तनरसान ॥ बिद्याजगमैंगुप्तसुन ॥ लोहाकंचनमा
न ॥ ११ ॥ कामधेनुयाजगतमें ॥ जाहिरबिद्यायो
ग॥मूरुखनरसमुझैंनहीं॥भुगतैंअपनाभोग ॥ १२ ॥
बिद्यारूपीब्यसननर॥राखुहर्षिहियमाँहि ॥ बिद्या
देशबिदेशमें ॥ मंत्रहोयकरिसाँहि ॥ १३ ॥ हिम्म
तकबहुँनहारिये ॥ बिद्यापढ़बेमाँहि ॥ हिम्मतसे
क़िस्मतबढ़ै ॥ देखबिद्याकीछांहि ॥ १४ ॥ पढ़बेमेंक
बहूँनहीं॥खालीदिनमतखोय ॥पीछेपछितैहैघना॥
कारीलगैनकोय ॥ १५ ॥ भलिबिद्याकीत्रासना॥
जासेसबसुधिहोय ॥ बिद्यासेभलपनमिलै ॥ पा
छेबहुसुखजाय ॥ १६ ॥ बिद्याकोसुखबहुतहै ॥ इ

स्त्रीसेअधिकाय ॥ वाघरमाहेंसुखकरै ॥ ओघटमेंसु खथाय ॥१७॥ मोटेकुलमेंजन्मले ॥ बिद्यासीखीनाय ॥ धृगलीनोवाकोजनम ॥ पशुसंज्ञामेंआय ॥ १८ ॥ बिद्यासबकुलरीतिहै॥नीचहिंउत्तमदीख॥ कुलकोकारणनाहिंहै ॥ बिद्यासोंनरतीख ॥ १९ ॥ राजकाजबिद्याबिना ॥ कहाकरौंपरबंध ॥ न्यायरीतिगुनरीतिसब ॥ बिनबिद्यानरअंध ॥ २० ॥ बिद्यासेबुद्धीबढ़ै ॥ बिद्यारोजीसार ॥ बिद्याबिनभागनखुलै ॥ बड़बिद्याउपकार ॥ २१ ॥ बिद्यासेआदरमिलै ॥ बिद्यासेसन्मान ॥ बिद्यासेउक्तीबढ़ै ॥बि-द्यायुक्तीज्ञान ॥ २२ ॥ बिद्याबिनबुद्धीनहीं ॥ बिद्याबिननहिंसिद्धि ॥ बिद्याबिनवृद्धीनहीं ॥ बिद्याबिननहिंरिद्धि ॥ २३ ॥ बिद्याकोचोरनलगै॥ खरचेखूटेनाहिं ॥ ज्योंखरचैत्योंबहुबढ़ै ॥ व्हैयशजगकेमाहिं ॥ २४ ॥ बिद्यासागरहैबड़ो ॥ बिद्याकोनहिंछेह ॥ जोचाहौसोफललहो ॥ बिद्याबड़

पनएह ॥ २५ ॥ बिद्यारूपसभानमैं ॥बिद्यारूपबि
बाद ॥ बिद्यारूपबिरूपकी ॥ हिद्यारूपसँबाद ॥
॥२६ ॥ बैद्यकज्योतिषतरकमत ॥ सबबिद्याआधी
न॥बिद्याबिननरबेसुरत॥कहाकरैपरबीन ॥ २७ ॥
कुलमैंबिद्यावंतइक ॥ दीपकहोयउजास ॥ अंधेरो
सोशठनसे॥कहाकरैपरकास ॥ २८ ॥ दृष्टीविद्या
वानकी ॥ चहुँदिशिपहुँचैजाय ॥ बिद्यामेंसबगुण
बसैं ॥ बिद्याबिनानकाय ॥ २९ ॥ बिद्यामेंलज्जा
तजो ॥ देखोग्रंथअनेक॥तंतसारसेत्यारकर ॥ ऐसी
धारोटेंक ॥३० ॥गुरुकृपास्वातिरजमैं ॥ व्हैजोबा
रंबार ॥ आछीबुद्धिव्हैशिष्यकी ॥ बिद्यासारंसार
॥ ३१ ॥बिद्यासेदिग्बिजयव्है ॥ बिद्यासेसबजीत॥
बिद्यासेपूरणपुरुष ॥ होयअजीतअजीत ॥ ३२ ॥
वातांचतुराईबिद्या ॥ आसीकेदिनयाद ॥ जातांजु
गानजावसी ॥निभसीआदिअनाद ॥ ३३ ॥ धनि
हैविद्यावानको ॥ धनिजननीधनितात ॥ धनि

धनिहैगुरुदेवको ॥ धनिहैउनकीजात ॥ ३४ ॥ अरजीकरतअजीतऐ ॥ बहुतनमामैंबोध ॥ चुकभूलकोजाँचकर ॥ सुद्धकरौकबिसोध ॥ ३५ ॥ उगनीसौंअठारवे ॥ दीपमालशनिदिन्न ॥ कियोसंपूरणग्रंथको ॥ पढ़मनहोयप्रसन्न ॥ ३६ ॥ ॥

॥ अथ शिक्षाबत्तीसीप्रारंभः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥दोहा ॥ ॥ श्रीवल्लभविठ्ठलप्रभू॥गिरिधरगोविंदराय ॥ बालकृष्णगोकुलरवी ॥ यदूरथामघनसाय ॥ १ ॥ गढ़जेसाणैपैतपै ॥ रावलश्रीरणजीत ॥यहिशिक्षाबत्तीसिको ॥ ह्मेताकरीअजीत ॥२ ॥ मंत्रीसेवनकीजिये ॥ नृपसेवनकेकाज ॥ केवलनृपनाहिंसेइये ॥ सेवेहोयअकाज ॥ ३॥पहलोभयभगवानको ॥भयदूजोभुवपाल ॥ तीजोभयलोकानको ॥ राखोबिनमतचाल ॥ ४ ॥ देखइष्टअरिगुणपरम ॥ पैदाखरचसँभार ॥ हरय

ककारजकीजिये ॥ समैबिचारबिचार ॥ ५ ॥ सब
दिनहोंयनएकसे ॥ समुझविचक्षणबात ॥ बरतनऐ
सीबरतिये ॥ आदिअंतजोजात ॥ ६ ॥ खावोपी
वोखरचलो ॥ करलोसुकृतसुकाम॥तनमनधनथिर
नहिंरहै ॥ थिररहैगोविंदनाम ॥ ७ ॥ नितउद्यम
करुआपनो ॥ नितगोबिंदगुणगान ॥ नितबिद्या
अभ्यासकरि ॥ नितप्रतिबढ़ीसुजान ॥ ८ ॥ वृथा
कालनहिंखोइये ॥ वृथानबकियेबाद ॥ वृथानिं
दाकीजिये ॥ वृथासोचउन्माद ॥ ९ ॥ अतिलाल
चअतिआलसी ॥ अतिनिद्राअतिघात ॥ अतिस
वंत्रनकीजिये ॥ अतिहाँसीउत्पात ॥ १० ॥ नृप
नारीअरिचोरजन ॥ कपटकूटचुगलान॥ नदीनखी
शृंगीअगन ॥ इन्हविश्वासनमान ॥ ११ ॥ हिकम
तिकरिअरुउदरभरि ॥ किसमतिपरिरहिनाहिं ॥
हिकमतमेंकिसमतबसै ॥ करिदेखोजगमाहिं ॥
॥ १२ ॥ भावेज्योंखावोमती॥ बहतोजगतसुहाय॥

जैसीजाहाँयुक्तिव्है ॥ तैसीउक्तिमिलाय ॥ १३ ॥ षटभाषाबिद्याचवद ॥ कलाबहोतरजान ॥ बिनदेखसीखेबिना ॥ सुनेबिनानहिंज्ञान ॥ १४ ॥ बुद्धिवानसेबोलिये ॥ बिनबोलेनहिंबुद्धि ॥ बखतदेखिकैबोलबो ॥ सबबातनमेंशुद्धि ॥ १५ ॥ सज्जनतोसकड़ाभला ॥ दुर्जनभलानदूर ॥ निजजनतोनेड़ाभला ॥ बुधिजनसदाहजूर ॥ १६ ॥ बखतबिगारैबड़ेनको ॥ सुधेरैबखतसमाज ॥ बिगेरैसुधेरैबखतसे ॥ बखतबड़ीहैराज ॥ १७ ॥ कलौंकालसेदूररहि ॥ घरनरधर्मछिपाय ॥ मूरखमंत्रीनकीजियै ॥ तनकोयतनरखाय ॥ १८ ॥ वसीबखतबक्कथापनो ॥ बिद्यारीतिबिवेक ॥ सतसंगतिसंसारमें ॥ इनसमाननहिंएक ॥ १९ ॥ तनसुखधनसुखनारिसुख ॥ सुखसंततिसुखराज ॥ सुखसुथानकबिमित्रसुख ॥ पुनिपूरबसेसाज ॥ २० ॥ सीरहोयसोईमिलै ॥ बिनासीरनहिंजान ॥ कर्मकृपाबिननाखुलै ॥ बिधि

केअंतप्रमान ॥ २१ ॥ सीततपतबर्षासहैं ॥ प्रभुइच्छाप्रतिपाल ॥ सर्बबस्तुसंग्रहकरो ॥ प्रापतफलकोकाल ॥ २२ ॥ दृशाबिदृशाकोदेखके ॥ तीखीतरकनिकाल ॥ सपनेतरसोख्यालहोय ॥ कटैआलजंजाल ॥ २३ ॥ थिरतातेबिपताकटै ॥ यतनकियोदुखदूर ॥ श्रमसेसुखउत्पन्नव्है ॥ धरमसेधनव्हैपूर ॥ २४ ॥ धरनीसेधरध्यानतूं ॥ हटेहानसबजान ॥ धरणिबड़ीयाजगतमैं ॥ ढकैदोषपरबान ॥ २५ ॥ जलजमीनकेयोगसे ॥ पैदायसजरहोय ॥ जोबोवैसोईलुनै ॥ मेहनतकस्फलहोय ॥ २६ ॥ रागवसीरसचोजरँग ॥ चंचलगुणउजलान ॥ धनखोवनकोमनहुवै ॥ करौप्रीतिगणिकान ॥ २७ ॥ रहतेसुखमेंमित्रसब ॥ दुखमेंरहैनकोय ॥ बिपतबिदारनकोखरो ॥ दुखमेंमंत्रीहोय ॥ २८ ॥ रीतिरहेतेयशरहै ॥ गयेरीतिसबजाय ॥ जन्ममरणयाजगतमैं ॥ रीतिबिनानहिंकाय ॥ २९ ॥ सबहीस्वारथकेसगे ॥ परमारथकोकोय ॥

सोसोस्वारथसोसधै ॥ परमारथमतखोय ॥ ३० ॥
तजज्वारीतजतस्करी ॥ तजपरद्रोहअज्ञान ॥ तज
कुसंगतजकूटकृत ॥ तजदुर्मतितजहान ॥ ३१ ॥
भक्तिकियेभगवतमिलैं ॥ शक्तिकियेसिधकाम ॥
उक्तिकियेआदरमिलै ॥ युक्तिकियेजगनाम ॥
॥३२॥शरवसुशीखसुसाँचबढ़॥रखलिहाजरखरीति
॥ क्षमादयारखशीलसत ॥ रखसँतोखसुधिप्रीति॥
॥३३॥जुरतफुरतअरुसुरतसे ॥ सिधिकारजसबहोय
॥ह्वैताअजीतकोकिये॥निश्चययहकरिजोय॥३४॥
भूलचूकसबसमझकै॥करिकबींद्रसुधसोध ॥ सुनअ
जीतकीबीनती ॥ मोमैंनहिंबहुबोध॥ ३५ ॥ सत
उनीसअट्ठारवैं ॥ आश्विनसुदिदशराव॥भयोसमा
पतग्रंथयह ॥ करिअजीतसिघचाव॥ ३६ ॥इतिशि
क्षाबत्तीसीमेहताअजीतकृतसंपूर्णा॥ श्रीरस्तु ॥छंद
घनाक्षरी ॥ ॥ छापेहैंसुधाकरविद्याअरुशिक्षाजामैं
दोहराछतीसदूजे छत्तिसप्रमाणहैं ॥ बिपतिबिदार

वेकौविद्यासोनऔरकछु संपतसुधारवेमैंशिक्षाबल वानहै ॥ कुसंगतिकेनाशबेकोबिद्यासीनखड्गऔर शिक्षाबिनानरदेहीपशुकेसमानहै ॥ कहैंकबिश्री धरश्रीरणजीतनरेशपै मेहताअजीतसिंहमंत्रीबुद्धि वानहै ॥ १ ॥ ॥ कुंडलियाछंद ॥ ॥गादीजेसल नग्रकी श्रीरणजीतनरेश ॥ राजतअपनेदेसमेंमानो उदितदिनेश ॥ मानोउदितदिनेस धर्ममर्यादाजा नैं ॥ राजनीतिरसरीतिन्यायअन्यायपिछानैं ॥श्री धरकविताकहै मंत्रिकीबुद्धिअनादी ॥ सुबसबसो सबदेश अचलश्रीनृपकीगादी ॥ ॥ दोहा ॥ पु ष्करछायामध्यहै, परशुरामसुखधाम॥ बिप्रसलेमा बादको, श्रीधरकबिहैनाम ॥ २ ॥ इतिशिक्षाब त्तीसीसमाप्ता ॥

बीतरागलक्षण ॥

दोहा ॥ ब्रह्माइन्द्रहिँआदिजो, होतदेहधरिभो ग ॥ काकबीटसमजोगनै, बीतरागसोलोग॥ १ ॥

विवेकलक्षण ॥

दोहा ॥ देहप्रपंचअनित्यहै, आतमनित्यबखानि ॥
सारासारहिंजानिबो, यहविवेकसामानि ॥ १ ॥

संकष्टनाशनगणपतिचतुर्थीकथा.



चौपाई ॥ ॥ गौरीपुत्रफरसकरधरैं ॥ मूषैचढ़ैंबि
घ्नपरिहरैं ॥ जोतोषेंतोऋधिसिधिदेत ॥ जोरूठैंतो
हरकरलेत ॥ काश्मीरसुखमंडनमाय ॥ शारदलघू

तिहारेपाय ॥ तवप्रसादहिरदेमैंधरूं ॥ मंदबुद्धिमैं
कबिताकरूं ॥ पुरीअयोध्यारामकोथान ॥ सुलख
णसाहबसेपरधान ॥ चंदनदूबधूपलियेहाथ ॥ सि
रसीदडीतराजूसाथ ॥ नितगणपतिकीपूजाकरै ॥
बैठ्योसाहबनिजवोकरै ॥ आपनफिरैगाँवदोचार ॥
घरमेंथीकुलवंतीनार ॥ तीजेप्रहरनगरसंचरै ॥ धू
पदीपसेपूजाकरै ॥ मोदकलड्डुदेयअहार ॥ गणप
तिपूजाकरैअपार ॥ मासछमासीबणिजैगयो ॥ बर
स्योमेघअँधारोभयो ॥ भँवराकाटैंमाछरखायँ ॥ भू
ल्योसाहफिरैबनमायँ ॥ भूल्योमारगभयोगँवार ॥
सिंहसूरबनखंडअपार॥अतिस्वरूपदेख्योसुकुमार॥
भैकेचढ्योबेलकीडार ॥ सांझपडीघरहुईअबार ॥ घ
रकुलवंतीकरैपुकार ॥ हाहादईकौनयुगभयो॥ मेरो
कंतकहाँधौंगयो ॥ कौनबियोगकियोकरतार॥ रहि
गयोजेमणपाकअपार ॥ रह्योबिनायकइच्छाछंद॥
मेरोभक्तरह्योबनखंड ॥ लंबोदरऊच्योकिलकाय ॥
सोबनखंडपहूँचोजाय॥ ढूंढेपरबतखालेखाल॥देखे

उजायबेलकीडाल ।। सूतोसाहजगायोजाय ।। बन
बनशब्दकऱ्योकिलकाय ।। साहापुत्रमैंतोषौंतोहिं ।।
जोमांगोसोपावोमोहिं ।। स्वामीमँगौंएकपरसाद ।।
पृथ्वीगाड्योमोयाबताय ।। गयोअयोध्यापुरिबिच
संगा ।। जहंगोविंदपठेकरमंगा ।। ताकेखेतमेंमिली
खजूर ।। पूरुबदिशाहाथहोयदूर ।। पहफाटीभिसारो
भयो ।। लादिफांदिसाहाघरगयो ।। नगरपहूँचोऊ
गोसूर ।। बँटीबधाईबाज्योतूर ।। दोउकरजोरिकामि
नीकह्यो ।। स्वामीरातिकहांतुमरह्यो ।। तुमबिनराति
अकेलीरही ।। होअचेतभूमीपड़रही ।। कामिनिक
हैसुनौभरतार ।। पूजोदेवकरोजेवनार ।। हमतुमदु
खीबिहानीरात ।। पौढ़ोपलँगकरोकुशलात ।। साह
पुत्रतबलियेकुदाला ।। सुलखणचलिभेखोदनसाला
।। जायखोद्योगोबिंदकोखेत ।। लाग्योवक्रतुंडसेहेत ।।
देखभूमिकोहरषितभयो ।। काढ़विनायकखोल्यांल
यो ।। हाथमेंफरसामूषैचडे ।। बिचबिचभूषणमोती

जडे ॥ गौरिपुत्रबहुहर्षितभयो ॥ बीसलाखद्रव्यते हिदयो ॥ सुलक्षणमनउपज्योअतिप्रेम ॥ गणपति व्रतकोलीन्होनेम ॥ देशदेशकेलोगबुलाये ॥ काश्मीरपाषाणमँगाये ॥ सिद्धियोगमेंनेइँधराई ॥ अति सुंदरसबबिधीबनाई ॥ नवघटिकादिनचढ़प्रमाण ॥ नानारूपबिचित्रपषाण॥पुष्यनक्षत्रमेंकियोअरंभ ॥ साहदेवकोथाप्योथंभ ॥ चढ़चोकलशजबपूरीरली ॥ थंबथंबबैठीपूतली ॥ सोहैकलशदेवकेसीस ॥ बनै बाटजगदेतअसीस ॥ तोरणबाँधध्वजाफरहरै ॥ औरदेवमेल्योदेवरै ॥ सुलक्षणसाहउद्यापनकियो॥ होमयज्ञदानहुबहुदियो ॥ नृपतीमनउपज्योअतिछोह ॥ सुलक्षणनेपहरावोलोह॥ चिंताबसीविनायकथयो ॥ बेगदौड़देबीपैगयो ॥ दोकरजोड़ेलाग्योपाय ॥ मेरोभक्तछुड़ावोमाय ॥ तबबोलीदेवीपरचंड॥ राजाकोतोडूंभुजदंड ॥ तोडूंसाकलाकरूंनिषेद ॥ घोडासायणपाडूंबेग ॥ हाथत्रिशूलरुसिंहहिंचढ़ी ॥

टूटालोहरुसांकलझड़ी ॥ राजाबोल्योदेवीमाय ॥ जीवदानदेलागौंपाय ॥ अबकीमाताजोमैंउबरूं ॥ सुलक्षणसाहकहैसोकरूं॥ संकटचौथिअँधारीहोय॥ चाकोव्रतकरिहैंसबकोय ॥ करकंकणमोतीगलहार ॥ गणेशचौथिफलदेतअपार ॥ ऋधिसिद्धिकरैभैरैभंडार ॥ अनधनसुतकुलदेश्रृंगार ॥ जोयहकथासुनैचितलाय ॥ मनबांछितफलसोनरपाय ॥ संकटचौथिकोगायोभेद ॥ जैसेनिर्णयकीनोबेद ॥ दोहा ॥ जोयाकोसीखैसुनै, नरनारीमनलाय ॥ निश्चय मनकीकामना, पूरैंश्रीगणराय ॥ इतिश्रीसंकष्टचतुर्थीकथासंपूर्णा ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ बिरहबर्णनबारामासीप्रा० ॥

टेर ॥ कहँहूँढूँरीसियारामलछमनकोतैंनेंपठादिया किसबनकूं ॥ १ ॥ पहिलामहीनारीलगाचैत्रकामासा ॥ केकईकहैसुनराजा ॥रामलछमनजीभेजदेवोबनवासा ॥ मांगौंबाराबरसकेपासा ॥ करैराज

जीभरतशत्रुघनकासा ॥ सबपूरैमनकीआसा ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामचलेबनबासको, दशरथतजेपरान ॥ सबदुनियांघबरातहै, तोयाकेकइलगीपछतान ॥ नहिंचलनारीबिनाराममेरेघरको ॥ १ ॥ तैंने० ॥ सखीरीग्रीषमऋतुबैशाखा ॥ नहिंघरमेंरामकोराखा ॥ मेरेहोतीरीजनमजनमकीसाखा ॥ वेपुत्रदोउदशरथके ॥ कौसल्याजीयहीवचनमुखभाखा ॥ जलसेभरआंईआंखा ॥ ॥ दोहा ॥ ग्रीषमऋतुबैशाखकी, कहकौशल्यारोय ॥रामलखनबनकोगये, नाजानोंकहँहोंय ॥ भईबैरनरीभलालजायाकुलको ॥ २ ॥ तैंने० ॥सखीजेठमेंअगिनपड़तजलथलमें॥ लूलागतगोरेतनमें ॥ दशमहीनाजीरटेकटेसुखदुखमें ॥ जदजलमेंराममेरेघरमें ॥ यहिअवसरजीदियोदुखबिधिबुढ़पनमें ॥ दोउभाईगयेबनखँडमें ॥ दोहा ॥ ॥ ज्येष्ठमहीनारीसखी, बरसतअगिनअपार ॥ रामलखनबनकोगयें, संगमेंसीतानार ॥ लू

लागतरी ॥ स्यामसुँदरगोरेतनकी ॥ ३ ॥ तैंने० ॥ सखीआषाढमेंअबबरषाऋतुआई॥चारोंदिशाबदरियांछाई ॥बरसैपानीरीचलैपवनपुरवाई ॥ योंकहति कौशल्यामाई ॥ गयेबनकोजीवैतपसीदोउभाई ॥ जिनकीअजहुँखबरनहिंआई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ असाढ़महीनारीसखी, बरसतहैघनघोर ॥ सीतालक्ष्मणरामजी, केहिभीजतहैंठोर॥बरषाऋतुमेंजीनहींरामरेघरको ॥४॥तैंने० ॥ सखीहोनाथारीबनमेंरामजावनका॥ज्यांनिमतपडारावनका ॥बरषाऋतूमजेमेंबरसैसापनका ॥ जहँदरमंदरथाउनका॥ होनाथाजीऋतुबनफलखावनका॥ पानीनदीकुवातलावनका॥दोहा ॥ जगसबमेंबिख्यातहै,चित्रकूटनिजधाम ॥ सीतालक्ष्मणरामजी, जहांकियेबिश्राम ॥खायकेरहनाजीचवदाबरसवनफलको ॥ ५ ॥ तैंने० ॥ सखीभादौंरीभादौंबसताआवै ॥ नदियनमेंनीरनहींमावै॥सीताबड़ीरीनितउठमिरगोखावै॥राममनमें

अंदेसोलावै ॥मायारूपीरीमिरगहाथनहिंआवै ॥प्रभुधनुषबाणलेधावै ॥ दोहा ॥ जोबियोगभयोरामको, सुनियोचित्तलगाय॥ ताकेपीछेजानकी,रावणहरलेजाय॥ सखीकोनजानेरीहोनहारकीगतको ॥ ॥ ६ ॥ तैंने० ॥ सखीअसोजमेंचढ़ेरामदलसारा ॥ लंकापरकियेनगारा ॥ जोगरबीजेगरबकियासोइहारा ॥सागरकानीरकियाखारा॥ दलफिरगयेजीचलेखडगदुधारा ॥ रावणकोरामजीमारा ॥ दोहा ॥ रावणमार्योरामजी, सीताहरनकेकाज ॥भक्तबिभीषणकोदियो, गढ़लंकाकोराज ॥ बनठनकरजीछुटालियेदेवनको ॥ ७॥ तैंने० ॥ सखीकार्तिकमेंरहेरामलंकामें॥सबदैत्यरहेशंकामें ॥ जिनगरवेसोमारलियेहंकामें॥हनुमानबड़ेबंकामें॥ पीछेसैन्यफिरीयकडंकामें॥गढ़खाईकूदफलंकामें॥दोहा ॥रावणमार्योरामजी,बीत्योकार्तिकमास ॥ कौशल्याचिंताकरै, घरआवनकीआस ॥ अबकावैंरामगुणीसेघरको ॥

तैंनेपठादियाकिसबनको ॥ ८ ॥ तैंने० ॥ सरदी
ऋतुमेंजीलग्याजोमहिनामृगसर ॥ लंकासुचढ़ेरा
मलशकर ॥ उतरेसागरजीपीछेआगयेहटकर ॥कि
यामुकामसागरतटपर ॥ सीतापूजेरीसेतुबंधरामे
श्वर ॥ सामग्रीथालमेंभरकर ॥ दोहा ॥ रामचंद्रपू
जाकरैं, बालूपिंडबनाय ॥ रामेश्वरउनकोकहैं, ज
गमेंदियेजनाय ॥सबदुनियाजीकहेरामेश्वरउनको॥
॥ ९ ॥ तैंने० ॥ सखीपूसमेंचारोंदिशाठंढबरसे ॥
कोईनाहिंनिकसतहैघरसे ॥ माहुटिबरसैजीझडीला
गरहीसरसै ॥ कौशल्यामनमेंतरसै ॥ यहिऋतुमें
जीनहिंरामघरदरसै ॥क्याकियापापमैंकरसै ॥ ॥
॥ दोहा ॥ पूसमहीनारीसखी, बरसेठंढकिआग ॥
कितकदरखतजलगये, खड़ेजागकेजाग ॥ सरदीऋ
तुमेंजीनहींराममेरेघरको ॥ १० ॥ तैंने० ॥ पूस
केपीछेमाँहमहीनाआवै ॥ घरघरमेंबसंतमनावै ॥
सखियांसंगमैंजीलेलेपीतमधावै ॥ भरझोरीगुलाल

उड़ावै ॥ कौशल्याजीरामबिनादुखपावैं ॥ जिनअन्न पानीनहिंभावै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ माहमहीनारीसखी, घरघरउड़तअबीर ॥ सीतालक्ष्मणरामबिन, भाइभरतदिलगीर ॥ धनधनवैहैंजीजिनकेरामगुणीसेघरको ॥ ११ ॥ तैंने० ॥ सखीफागुनमेंघरघरहोरहिहोरी ॥ उड़ैअबीरभरभरझोरी ॥ घरइंदरकेजीमृगमदकेशरघोरी ॥ खेलैंसबसखियनकीटोरी ॥ ज्यामेंएकसखीजीकुछस्यानीकुछभोरी ॥ याबिनारामकिसिहोरी ॥ दोहा ॥ बारामहीनाबरसके, बारोबीतेआय ॥ तेरवांमहिनाअधिकका, तोमैंअबदूतनैंसुनाय ॥ घरआवोरीबीतेबरसअवधिको ॥ १२ ॥ तैंने० ॥ तेरवैंमहीनारीरामचंद्रघरआये ॥ कौशल्याकंठलगाये ॥ भाइभरतजीबांहपकड़बैठाये ॥ घरघरमेंबटतबधाये ॥ गुरुबिजयपुरीजीमुसंदकागुणगाये ॥ यहतेरामासीबनाये ॥ दोहा ॥ मन्नरामकहतागुणी, बीतेतेरामास ॥ सीखेगावैजोसुनै, तेहिंबैकुंठनिबास ॥ वैनरतो

जीनहिंतरसैअनधनको ॥ १३ ॥ तैंने० ॥ इतिश्री
रामबनवासबिरहबर्णनबारामासीसंपूर्णा ॥ ॥

॥ कुबरीसंगबिहारबर्णनबारामासी ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ टेर ॥ ॥ कृष्णअकेले
गयेसबब्रजबाला ॥ कुबूजादासीकंसरायकीमोहन
परजादूडाला ॥असाढ़आशाकरूंजीतुम्हारीनारिअ
केलीकुंजनमें ॥ हमकोछांड़िबसेजायकुबूजासँगम
धुबनमें ॥ दासीसेतीप्रीतलगाईमोहलियातिनछिन
में ॥सौतिहमारीजन्मकीबैरिनबिलमायाहरिनैनन
में ॥ पतियालिखतिमतलबगरजीकैसेंलिखूंदेगये
टाला ॥ १ ॥ कुबू० ॥ सावनआवनकहगयेसजनी
हमसेमोहनबचनकिया ॥ मैंखड़ीदेखतीराहसखी
रीअजहुँनआयेकृष्णपिया ॥ निजनिजकेरतिवार
नगरमेंसबसखियाशृंगारकिया ॥ काजलटीकादि
येसीसपरबस्तरओढ़ेनयानया ॥ श्यामबिनामेरीसे
जअहैसूनीबागनमेंझूलाडाला ॥२ ॥ कुबू० ॥ भा

दौंमहीनागणेशचौथहै सबसखियांगणपतिपूजैं॥ धू पदीपसिंदूरपुष्पनैवेद्यचढ़ैलडूगूंजे ॥ हाथजोड़कर खड़ीराधिकानाथअरजमैंकरूंतुझे ॥ श्यामहमारा मिलायदेओबिनमोहनकछुनहिंसूझे ॥ इतनाका रजकरोगजाननऋधिसिधिकेकरनेवाला ॥ ३ ॥ ॥ कुब० ॥ आसोजमहीनेदेबीअंबिकाराधापूजेअ पनीगरज ॥ हाथजोड़करकरूंबीनतीमातामोरीसु नोअरज ॥ पियागयेपरदेसद्वारकापियकारणहुइपी लीजरद ॥ पीवपीवकरतीरैनदिनएतोमेरेबड़ादरद ॥ इतनाकारजकरोअंबिकाभेटचढ़ाऊंछत्तरमाला ॥ ॥ ४ ॥ कुब० ॥ कार्तिकउत्तमबड़ामासहैंसबसखियां कार्तिकन्हावें ॥ बेगसबेरेउठकरहरिमंदिरहरियश गावैं ॥ दर्लैमहलअरुघरमंदिरआजदिवालीदरशा वैं ॥ पूजैंलक्ष्मीनारायणनरपतिव्रतासबशिरनावैं ॥ श्यामबिनामेरीसेजहैसूनीऔरजगतमैंउजियाला ॥ ॥ ५ ॥ कुब० ॥ अगहनमेंमोहनघरनाहींसोड़गिंद

बाभरवाती ॥ मैंतेरेवास्तेरेसभीपलँगबिछोनाकरवा
ती ॥ आपबिगरमैंसोऊंअकेलीसूनीसेजफटैछाती ॥
दिलअपनेकोसोचकैलाखयतनकरसमझाती ॥ डा
लगलेमेंफांसीगयेब्रजवासिबतावोहमकोलाला।६॥
॥ कुब० ॥ पूसरोसमेंकरूंजीकृष्णपरइनऋतुमेंआये
नाहीं॥मोरेठंढकेनींदनआवैमुझेसेजमाहीं ॥जाड़ाने
मोहिंबहुतसतायाफेरकामनेडसखाया ॥ मेझुरझुरपिं
जरहुईआयचेहरापरस्याईछाई ॥ ज्योंज्योंयादमोहिं
आवतिहैत्योंत्योंबदनपड़ैकाला ॥ ७॥ कुब० ॥ मा
हमहीनेबसंतपंचमीजोघरहोतामेराकंत ॥ सबसखि
यनमेंखेलखेलतीखूबमचातीआजबसंत॥ मैंखेलन
कोकैसेजाऊंनहींमिलेरीमुझेकंत ॥ दिलअपनेमेंसो
चकरबैठरहीमैंआपनिचंत ॥ चैननहींदिनरैनसाँव
रेदरसदेवमुरलीवाला ॥ ८ ॥ कुब० ॥ फागुनमेंमो
हनघरनाहींफागपियाबिनलागीअगिन ॥ गोरेब
दनमेंबुझतीनाहींआयकरोकोइक्रोड़यतन ॥ सँग

कीसहेलीबनीअलबेलीहोरीखेलैंसंगसाजन ॥ श्यामहमाराजायकूरआपलगाईकुब्जासेलगन ॥ फागुनआगिलगीहैबदनबिचतनकेबीचउठीज्वाला॥९॥ ॥ कुब०॥ चैत्रमहीनालागसखीरीसबसखियांपूजैंगणगौरी॥उनकेबालमलावेंहरिहरिदूबजीगुलातोर ॥ मैभीपूजूंबाइगबरज्याबेगमिलावोमोहनचितचोर ॥ गयेद्वारिकप्रीतिकरकुब्जासेहोगयेकठोर ॥ इतनोकारजकरोजिगवरजानहिंतोहाथलेउँमाला॥ १० ॥ ॥कुब० ॥लगामासबैशाखग्यारवांग्रीषमऋतुआईहेली ॥ बिनाश्यामकेबस्त्रसबत्यागगलेडालोसेली ॥ कितौबारवांमासबीचआवैंगेकृष्णमेरीजोअली ॥करकेयोगिनकाभेसजायढूंढूंगीकृष्णकोगलीगली ॥ यहीनेममैलियाजीवबिचराखोपतिमुरलीवाला ॥ ॥११॥कुब० ॥ज्येष्ठमासमेंपड़ैधूपलूलागैअंगमेंराजाबोले ॥ बेगपधारोआपसाँवरोलपटावोमोहिंआयगले ॥ बीतेबारहमासआगयोअधिकमासअंगेजो

भले ॥ लागेजोफरकनअंगसबभुजानेत्रसुखामचले ॥ यहीसकुनपरमिलैंकृष्णबाँटैंजोबधाईसबव्रजवाला॥१२॥ कुब०॥अधिकमहीनेकृष्णपधारेराधेकोदीयादर्शन॥ कसअँगियादीजोटूटकरसुखीहुईमनमैंपरसन ॥ श्यामपधारेआजसखीरीसबव्रजहोरहीहैधन्नधन्न॥बँटैबधाईहोरहीसुखबत्तीसबहीकेमन्न ॥ प्रेमसागरमैंअमृतबरसैतनकीतृषामिटीज्वाला १३ ॥ कुब० ॥ इतिश्रीकृष्णकूबरीसंगबिहारबर्णनबारामासीराधाजीकीसंपूर्णा ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

चिंतावर्णन-कुंडलिया.

चिंताज्वालशरीरवनदावानललगिजाय ॥ प्रगटधुवांनहिंदेखियेउरअंतरधुँधुवाय ॥ उरअंतरधुँधुवायजरैज्यौंकांचकीभट्टी ॥ जरिगयोलोहूमाँसरहीयकहाड़कीटट्टी ॥ कहिगिरिधरकविरायसुनोंहोमोरेमिंता ॥ वैनरकैसेजियतजिन्हैंतनव्यापतचिंता १
इति० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ दानलीलाकाबारामासारंगत० ॥



॥ टेर ॥ श्रीकृष्णको ॥ तूदेरीदधिकोदानगुजरम तवारी ॥ टेर ॥ गोपीकी ॥ अजहुँनलाग्योझान दानगिरधारी ॥ तूंसुनहुँग्वालनीखड़ीहमारीबात॥ दधबेंचनकोनितआवतनितजात ॥ लागेदानहमा रोसोतूंचोरेजात ॥ बहुतदिवसहोगयोहैतोकूंखैरह मारीखात ॥ तुमदानदेतोनहिंहमकोहमदानलियो चात ॥ जोनहिंदेतीदानहमारोतोहोईउत्पात ॥

॥ हेगु० ॥ १ ॥ आजअनोखीबातसुनीमेरीतिदान
कीचाली ॥ नितआवतनितजातगोपिकादानअा
जक्योंपाली ॥ नवादानकाकारणकाहैकहोहमैंवन
माली ॥ बसबोगयोबिरजकोहमरोगईदानकीधा
ली ॥सुनिहौंबातदानकीजोमैंजायकलेजेसाली ॥ ऐ
सीनीतिधरोमतलालाबातजायगीखाली ॥ जीमा
नूंगी०॥२॥ बातजायगीखालीगूजरतूंक्योंकहतीऐ
सी ॥मँग्योदानजबनीतिबखानीतूंहीचोरटीजैसी ॥
आगेदानदियोनहिंकोईनवादानतुमदेहौ ॥ राजक
कीनासबहीदेगाजोयाब्रजमैंरैहौ ॥ जोनहिंदेगीदा
नहमारोतोहिंकरौंमैंकैसी ॥ मटकीतेरीगेंदबनाऊंखे
लूँपोसकाजैसी ॥ हेगूजर० ॥३॥हमकोकहोचोरटी
कान्हाक्यामैंचोरातेरा ॥ कईबारमैंपकड़बँधायाखा
योचोरिदधिमेरा ॥ राजककीनातुमक्याजानोअ
होनंदकेचेरा ॥ जबसेसुरतसंभारीतबसेगऊबछन
कोघेरा ॥ नबादानकामुद्रादीजोपूछैकंसजबबेरा ॥
तनमेंउठिहैसीतमेघकीरुंरुंकँपतशरीरा ॥ जीमानु०

॥ ४ ॥ देतिनहींतूदानहमाराकरतीमुखसोंजोरी ॥
चोरचोरकरदानलेजावैउलटीदेतीचोरी ॥ चेराहम
हैंमातपिताकेतूहैकंसकिछोरी ॥ जावोकंसकोबेगपु
कारोसबमिलब्रजकीगोरी ॥ दानदियेबिनसुनोरि
ग्वालिनकोइनजावोकोरी ॥ दधिकोख्यालमचाऊं
ऐसेज्योंफागुनकीहोरी ॥ हेगूजर० ॥ ५ ॥ ब्रजमें
सबऐसीकहतेहैंकृष्णगोपिकाजोड़ी ॥ हँसीखुसीसे
खेलहतोसोआजकौनबिधितोड़ी ॥ ब्रजमेंरीतिदा
नकीसारीकंसरायकीछोड़ी ॥ आजअनोखीआप
चलावोलीनिचहौकिमिकोड़ी ॥ नंदयशोदाबड़े
वृद्धहैंवाहीदयाहैथोड़ी ॥ औरहोयतोमुहूंकरादेउँमैं
धुवाबाँधकेडोरी ॥ जीमा० ॥ ६ ॥ ऐसोडरक्या
मोहिंबतावैक्याहैकंसकोभैरी ॥ निहचैकंसकरूंरज
धानीजानुउसीकाबैरी ॥ उग्रसेनकोराजकराऊंयही
धामअबठहरी ॥ देहौकैनहिंदेहौदानतुमइसकामुद्दा
देरी ॥ पीछेखबरपड़ेगीतुमकोयाहिसमझतूलेरी ॥

छीनैंसखामटकियातोरीज्योंबैशास्त्रमेंकैरी ॥ हेगुज
र० ॥७॥सुनोकन्हैयाबातहमारीदेहौंदानमैंनाहीं ॥
ऐसीधमकीकहाबतावोहमहुँखडीहैंयाहीं ॥ करना
होयसोकरल्योकान्हाजाउँअगाड़ीनाहीं ॥ हाथल
गावोगारीदेहौंपकड़बंधावोंबाहीं ॥ अबबकबादक
रोमतकान्हाबैठोकदमकिछांहीं ॥ दानबिनातोंय
मिलैजेठकीउड़ैगगनकेमांहीं ॥ जीमानू० ॥८॥ सु
नोसखासबबातहमारीकहतेनंदकुमार ॥ कमरबांध
करलेवोलकुटियाहोहुबहुतहुसियार ॥ छीनलेउसब
दहींदहेंड़ियाखड़ीबकैंगीगँवार ॥ तोड़लेअंगकेआ
भूषणसंकनकरोलगार ॥ जायसखासखियनसेबोल
देतीक्योंनहिंड़ार ॥नहिंतौइंद्रआषाढ़करतज्योंदधि
कीकरौंसँवार ॥ हेगुजर० ॥ ९ ॥ आवतदेखिसखा
सबसखियांयाबिधिकऱ्योउपाय ॥ दहींदहेंड़ियाबी
चधरीहैंसारीसेलुकाय ॥ दांवएकनहिंलागसखाको
रपटझपटबहुआय ॥ एकसखीमोहनपैचालीमुर

लीलईछिनाय ॥ नाकपकड़अरुगालमरोड़ेलेतेरो दानचुकाय ॥ नैननझड़सावनकोलगगयोअबक्यों मनमुसकाय ॥ जीमानू० ॥ १० ॥ मोहनफेरस खासोंबोलेचालोसाथहमारी ॥ सखासबैसंगहैंमोह नकेघेरींसखियांसारीं ॥ ढोरफोरकछुखायगयेहैंको न्हीअंगउघारी ॥ देखगूजरीराजककीनायाविधिले यमुशरी ॥ कह्योदानबिनमिलैंजेठकीदेखोक्यागत थारी ॥ अबभादौंकोकीचमचायोपहलेक्योंनबिचा री ॥ हेगूजर० ॥ ११ ॥ पहलेनाहिंबिचारीमोह नतुमबाजोगोपाल ॥ तुमहममहिलमिलखेलैंमोहन हमगोपीतुमग्वाल ॥ आजुअनीतिकरीतुमहमसे खूबकरीप्रतिपाल॥ अबैपुकारूंजाययशोदालेहौंआ पसँभाल ॥ एसोदांवपरैजोतोपरलगैनफेरूंताल ॥ ज्योंमकडीआसोजमेंनितउठगूंथैजाल ॥ जीमानू० ॥ १२ ॥ गूंथेसबमिलिजालगूजरीराखोपूरीलाग॥ जायपुकारोमातयशोदागाज्योसबहीराग ॥ छीन

बाँसुरीतुमहिंजगायोसञमिलिकालोनाग ॥ अबैउ
जेलीरहोकिसिबिधिपहलेलाग्योदाग ॥ आदरतुम
कोनहींमिलैफिरलगैनतेराथाग ॥ ज्योंकार्तिकइंदर
कोदुनियांकैनकोईआग ॥ हेगूजर० ॥ १३ ॥
आजकहोआदरनहिंतुम्हरोसुनोजगतकेराय ॥ उस
दिनयादहमारीमोहनभुलोमतचितलाय ॥ माखन
चोरलियोघरभीतरलेरयशोदाधाय ॥ हाथजोड़तुम
हमसेंबोलेग्वालिनबेगछिपाय ॥जराढीलहमकोल
गिमोहनघुसेबिबरमेंजाय ॥ ज्योंअगहनमेंनागदे
वताघुसेजिमीकेमाय ॥ जीमानूगी० ॥ १४ ॥ मैंहूं
कुँवरलाड़लोउनकोवाहैमेरीमाय ॥मोरैकूटैमाताजा
नौतिनकीक्यादरसाथ ॥ यहीताड़नासमझतनाहीं
यामेंसूंफलपाय ॥ मातपिताकेबिनाताड़नाबालक
भयनहिंखाय ॥ मातपितासेप्रीतिपुत्रसेमातारखैसि
वाय ॥ रामनाथकरजोड़कहतहैकरोसदाइसहाय ॥
॥ हेगूजर० ॥ १५ ॥ आपकहोबिनताड़नाबालकभ
यनहिंखाय॥जिनसेजायपुरीहौसोईदेईसबैसुनाय ॥

ज्योंतुमरीतिकरीसबहमसेकहिहौंसबैबनाय ॥ देहैंतुमकोपूरताड़नातेरीयसुमतिमाय ॥ मैंभीजानूंग्वालिनऊपरराखैंप्रीतिसवाय ॥ शामनाथकरजोड़कहतहैकरहेमेरीसहाय ॥१६॥ इतिश्रीदानलीलाकोबा०सं०॥

॥ वामनलीला-रागिनीखम्माच ॥

हरितुमबलिछलिकेकाकीन ॥ बांधनगयेबँधायेआपुहिबँड़ीसयानीकीन ॥ लियेलकुटियाद्वारेठाढ़ेनिशिबासरआधीन ॥ तीनपैगपृथ्वीकेकारणबलिकोसर्बसदीन ॥ सूरदासप्रभुबलिकीबिनती हरिचरणनचित दीन ॥ १ ॥

अथ दंडदेनेके गुण.

दोहा-प्यार किये बहु दोष हैं, दण्ड किये बहु सार॥
पुत्र शिष्यहूको करे, ताते दंडविचार ॥

अथ तितिक्षालक्षण ॥

दोहा-आतपशीतक्षुधातृषा, इनकोसहनस्वभाव ॥
ताहितितिक्षाकहतहैं, कोविदमुनिवरराव॥१॥

॥ यशोदाश्रीकृष्णकी बारामासी ॥

रंगतखेलमें ॥ ॥ टेर ॥ यशोदाकी ॥ ॥ आ
छोउजागरजनम्योंलाड़लातूमेरेकान्हैया ॥ टेर
कृष्णकी ॥ कैसोउजागरगायोलाड़लोयशोदामैया॥
कुलहिंउजागरपुत्रजनमिकैअच्छोनांवकढ़ायो॥ दू
धदहीकीकमीनतेरेक्योंलूटलूटदधिखायो।बड़ेघरन
कोजायोबाजैजगमैंचोरकहायो ॥ सखीउलहनोदेग
इमोकोऐसोबचनसुनायो ॥ आजअनीतीकरीसब
गावैबालकनहिंदरसायो ॥ बनमेंतेजकन्हैयातेरोज्ये
ष्ठसुरजज्योंगायो ॥ तूंमान० ॥ १ ॥ सखियनतेज
सुरजज्योंगायोयातेरीपुन्याई ॥ तुझकोउलनादेगईं
सखियाँसबीसांचदरसाई ॥ अबहमतुमकोक्याकहैं
माताजोधमकीदिखराई ॥ एकअरजसुनलेमेरीमाई
याकोजराभरगाई ॥ घेन्योगऊचरावतमोकोसबमि
लिऐसेआईं ॥ जैसेनदीअचानअसाढ़ेदूरदेशकीना
ई॥ हेसुन० ॥ २ ॥ बहुतदिवसलगदेवमनायोएक

पुत्रतूपायो ॥ सोभीवड़ोउजागरजनम्योजगमेंआं
खीआयो ॥ सखियांबचनसखीकोकहगईतैंतेरोदर
सायो ॥ सुनीबातकोफेरनिजायोदेखीगोपीअंगव
तायो ॥सखियाकह्योकन्हैयाऐसोआपरपटदधिखा
यो ॥ज्योंसावनकीखुरडमायनेइंद्रआकरेआयो ॥
रेतू० ॥ ३ ॥ नहिंमानैतुमसाँचहमारीयेकआजकी
गावै ॥ येसखियांनितदहीबेचनेवहीडगरनितजा
वै ॥ मैंजाउंतेरीधेनुचरावननितउठमोहिंखिजावै॥
एकएककहोयघरसेनिकसैंघटारूपबनिआवै ॥ एकस
खीयामेंअतिचपलाचढ़चढ़बचनसुनावै ॥ ज्योंभा
दौंकीघटाबीचमेंदामिनसीदरसावै ॥ हेसुन० ॥४॥
हँसीखुसीसेंघरसैंनिकसैधेनुचरावनजावै ॥ संगतते
रीरहैग्वालियाऔरअकिलक्योंआवै ॥ बुंदस्वाति
कीएकहोयहैसंगतकाफलपावै ॥ मोतीजहकरपूरबं
समेंलोचनफेरकहावै ॥ कामकरैंतेरेसंगीसाथीतेरो
नांवधरावै ॥ स्वातिबुंदआश्विनकेमोतीज्योंपानीउ

तरावै ॥ हेतूमा० ॥ ५ ॥ संगतमेरीरहैग्वालिया
औरकहाँसेआवै ॥ तूभीधेनुचरावनमोकोग्वाल्यो
करभिजवावै ॥भूंखप्यासअरुधूपसहूँमैंतूभीमोहिंदु
रकावै॥ कहैंजगतमेंकुँवरलाड़लोकपटरूपबतलावै॥
ऐसीकरूंकमाईतेरीरतीजायनहिंपावै ॥ ज्यांकीर्ति
ककीसाखसवाईकरसालोगकमावै ॥ हेसुन० ॥६॥
धेनुचरावनतूंक्योंजावैतेरेसमनहिंकोय ॥ बिनारी
तिकीबातकरैसोदेइईजतीखोय ॥ कपटरूपकेसेब
तराऊंकहूँसीखकीतोय ॥ मेरोकपटकन्हैयातोपरर
तीकभीनहिंहोय ॥ ज्योंअगहनमेंफूलबबुलको
परखनदीखोकोय ॥ रेतूमान० ॥ ७ ॥ कहैंसी
खकीफिरघुरकावैंऐसीक्यामहतारी ॥ मैंक्यापुत्रतु
म्हारोनाहींखबरनपूँछीम्हारी ॥ सखियांबातकहैंसो
साँचीझूँठोहैंगिरधारी ॥ बनमेंजाउँसखीडरवावैघर
मेंयोंदुखभारी ॥ मुझकोतोबहुतीरिसलागैबातयशो
दाथारी ॥ ठंढेजलकीछांटपूसमेंवैसीलागैखारी॥हे

सुनमा० ॥ ८ ॥ साँचकहोमनमोहनलालाज्योंबन
मेंबरताई ॥ क्याक्याहालसखीनेबरन्योकयाकयाक
ऱ्योकन्हाई ॥ साँचकहूँसखियनकोलालातोबिनमैं
धमकाई ॥ कहूँसीखकीलगैतीरसीयातेकैसेगाई ॥
प्यारोलागैकुँवरलाड़लोमैंहूंतेरीमाई ॥ सूरजप्यारो
सदामाधमैंऐसोलगैकन्हाई ॥ रेतूमान० ॥ ९ ॥ सु
नहुबातमेरीमातयशोदाकहूंसाँचबरताई ॥ घेऱ्योग
ऊचरावतमेरीमुरलीलईछिनाई ॥ नाकपकड़मेरोगा
लमरोड्योनिजऱ्यांदेख्योआई ॥ तबओछोनहिंऊ
क्योंमाईतेरोपूतकन्हाई ॥ पवनरूपहोइडोल्योफिर
ग्योमटकीसबपटकाई ॥ ज्योंफागुनमेंपत्रनींमकाप
टकैपवनसदाई ॥ हेसु०॥१०॥साँचकहेतेसुनोकन्है
याहमैरीसनहिंआत ॥ साँचझूंठकीखबरपड़ैजदसुनै
दुतरफीबात॥सखियांसबलहोयतोहिंछांड्योतुम्हेंदि
खायोहात ॥ दिनकोरूपकन्हैयासाजैनिजसखिया
दरसात ॥पहलेसबलफेरहोइइसमैतुल्यघटतलगजा

त ॥ ज्यादाफेरबरोबरआगेघटैचैत्रसेरात ॥ रेतूमा० ॥ ११ ॥ सांचकहूँफिरबांधघुमायोमोहिंयमुनाकेतीर ॥ सबसखियामिलबहुघुरकायोनैनाढरकयोनीर ॥ तबमैंझीरझीरकरडारासबसखियनकेचीर ॥ सखियां डरन्नतरायोतेशेमनमेंमेरेधीर ॥ मेरेपोषतुमारोमाता तेरेमेरीपीर ॥ ज्योंबैशाखधूपमेंपोषणलघुवृक्षनको नीर ॥ हेसुनमा० ॥१२॥ तेरेपोषहमारोलाला खुसीसोंबनमेंजावो ॥ सखासभीसँगलेयतुमारीआछी धेनुचरावो ॥ जैसेघरकेछोराबाजोवैसीसोभानावो ॥ प्यारेलागोसभीबिरजको उलहनतुममतल्यावो ॥ सखियांदरसकारणेआवैंहँसीखुसीबतलावो ॥ रामनाथकरजोड़कहतहैंआछीमहररखावो ॥ रेतु० ॥१३॥ तेरेहुकुमसेबनमेंजाऊं एकअरजसुनलीजे ॥ सखियांफेरिकैबातबनावैसोसबहीसुनलीजे ॥ सांचझूँठकी खबरपड़ेबिन वामेंचितनाहिंदीजे ॥ बिनाखबरचित दियेयशोदाअलबतदिलमेंछीजे ॥ जैसीमहरआज

तुमराखीऐसीफेररखीजै ॥ रामनाथकरजोड़कहतहै सायसदाईकीजै ॥ हेसुन० ॥ १४ ॥ इतिझगडाय शोदा श्रीकृष्णकीबारामासीसंपूर्णा ॥ ॥

न्रसिंहजन्मोत्सवलीलारागिनीशहाना।

शुक्लपक्षबैशाखमासमेंचौदसिनरहरिजन्मलिये ॥ टेक ॥ खंभफोरिहिरनाकुशमाऱ्योतीनलोकमें गर्जरहे ॥ चोवाचंदनऔरअरगजाबीथिनकीचमचाय रहे ॥ सुरनरमुनिसबप्रेमबिवसशयेसुखसंपति सब छायरहे ॥ संतदासजीकोभक्तिदानदियोश्रीन्रसिंह बहुकाजकिये ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ चातुर्वण्यबलवर्णन ॥

दोहा–विद्या बल है विप्रको, राजाको बल सैन॥
धन वैश्यन बल शूद्रको, सेवाही बलऐन॥

॥ श्रीकृष्णचन्द्रकीजन्मपत्रीप्रा० ॥

नंदजूमेरेमनआनंदभयो॥मैंसुनिमथुरासेआयों ॥ ल

गनसाधिज्योतिषकोगिनिकैचाहततुम्हेंसुनायौं ॥
नंद० ॥ १ ॥ संबतसोमनामशुभभादौंकृष्णपक्षसौं
नामधरऱ्योहै ॥ हैआठमबुधवाररोहिणीहर्षणयोग
पऱ्योहै ॥ नंद० ॥ २ ॥ वृश्चिकलगनउच्चकेउडुपति
तिनकोअतिशुभकारी ॥ हलचतुरंगचढ़ैंगेइनकेहोंगे
रसिकबिहारी ॥ नंद० ॥३॥ चौथेराहुकन्याकेदिन
पतिमहिमंडलयहजीतैं॥ करैंबिनाशकंसमातुलको
निश्चयकुछदिनबीतैं ॥ नंद० ॥ ४ ॥ पंचमबुधक
न्याकेसोहैंपुत्रबढ़ैहैसोई ॥ सुखमेंशुक्रतुलाकेसंयुत
शत्रुबचैनहिंकोई ॥ नंद० ॥ ५ ॥ ऊंचनीचयुवतीच
हुभोगैंसप्तमराहुपऱ्योहै ॥ भावभवनमेंमकरमहीश्व
रईश्वरसबहिंभऱ्योहै ॥ नंद०॥६॥ श्यामबरणमेंकेतु
लगनमेंमनचीतेएकरिहैं ॥ बालपनेकेलक्षणइनकेचो
रीमेंचितधरिहैं ॥ नंद० ॥ ७ ॥ नवनिधिबसैलाभ
मेंइनकेमीनबृहस्पतिकेरी॥ पृथ्वीभारउतारनहारेक
हतथकितमतिमेरी ॥ नंद० ॥ ८ ॥ यहसुनिनं

दमहरिआनंदेपूजिगर्गपहिराये ॥ असनबसनगजवाजिसभीधनभूभंडारलुटाये ॥ नंद० ॥९॥ बंदीजनयशगावतपावतसंतनकेमनभाये ॥ ब्रजजन्मेश्रीकृष्णमहोत्सवसूरबिमलयशगाये ॥ नंदजूमेरेमनआनंदभयोमैंसुनिमथुरासेआयों ॥१०॥ इतिश्री०

धनकी प्रशंसा

दोहा–जाहिअर्थतेहिमित्रअरु, बन्धुआदिसबतात॥
सोजीवतहैजगतमें, सोइपुरुषगनिजात ॥

स्वर्गनिबासियोंके चिन्ह

दो०स्वर्गी चिन्ह मनुष्यके, यही चार पहिंचान॥
मधुर बचन देवारचन, दान विप्रको मान ॥

॥ अथ शिवस्तुतिअष्टकप्रारंभः ॥

श्रीःऐसारेध्यानशिवहरिहरकाहांरेकरआसनबाघंबरका ॥ अगड़बंअगड़बंडिमकडिमकडिमूबाजेडमरू

शिवशंकरका॥टेक॥ अंगबिभूतिलगायेसदाशिवहाथलियेनिशिदिनगोला॥ कैलासछोड़करलौटेमसानमेंऐसाहैशंकरभोला ॥ १ ॥ ऐसारे० ॥ अगड० ॥ खोपरीमेंभोजनकरतागिरिजासोहैंअर्धंगा ॥ सुरनरमुनिवरध्यानधरतहैंकोईदेवताहैंअदभूता ॥ २ ॥ ऐसारे० ॥ अगड़० ॥ त्रिशूलसेत्रिपुरासुरमार्‍योतीनलोकमेंअधिकारी ॥ नागनकेरेकुँडलबिराजेचढ़ैबैलकीअसवारी ॥ ३ ॥ ऐसारे० ॥ अग० ॥ कूंडीअरुशोंटागौराघोटपिलावैनिशिदिनभंगा॥गलेरुंडकीमालबिराजेजटाजूटशिरबहेगंगा ॥४ ॥ ऐसारे० ॥ अगड़० ॥ विषसेकंठहुवाजबनीलारामनामसुखसेंबोला॥ठंढाशीतललहेरहुवाजबप्रेममगनमेंशिवडोला ॥ ५ ॥ ऐसारे० ॥ अगड़० ॥ जोकोइमांगेउनकोदेवैऐसाहैशंकरभोला ॥ आकधतूराआपअरोगैफाँकैभांगभरभरझोला ॥६ ॥ ऐसारे० ॥अग० ॥ शिंगीशेलीशिवकोसोहैहाथलियेझोलीचंगा ॥ बहू

रँगकरशिरछत्रबिराजेंओढेगुदडीनवरंगा ॥ ७ ॥ ऐसारे० ॥ अगड़० ॥ यकरानीतोरेगौरापारबतीदूजीरानीशिवअर्द्धंगा ॥ तीजीरानीअसलभिलादेजटाजूटशिरहैगंगा ॥ ८ ॥ ऐसारे० ॥ अगड़० ॥ यकरानीतोरेचंदवधरतीदूजीजलभरलावेगा ॥ तीजीरानीधूपदीपले चौथीजोतजलावेगा ॥ ९ ॥ ऐसारे० ॥ अगड़० ॥ तुकारामउस्तानामोहैसाहबहैसोनहुरंगा ॥ देखदाखलापोथीपुराणमेंमतकरबातांअड़भंगा ॥ ॥ १० ॥ ऐसारे० ॥ अगडबंअगड़चंडिमकडिमकडिम्बाजेडमरूशिवशंकरका ॥ इतिशिवस्तुतिअष्टकसमाप्त ॥

नरकवासियोंके चिन्ह.

दो० अतिहिकोपकटुबचनहूं, दारिद्रनीचमिलान ॥
स्वजनबैरअकुलिनटहल, यहषटनरकनिशान ॥

अथ मुक्तिका उपाय ॥

सो० मुक्तिचहौजोतात, विषयनकोत्यजुविषसरिस ॥
दयासरलताशौच, क्षमासत्यपियअमियसम ॥

॥ अथ संकटमोचनहनुमानाष्टक ॥



श्रीगणेशाशयनमः ॥ ॥मत्तगयंदछंद ॥ ॥ बालस
मैरविभक्षकियोतव ॥ तीनहुँलोकभयोअंधियारो ॥
ताहिसोंत्रासभईजगकोयह ॥ संकटकाहुसोंजातन
टारो ॥ देवनिआनिकरीबिनतीतव ॥ छांडिदियोर
बिकष्टनिवारो ॥ कोनहिंजानतहैजगमेंयह ॥ संक
टमोचननामतुम्हारो ॥ १ ॥ बालिकित्रासकपीशब
सेगिरि ॥ जातमहाप्रभुपंथनिहारो ॥ चौंकिमहामु

निशापदियोतब ॥ चाहियकौनबिचारबिचारो ॥ कै
द्विजरूपलिवायमहाप्रभु ॥ सोतुमदासकोशोकनि
बारो ॥ कोन० ॥ २ ॥ अंगदकेसँगलेनगयेसिय ॥
खोजकपीशहुबैनउचारो ॥ जीवतनाबचिहौहम
सोंजु ॥ बिनासुधिलेयइहांपगुधारो ॥ हेरिथकेतट
सिंधुसबैतब ॥ लेसियकीसुधिप्राणउबारो ॥ कोन
हिं० ॥३॥ रावणत्रासदईसियकोतब ॥ राक्षसिसों
कहिशोकनिबारो ॥ ताहिसमयहनुमानमहाप्रभु ॥
जायमहारजनीचरमारो ॥ चाहतिसीयअशोकसु
आगिसों ॥ दैप्रभुमुद्रिबिषादनिबारो ॥ कोनहिं०
॥ ४ ॥ शक्तिलगीउरलक्ष्मणकेतब॥प्राणतजेसुतरा
वणमारो ॥ लेगृहवैद्यसुषेणसमेततभी ॥ गिरिद्रोण
सुबीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदईतब ॥ ल
क्ष्मणकेतुमप्राणउबारो ॥ कोनहिं० ॥ ५ ॥ रावणि
युद्धअजानकियोतब ॥ नागकिपाशसबैशिरडारो ॥
श्रीरघुनाथसमेतसबैदल॥मोहभयोतबसंकटभारो॥

आनिखगेशतबैहनुमानजु ॥ बंधनकाटिसुत्रासनिबारो ॥ कोनहिं० ॥ ६ ॥ बंधुसमेतजबैअहिरावण ॥ लैरघुनाथपतालसिधारो ॥ देविहिँ पूजिभलीबिधिसोंबलि ॥ देहुसबैमिलिमंत्रबिचारो ॥ जायसहायभयेतबहीं ॥ अहिरावणसैन्यसमेतसँहारो ॥ कोनहिं० ॥ ७ ॥ कार्यकियेबड़देवनकेतुम ॥ बीरमहाप्रभुदेखबिचारो ॥ कौनसुसंकटमोरगरीबको॥जोतुमसोंनहिंजातहिटारो ॥बेगिहरोहनुमानमहाप्रभु ॥ जोकछुसंकटहोयहमारो ॥ कोनहिं० ॥ ८ ॥दोहा॥ लालदेहलालीलसे, अरुधरिलाललँगूर ॥ बज्रदेहदानवदलन, जयजयजयकपिशूर ॥ १॥ यहअष्टकहनुमानको, बिरचिततुलसीदास ॥ गंगादासजुप्रेमसों, पढ़ैहोयदुखनास ॥२॥ इतिश्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृतसंकटमोचनहनुमानाष्टकंसंपूर्णम्॥

स्त्रियोंके स्वाभाविकदोषविषे

दो०मायामिथ्यामूरखता, साहसलोभप्रभाव ॥
अशुचिनिर्दयीनारिकर, सहजहिहोतस्वभाव ॥

॥ अथ बजरंगचालिसीलिख्यते ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बुद्धिहीनतनजा
निकै, सुमिरौंतनयसमीर ॥ बलबुधिबिद्यादेहुमो
हिँ, संपतिसहितशरीर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ॥ जय
हनुमानज्ञानगुणसागर ॥ जयकपीशतिहुँलोकउजा
गर ॥ रामदूतअतुलितबलधामा ॥ अंजनिपुत्रपवन
सुतनामा ॥ महाबीरबिक्रमबजरंगी ॥ कुमतिनिवा
रसुमतिकेसंगी ॥ कंचनवरणबिराजकपीशा ॥ कुंड
लकाननभेषहैकीशा ॥ हाथबज्रउरभुजाबिराजे ॥ काँ
धेमंजुजनेऊराजे ॥ शंकरसुवनअंजनीनंदन ॥ तेज
प्रतापमहाजगवंदन ॥ बिद्यावानगुणीअतिचातुर ॥
भक्तकाजकरनेकोआतुर ॥ प्रभुचरित्रसुनबेकोरसि
या ॥ रामलखणसीतामनबसिया ॥ सूक्षमतनधरि
सियलखआयो ॥ बड़ेरूपधरिलंकजलायो ॥ भीमरूप
धरिअसुरसँहारा ॥ श्रीरघुनाथकेकाजसँवारा ॥ आ
निसंजीवनिलखनजीवाए ॥ रामचंद्रतबकंठलगाए ॥

रघुबरकीन्हेबहुतबड़ाई॥ अहोतातभारतसमभाई ॥ सहसबदनतुम्हरेगुणगायो ॥ असकहिरघुपतिकंठल गायो ॥ सनकादिकब्रह्मादिमुनीशा ॥ नारदशारद सहितअहीशा ॥ यमकुबेरदिशिपालजहांते ॥ कबि कोबिदकहिशकयँकहांते ॥ तुमउपकारसुग्रीवहिंकी न्हा॥रामामिलायराजपददीन्हा ॥ तुम्हरोमंत्रबिभी षणमाना ॥ लंकेश्वरभयेसबजगजाना ॥ जगस हस्रयोजनजोभानू ॥ लीलाताहिमधुरफलजानू ॥ प्रभुमुद्रिकालेइमुखमाहीं ॥ जलधिलांघिगयेअचर जनाहीं ॥ दुर्गमकाजजगतमेंजेते ॥ सुमिरतसिद्धि होंयसबतेते ॥ रामदुवारेतुमरखवारे ॥ बिनुअज्ञान होइपैठारे॥सबसुखलहेतुम्हारेशरणा ॥ बेदपुराणमु निनसोंबरणा॥आपनतेजसँभारेआपै ॥ तीनोंलोक हाँकतेकांपै॥भूतपिशाचनिकटनहिँआवे ॥ महाबी रजबनामसुनावे॥ नाशैरोगहरैतनपीरा॥ भजेनिरंत रहनुमतबीरा॥संकटतेहनुमानछोड़ावे ॥ मनबचक

मेंध्यानजोलावे ।।सबपररामराजशिरताजा ।। ताको
कामहेतसोछाजा ।। औरमनोरथजोकोइलावै ।। मन
वांछितफलसोनरपावै।।चारउयुगपरतापतुम्हारो ।।
हैपरसिद्धजगतउजियारो।।रामपियारेशंभुदुलारे।।
साधुसंतकेतुमरखवारे।।अष्टसिद्धिनवनिधिकेदाता।
असबरदीनजानकीमाता।।रामरसायनतुम्हरेपासा।।
कृपाकरहुदीनलखिदासा।।तुम्हरेभजनरामजीपावें।
जन्मजन्मकोदुखबिसरावें।।सबसुखमिलेतुम्हारेशर
णा।।तुम्हरेसुयशबिमलमनबरणा।।निमश्चैनेमभक्ति
तवभाई।।अंतकालरघुपतिपुरजाई ।। औरदेवताचि
तमहिंधरई।।हनुमतसेइसकलसुखकरई ।। संकटहरैं
हरैंतनपीरा ।। भजैनिरंतरहनुमतबीरा ।। संकटतेह
नुमानछुड़ावे ।।मनबचकर्मध्यानजोलावे ।। जैजैजै
हनुमानगोसाँई ।। कृपाकरहुगुरुदेवकिनाँई ।। यहि
शतवारपढ़ैजोकोई।। छूटेबंदिमहासुखहोई ।। जोको
इपढ़बजरंगचालीसा ।। होइहिसिद्धिशाखिगौरी

शा ॥ दोहा ॥ पवनतनयसंकटहरण, मंगलमूरति
रूप ॥ रामलखणसीतासहित, बसहुहृदयसुखरू
प ॥ इतिश्रीबजरंगचालिसीसंपूर्णा ॥ ॥

॥ रामनवमीकीप्रशंसा ॥

॥सोरठा॥शेषनपावहिंपार, रामजन्मउत्सवमहा ॥
आईकरनजुहार, मुदमंगलतिहुँलोककी ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीगणपतिकी आरती ॥

श्रीगणेशायनमः॥ ॥टेर॥ ॥ गणपतिकीसेवा
मंगलमेवापूजतदेवाबिघ्नटरैं ॥ तीनलोकतेंतीसदेव
ताखड़ेद्वारपैअरजकरैं ॥ टेर ॥ ऋधिसिधिदक्षिणबा
मखड़ीहैंउरआनँदसेचँवरकरैं ॥ धूपदीपअरुलियेआ
रतीभक्तखड़ेजयकारकरैं ॥ गणप० ॥ १ ॥ गुड़के
मोदकभोगलगतहैं मूषकबाहनचढ़योसरे ॥ सौम्य
रूपसेयागणपतिकोबिघ्नभाजकैकूपपरैं ॥ गण० ॥
॥ २ ॥ भाद्रमासअरुशुक्लचतुर्थीदिनदुपहरकोपूरप

रै ॥ लियेजन्मगणपतिप्रभुजीनेदुर्गामनआनंदभ
रै ॥ गणप० ॥ ३ ॥ अद्भुतबाजाबज्योइंद्रकोदेवब
धूजहँगानकरैं ॥ श्रीशंकरकेआनँदउपज्योनामसु
नेसबविघ्नटरैं ॥ गणप० ॥ ४ ॥ आनँदबिधाताबै
ठेआसनइंद्रअप्सरानिरतकरैं ॥ देखबेदब्रह्माजीजा
कोबिघ्नविनाशकनामधरैं ॥ गणप० ॥ ५ ॥ एक
दंतगजबदनबिनायकत्रिनयनरूपअनूपधरैं ॥ पग
थंभासाउदरपुष्टहैदेखिचंद्रमाहास्यकरैं ॥गण० ॥६॥
देसरापश्रीचंद्रदेवकूंकलाहीनततकालकरैं ॥ चौद
लोकमैंफिरैगणपतीरणतभँवरगुंजारकरैं ॥गणप० ॥
॥ ७ ॥ उठिप्रभातजबकरैध्यानकोइवाकेकारयसबै
सरैं ॥ पूजाकालेगावआरतीजाकेशिरयशछत्रफिरै
॥ गण० ॥ ८ ॥ गणपतिकीपूजापहिलेकरिकैका
मसबैनिर्बिघ्नसरैं ॥ श्रीपरतापगणपतीजीकेहाथजोड़
अस्तुतीकरैं ॥गणपतिकीसेवामंगलमेवा० ॥ ९ ॥

॥ इतिश्रीगणपतीकीआरतीसं० ॥

॥ आरतीलक्ष्मणबालाजीकी ॥

जयजयबोलोसाधोलछमणबालाकी ॥ बालाकीवो नँदलालाकी ॥ टेर ॥ दक्षिणदेशसवालखपर्बत ॥ जगमगजोतदिवालाकी ॥ ज० ॥ १ ॥ तपतीमेंसी तारामबिराजो ॥ चौकीहनुगतबालाकी ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ शेषाचलपरआपबिराजो ॥ चौकीहनुमत बालाकी ॥ ज० ॥ ३ ॥ ईजबीजदोयपोलियाबिरा जैं ॥ गहरीधौंसनगाराकी ॥ ज० ॥ ४ ॥ बाला जीकेरथसिंहासन ॥ कलँगीबनीहीरालालाकी ॥ ज० ॥ ५ ॥ बृहस्पतिवारजरीकोकामुहै ॥ ऊपरमौज दुसालाकी ॥ ज० ॥ ६ ॥ शूकरवारदूधकोन्हावन ॥ मौजबनीमोहनमालाकी ॥ ज० ॥ ७ ॥ देश देशकेयात्रीआवैं ॥ मारपड़ीमृगछालाकी ॥ ज० ॥ ॥ ८ ॥ आशानंदगरीबतुम्हारो ॥ पतिराखोकंठीमा लाकी ॥ ज० ॥ ९ ॥ जैजैबोलोसाधोलक्ष्मणबा लाकी ॥ बालाकीवोनँदलालाकी ॥ हरिहरिदश

रथसुतनँदलालाकी ॥ हरिहरिपरदेशारखवालाकी ॥ हरिहरिघाटबाटरखवालाकी ॥ ज० ॥ १० ॥ इति श्रीलक्ष्मणबालाजीकीआरतीसंपूर्णा ॥ ॥

॥ आरतीलक्ष्मीरमणकी ॥

जयलक्ष्मीरमणाश्रीलक्ष्मीरमणा ॥ शरणागतजनशरणागोबर्धनधरणा ॥ टेर ॥ जयजययमुनातटनिकटप्रकटपट्टवेषा ॥ अटपटगोपीकुचतटपटहरनटभेषा ॥ जय० ॥ १ ॥ जयमुरलीरवतरलीकृतगोपीलीले ॥ तवभक्तिमेंभवतुब्रजललनाईसे ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ जयजयभगवन्मघवन्कंसारे ॥ पतितंपतितंकृपयातारेसंसारे ॥ ज० ॥ ३ ॥ जयजयगोगोपीप्रतिपालकबंधो ॥ देवकिमाताकृष्णकृपासिंधो ॥ ज० ॥ ४ ॥ जयजयभक्तजनप्रतिपालकचिरजीवीजिष्णो ॥ मामुद्धरदीनोद्धरधरणीधरविष्णो ॥ ज० ॥ ५ ॥ जयजयकृष्णस्वामीनिजपदरसगामें ॥ कुरुकरुणांकुरुकरुणांदासखारामे ॥ जयलक्ष्मीरमणा० ॥ ६ ॥ इ० श्रील० आ०

॥ आरतीश्रीकृष्णचन्द्रजीकी ॥

आरतीयुगुलकिशोरकीकीजे ॥ तनमनधननेवछावरकीजे ॥ टेर ॥ रविशशिकोटिबदनकीशोभा ॥ ताहिनिरखमेरोमनलोभा ॥ आ० ॥ १ ॥ गौर श्यामसुखनिरखतरीझे ॥ प्रभुकोरूपनैनभरलीजे ॥ ॥ आरती० ॥ २ ॥ कंचनथालकपूरकिबाती ॥ हरिआयेनिर्मलभइछाती ॥ आ०॥३ ॥फुलनकिसेजफुलनगलमाला॥ रतनसिंहासनबैठेनँदलाला॥ ॥ आर० ॥ ४ ॥ मोरमुकुटकरमुरलीसोहै ॥ नटबरबेषदेखमनमोहै ॥ आ० ॥ ५ ॥ ओढ़ेनीलपीतपटसारी ॥ कुंजबिहारीगिरिवरधारी ॥ आरती० ॥ ॥ ६ ॥ श्रीपुरुषोत्तमगिरिवरधारी ॥ आरतिकरतसकलब्रजनारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ नँदनंदनवृषभानुकिशोरी ॥ परमानंदस्वामियहजोरी ॥ आरतियुगुलकिशोर० ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णकीआरतीसंपूर्णा॥

॥ आरतीजानकीनाथकी ॥

जयजयजानकिनाथा ॥ श्रीरघुनाथा ॥ दोउकरजो

इबिनयप्रभुमेरीसुनुदाता ॥ टेर ॥ तुमरघुनाथमेरे प्राणपितामाता ॥ तुमहींसज्जनसंगतिभक्तिमुक्ति दाता ॥ जय० ॥ १ ॥ चौरासीप्रभुफंदछुटावोमे टोयमकीत्रासा ॥ निशिदिनप्रभुमोहिंराखोअपने सँगसाथा ॥ जय० ॥ २ ॥ सीतारामलक्ष्मणभरत शत्रुहनसंगैचारोभैया ॥ जगमगज्योतिबिराजतशो भाअतिहिलहनिया ॥ जय० ॥ ३ ॥ हनुमतनादबजा वतनेवरकोठिमकाता ॥ सुबरणथालआरतीकरती कौसल्यामाता ॥ जय० ॥ ४ ॥ क्रीटमुकुटकरधनुष बिराजतशोभाअतिभारी ॥ मनीरामदरशनकोपलप लबलिहारी ॥ जय० ॥ ५ ॥ इतिजानकीनाथ०

॥ फकीरलक्षण ॥

दोहा– फाकाफक्कफराकदिल, आसनदृढ़गंभीर ॥
फिकिरिफारिकफनीकरै, तिस्कोकहीफकीर ॥ १ ॥

॥ आरतीशिवजीकी ॥

जयशिवओंकाराहरशिवओंकारा ॥ब्रह्माविष्णुसदा

शिवअरधंगीधारा॥टेर॥ एकाननचतुराननपंचानन राजैं॥हंसासनगरुड़ासनवृषबाहनसाजैं॥जयशि०॥ ॥१॥ दोभुजचारचतुर्भुजदशभुजतेसोहैं ॥ तीनिरूपनिरखतत्रिभुवनजनमनमोहैं॥जयशि०॥२॥अक्षमालबनमालरुंडमालाधारी ॥ चंदनमृगमदचंद्रभालहैशुभकारी ॥ जयशि० ॥३॥ श्वेतांबरपीतांबरबाघांबरअंगे॥ सनकादिकप्रभुतादिकभूतादिकसंगे ॥ जयशि० ॥ ४ ॥ करमध्येहिकमंडलुचक्रत्रिशूलकेधरता ॥ युगकरतायुगभरतायुगसंहारकेकर्ता ॥ जयशि० ॥५॥ ब्रह्माविष्णुसदाशिवजानतअबिबेका॥ प्रणवाक्षरकेमध्यएतीनोएका॥ जैशि० ॥६॥ त्रिगुणस्वामिकीआरतिजोकोइगावे ॥भनतशिवानंदस्वामीमनबाँछितफलपावे॥ जयशि० ॥७॥ इतिश्री०

कुचबर्णन.

दोहा–चक्रबाककुचबरनिये, केशवकमलप्रमान ॥
शिवगिरिघटमठगुच्छफल, शुभइभकुंभसमान

॥ अथ शिवस्तुतिअष्टक २ ॥



जयजयहेशिवपरंपराक्रमओंकारेश्वरतुमशरणं ॥ न
मामिशंकरभवानिशंकरहरिहरशंकरतुमशरणं ॥
॥ टेर॥ दशभुजमंडनपंचबदनशिवत्रिनयनशोभित
शिवसुखदा ॥जटाजूटशिरमुकुटविराजैश्रवणकुंडल
अतिरमणा ॥जयजयहे०॥१॥ ललाटचमकतरजनी
नायकपन्नगभूषणगौरीशा ॥ त्रिशूलअंकुशगणपति

शोभाडिमडिमबाजतधुनिमधुरा ॥ ज० ॥ २ ॥ भ
स्मबिलेपनसर्वांगेशिवनंदीबाहनअतिरमणा ॥ वा
मांगेगिरिजाहिबिराजतघंटानादकिधुनिमधुरा ॥
जयज० ॥३॥ गजचर्मांबरबाघांबरहरकपालमालागं
गेशा ॥ पंचबदनपरगणपतिशोभापृष्ठेगिरिपतिज्व
लवेशा ॥ जयज० ॥४॥ सिद्धेश्वरममलेश्वरशंकरक
पिलेश्वरश्रीकोटेशा ॥ कपिलासंगमनिर्मलजलहै
कोटिकतीरथभयहरणा ॥ जयज० ॥ ५ ॥ काबेरी
रेवाजलसंगममध्येशोभितगिरिशिखरा ॥ इंद्रादि
कपतिसुरपतिसेवितरंभादिकधुनिमधुरा ॥ जयज०
॥ ६ ॥ मंगलमूरतिप्रणवाष्टकशिवअद्भुतशोभाम्ब
ड़भवनं ॥ सनकादिकमुनिकरतेस्तोत्रंमनवांछित
शिवभयहरणं ॥ जयज० ॥ ७ ॥ प्रणवाष्टकपदध्या
यजनेश्वररचयतिबिमलंपदवाष्टं ॥ तुम्हरीकृपात्रिगु
णात्माशिवजीपतितनपावनभयहरणं ॥ जयजयहे
शिवपरंपराक्रमओंकारेश्वरतुमशरणं ॥८॥ इति० ॥

॥ आरती दुर्गाकी. ॥

जयअंबेगौरीमइया मैमंगलमूरतिमइया ॥जयआनं
दकीकरणी ॥तुमकोनिशिदिनध्यावतहरब्रह्माशिव
री ॥ टेर ॥ मांगसिंदूरबिराजतटीकोमृगमदको ॥
उज्जलसेदोउनैनाचंद्रबदननीको ॥ जयअंबे० ॥१॥
कनकसमानकलेवररक्तांबरराजै ॥ रक्तपुष्पगल
मालाकंठनपरसाजै ॥ जयअंबे० ॥२॥ केहरिबाह
नराजतखड्गखप्परधारी ॥ सुरनरमुनिजनसेवतति
नकेदुखहारी ॥ जयअंबे० ॥३॥ काननकुंडलशोभि
तनासाग्रेमोती ॥ कोटिकचंद्रदिवाकरराजतसमजो
ती ॥ जयअंबे० ॥४॥ शुंभनिशुंभबिदारेमहिषासु
रघाती ॥ धूम्रबिलोचननैनानिशिदिनमदमाती ॥
जयअंबे० ॥५॥ चौसठियोगिनिगावतनृत्यकरतभै
रू ॥ बाजतताल‌मृदंगऔरबाजतहैडमरू॥ जयअं०
॥ ६ ॥ भुजाचारअतिशोभितखड्गखप्परकरधारी ॥
मनबांछितफलपावतसेवतनरनारी ॥ जयअंबे० ॥

॥ ७ ॥ कंचनथालबिराजतअगरकपूरकिबाती ॥ श्रीमालकेततुमराजतकोटररतनजोती॥जयअंबे० ॥ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ॥ याअंबेकीआरती, जोकोईनर गावै ॥ भनतसेवानंदस्वामी, सुखसंपतसोपावै ॥ इतिश्रीदुर्गाकीआरतीसमाप्ता ॥ ॥ ॥

॥ अथ दुर्गाष्टकप्रारंभः ॥

॥ टेर ॥ मंगलकीसेवासुनमेरिदेवाहाथजोड़तेरेद्वार खड़े ॥ पानसुपारीध्वजानारियलज्वालातेरीभेंटध रे ॥ सुनजगदंबेअकरविलंबेसंतनकाभंडारभरे ॥सं तनप्रतिपालीसदाखुस्यालीजयकालीकल्याणकरे । ॥ टेर ॥ बुद्धिबिधातातूजगमातामेराकारजसिद्धक रो॥ चरणकमलकालीयहिअवसरशरणतुम्हारीआ नपरो ॥ जबजबभीरपरैभक्तनपरतबतबआयसहा यकरो ॥ संत० ॥ १ ॥ बीरबारतेसबयुगमोयेतरु णीरूपअनूपधरे ॥ माताहोकरपुत्रखिलावेकहांभा रजोभोगकरे ॥ संत० ॥ २ ॥ भृगुसुखदाईसदास

हाईसंतखड़ेजयकारकरैं॥ब्रह्माविष्णुमहेशसहसफण
लियेभेंटतवद्वारखड़े ॥ अटलसिंहासनबैठीमाता
शिरसोनेकाछत्रफिरे ॥ संतन० ॥ ३ ॥ बारशनि
श्चरकुंकुमवरणोजबलोकनपरहुकमकरे॥ खड्गखप्प
रतिरशूलहाथलियरक्तबीजकोभस्मकरे ॥ शुंभनि
शुंभपछाड़ेमातामहिषासुरकोपकड़दले ॥ संतन०
॥ ४ ॥ आदितवारआदिकीबारीजनआपनकोकष्ट
हरे ॥ कोपहोयकरदानवमारेचंडमुंडसबचूरकरे॥ज
बतुमदेखोदयारूपहोयपलमेंसंकटदूरकरे ॥ सं० ॥
॥ ५ ॥ सोमशुभावधर्योमेरिमाताजनकीअरजक
बूलकरे॥ सिंहपीठपरचढ़ीभवानीअटलभवनमेंराज
करे ॥ दर्शनपावेमंगलगावेसिद्धसाधतेरेभेटधरे ॥
संतन० ॥ ६ ॥ ब्रह्मावेदपढ़ैंतेरेशिवशंकरजीध्यान
धरे ॥ इंद्रकृष्णतेरीकरैंआरतीचँवरकुबेरडुलायोहै ॥
जयजननीजयमातुभवानीअटलभवनमेंराजकरे ॥
संतनप्रतिपालीसदाखुस्याली०॥ ७ ॥इतिदुर्गाष्टक

॥ आरतीलक्ष्मीजीकी ॥

जयलक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता ॥ तुमकोनिशदिन सेवतहरविष्णुविधाता॥टेर॥ब्रह्माणीरुद्राणीकमला तुहींजगतमाता ॥ सूर्यचंद्रमाध्यावतनारदऋषिगा वतसाता॥जय०॥ १ ॥दुर्गारूपनिरंजनिसुखसंपति दाता॥जोकोइतुमकोध्यावतऋधिसिधिधनपाता ॥ जयल०॥ २ ॥तुहींपतालबसंतीतूहीहैशुभदाता ॥ कर्मप्रभावप्रकाशकअगनिधिसेत्राता ॥ जयल० ॥ ३ ॥ जिसघरतेरोबासोताहिसगुणआता ॥ करण चहैसोईकरलेवैमननहिंधड़काता ॥ जयल० ॥४ ॥ तुमबिनयज्ञनहोयबस्त्रनहिंहोवैराता ॥खानपानको बिभवतुमहिंबिनकौनहैदाता ॥ जयल० ॥ ५ ॥ शुभगणसुंदरयुक्तक्षीरनिधिजाता ॥ रत्नचतुर्दशतु मकोकोईभीनहिंपाता ॥ जयल० ॥ ६ ॥ यहआर तिलक्ष्मीजीकीहैजोकोईनरगाता ॥ उरपंकजअतिउ त्तमउमगतपापउतरजाता ॥ जयल० ॥ ७ ॥स्थिर

चरयहसबभक्तिकरिसुखपाता ॥रामप्रतापमायाकी शुभदृष्टिचाता ॥जयलक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता ॥ तुमकोनिशिदिनसेवतहरविष्णुबिधाता ॥ ८ ॥

॥ इतिलक्ष्मीजीकीआरतीसंपूर्णी ॥

॥ अथबिद्याकीप्रशंसा ॥

दोहा ॥ अजरअमरकीभाँतिव्है, बिद्याधनहिंबढ़ाव॥ मनहुँमीचुचोटीगहे, देतबिलम्बनलाव ॥ १ ॥ बिद्याधनसबधननसे, संतकहतसरदार ॥ मोलब ड़ोनाहिंघटतघर, दिनदिनहोतउदार ॥ २ ॥ जाते सबसंशयमिटैं, अनदेखासोदेखु ॥ पढ़िबोपोढ़ी आंखिहै, अपढ़अंधकरिलेखु ॥ ३ ॥ ॥ ॥

अथ प्रश्नोत्तरवर्णन ॥

सोरठा–महिफलतुरतमँगाव,देकृशानुमोहिंगोदले॥ पतरीदेघरआव, कह्योकृष्णबारीनहीं ॥१

अथ शिवस्तुति प्रारंभः ॥



टेर ॥ भोलानाथअमलीमेराशंकरअमली ॥ बागा मैभांगडलीबवायरखती।काहबवाऊंकाशीजीमैकाह बवाऊंपराग ॥काहबवाऊंहरिकीपैरीकाहबवाउँकैला श॥भोला०॥ १॥कासीजीमैकेशरबवाउँचंदनबवाऊं पराग॥हरिकीपैरीबिजयाबवाऊंधतूरोबवाऊंकैलाश ॥ भोला० ॥ २ ॥ काहमांगनादियोगणेशहिँ ॥ काहमांगभोलाशंकरका ॥ भो० ॥ ३ ॥ दूर्वामां

गनदियोजीमोदकगणेश ॥ विजयमांगेभोलाशं भुयोगियाकेभेस ॥ भोला०॥ ४॥ घोटघोटनांदीयो जीछानछानगणेश ॥ भरभरप्यालादेवेगौराजीपीवै भोलेनाथ॥भोला०॥५॥आकक्रिरोटीपवैंपारबतिध तूराकोसाग ॥ बिजयाकीतरकारीछौंकैंजेवैंभोलेना थ॥ भोला० ॥ ६ ॥भूँखोमांगेअन्नधनराजामांगैरू प॥ कुष्ठीमागैनिरमलकायाबांझहुमांगैपूत॥भोला० ॥ ७ ॥ भूखेहिँ देतेअन्नधनराजहिंदेतेरूप ॥ कुष्ठि हिंदेतेनिर्मलकायाबांझहिंदेतेपूत ॥भोला० ॥८॥ नाचनाचनांदियोजीनाचैऔनाचैंगन्नेस ॥ नाचत मेराभोलाशंभूयोगियाकेराभेस॥भोला० ॥९॥ घो टतहैंसुगणेशबाबाछौनाभैरवनाथ॥भरभरप्यालापि वोहमारेशंभूभोलानाथ।भोलानाथअमलीमेराशंक रअम० ॥ १० ॥ इतिशिवस्तुतिःसंपूर्णा ॥ ॥

॥ सत्यनारायणकी आरतीप्रा० ॥

जयलक्ष्मीरमणा ॥ श्रीलक्ष्मीरमणा ॥ सत्यनारा

यणस्वामी जनपातकहरणा ॥ जय० ॥ टेर ॥ र
त्नजडितसिंहासनअद्भुतछबिराजै ॥ नारदकरतनी
राजनघंटाधुनिबाजै ॥ जयल० ॥ १ ॥ प्रगटभ
येकलिकारणद्विजकोदरसदिया ॥ बूढ़ेब्राह्मणबन
केकंचनमहलकिया ॥ जयल० ॥ २ ॥ दुर्बलभील
कतारोजिनपरकृपाकरी ॥ चंद्रकेतुयकराजाजिनकी
बिपतिहरी ॥ जयल० ॥ ३ ॥ वैश्यमनोरथपायोश्र
द्धातजदीनी ॥सोफलभोग्याप्रभुजीफेरस्तुतिकीनी
॥ जय० ॥ ४ ॥ भावभक्तिकेकारणछिनछिनरूप
धऱ्यो ॥ श्रद्धाधारणकीनीजिनकाकाजसऱ्यो ॥ ज
य० ॥ ५ ॥ ग्वालबालसँगराजाबनमैंभक्तिकरी ॥
मनबांछितफलदीनोदीनदयालहरी ॥ जय० ॥६॥
चढ़तप्रसादसवायोकदलीफलमेवा॥धूपदीपतुलसी
सेराजीसतदेवा ॥जय० ॥ ७॥ श्रीसत्यनारायणजी
कीजोआरतिगावै ॥ भनतमनसुखसंपतमनबांछित
पावै॥ जय० ॥८॥इतिश्रीसत्यनारायणकीआरती०

॥ पार्वतीदेवीकीआरती ॥

जयपार्वतीमाताजयपार्वतीमाता ॥ ब्रह्मसनातनदेवीशुभफलकीदाता ॥ टेर ॥ अरिकुलपद्मनिबासी निजसेवकत्राता ॥ जगजीवनजगदंबाहरिहरगुणगाता ॥ जय० ॥ १ ॥ सिंहजबाहनसाजैकिंकररहसाथा ॥ देववधूजहँगावतनिरतकरतताता ॥ जयपा० ॥ २ ॥ सतयुगरूपशीलअतिसुंदरनामसतीकहता ॥ हेमाचलघरजन्मीसखियनसँगराता ॥ जयपा० ॥ ३ ॥ शुंभनिशुंभबिदारेहेमाचलताता ॥ सहसभुजातनुधरकेचक्रलियाहाथा ॥ जयपा० ॥ ४ ॥ सृष्टिरूपतूहींजननीशिवसँगरँगराता ॥ नंदीभंगीबिनवहिंपरयामद्माता ॥ जयपा० ॥ ५ ॥ देवताअरजकरतहैंमनचितकोपाता ॥ गावतदेदेतालमनोहररँगछाता ॥ जयपा० ॥ ६ ॥ श्रीपरतापआरतीजोकोईनरगाता ॥ स्वर्गसुखीनितरहतासुखसंपतपाता ॥ जयपा० ॥ ७ ॥ इतिपार्व० आ०

॥ अथ रुद्राष्टकं लिख्यते ॥

॥ छंद ॥ भुजंगप्रयात ॥ ॥ नमामीशमीशान निर्वाणरूपम् ॥ विभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपम् ॥ निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं ॥ चिदाकारमाकाशवासंभजेहम् ॥१॥ निराकारमोंकारमूलंतुरीयम् ॥ गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशम् ॥ करालंमहाकालकालंकृपालुम् ॥ गुणागारसंसारपारंनतोऽहम् ॥ २ ॥ तुषाराद्रिसंकाशगौरंगभीरम् ॥ मनोभूतकोटिप्रभासीशरीरम् ॥ स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगम् ॥ लसद्भालबालेंदुकंठेभुजंगम् ॥ ३ ॥ चलत्कुंडलंशुभ्रनेत्रंविशालम् ॥ प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालुम् ॥ मृगाधीशचर्मांबरंमुंडमालम् ॥ प्रियंशंकरंसर्वनाथंभजामि ॥ ४ ॥ प्रचंडप्रकृष्टंप्रगल्भंपरेशम् ॥ अखंडंह्यजंभानुकोटिप्रकाशम् ॥ त्रयीशूलनिर्मूलनंशूलपाणिं ॥ भजेहंभवानीपतिंभावगम्यम् ॥ ५ ॥ कलातीतकल्याणकल्पांतकारिन् ॥ सदासज्जनानंददाता

पुरारिन् ॥ चिदानंदसंदोहमोहापहारिन् ॥ प्रसीद प्रसीदप्रभोमन्मथारिन् ॥ ६ ॥ नयावद्धउमानाथपादारविंदम् ॥ भजंतीहलोकेपरेवानराणाम् ॥ नतावत्सुखंशांतिसंतापनाशम् ॥ प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवास ॥ ७ ॥ नजानामियोगंजपंनैवपूजाम् ॥ नतोऽहंसदासर्वदाशंभुतुभ्यम्॥जराजन्मदुःखौघतातप्यमानम् ॥ प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो ॥८॥ ॥श्लोक॥रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तंविप्रेणहरतुष्टये॥येपठंति नराभक्त्यातेषांशंभुःप्रसीदति॥९ इतिरुद्राष्टकसं०

मनिहारिन्लीलाकी लावनीप्रारं०

श्रीकृष्णनंदजीकेनंदनधराभेषमनिहारिनका ॥ आपहरीजहँगयेतहांपरबहुतझुंड़ब्रजनारिनका ॥ टेर ॥ पहिरजनानाभेषहरीनेरुचिरुचिकैशृंगारकरा ॥ हसुंलीऔरहमेलगलेबिचझलझलझलकैपन्नहरा ॥ठटगुजरातीसजेघाँगराओढ़निदिखनीचीरखरा॥रबिशशिकोटिबदनकीशोभाऐसाहरीनेरूपधरा ॥कुचहुँब

नायकैपाटीचोलीअरुकुरुताफुलक्यारनका।आप०
॥ १ ॥ श्रीकृष्णजीफिरैंपूछतेकोइचुड़ियापहनोगेरि
खरी ॥कालीपीलीजरदजँगालीसुरुखबैंजनीऔरह
री॥एकसखीयोंबढ़करबोलीअरीआवतूंमणिहारी॥
चुड़ियामोतीचूरकड़ाबँदलाईतोपहनाजारी॥सुखमां
गेलेवोदामहमकोमुठाबतारीमोलचुरिनका॥आप०
॥ २ ॥ श्रीकृष्णपहेरानेलागेपहरैराधासहेलनी ॥
करछुयेतनखकाछिपैननहिलखगइराधापहेलनी ॥
राधासुसकायकहैफेरपूंछोरीसखियाअकेलनी ॥फि
री जायचौफेरकृष्णकेजितनीथीसबनयेलनी ॥हरी
हियाइनमानकियाअपमानसखीसबसारनका ॥आ
प०॥३॥अनेकछलबलकियेकृष्णनेसबसखियांछल
नेखातर ॥ कहँलगकोईसिहतकरैंगेतुकन्नगिरकहते
चातुर॥ लक्ष्मणब्राह्मणधर्माकहतेबैठोसायरमतहो
आतुर ॥जसूलालकेचंगकेऊपरनिरतकरैपरपायातु
र॥कहेगुणीजैरामभारतीचंगपरतुरांतारनका ॥ आ
प०॥४॥इतिमनिहारिनूलीलाकीलावणीसमाप्त ॥

अथश्रीयुगलबिहारलावनीप्रा०

आधीरातकेबिषेकृष्णराधेकेभवनकोजातेभये ॥ क
रसरोजसेद्वारकेऊपरपटकपाटखटकातेभये ॥ टेर ॥
चमकिउठीवृषभानुनंदिनीकौनमेरेद्वारेआया ॥ ना
मबतावोआयकरसुझकोनींदमेंजगाया ॥ परस्थान
नमेंधसेआनतुमजरानमनधासतलाया ॥ फिरोदि
वानादिवानाहोकिकिसीकाभरमाया ॥ मधुरबचन
सुनकेराधेकेश्रीकृष्णसमझातेभये ॥ कर० ॥ १ ॥
माधोनामहैमेराजगतमेंतेरेपासआयाहूंअली ॥ क
हैराधिकाशरदऋतूमेंऋतुबसंतनहिँलागभली।ऋतु
बसंतनहिंजानप्रियामैंचक्रीहूंतूंजानअली ॥ चक्री
होतोयहांसेसरकोकुलालकीपूंछोगली॥धरणीधरक
हतेहैंमुझकोबेदनीतिसेगातेभये॥कर० ॥ २ ॥जान
गईतुमशेषनागहोसहससीसतनकेकारा ॥ शेषनहीं
मैंप्रियाहूँसरपनकेमारनहारा ॥ शेषनहींतोगरुडहो
यगाबिनताकीकरोप्रतिपाला ॥ प्रियाहरीहूँमेराहै

सारेजगतमेंउजियाला ॥ सूर्यहोवतौस्वर्गछांड़िकेमे रेभवनक्योंआतेभये ॥ कर० ॥ ३॥ कृष्णकृष्णश्री कृष्णचंद्रनेतीनबेरउच्चारकिया॥ उठीराधिकादियेप टखोलगलेकाहारकिया॥मूलचंदपरकृपाकरोरीजि सनेएव्यवहारकिया ॥ भक्तजनोंकाहरीनेंछिनमेंबे डापारकिया ॥ तुर्रीकेसुनकेजबाबकलँगीकेहोसउड़ जातेभये ॥ कर० ॥ ४ ॥ इतिश्रीयुगलबि० ॥

॥ श्रीरामचन्द्रको राजतिलक ॥

रँगरचनीकेशरलावोरे ॥ दशरथसुततिलकचढ़ावोरे ॥ टेर ॥ चोवाचंदनकेसरलावोकुंकुमअरगजसुगंध मंगावो ॥ ढोलपखावजबांसुरीबीनमृदंगघनासुरीनृ त्यकीयुक्तिबनावोरे ॥ रंगरचनीकेशरलावोरे ॥ १ ॥ गजमोतिनकेचौकपुरावोरे॥केलाकदंबकेखंभलगावो रे ॥ हांजीगजमोतियनसोंचौकपुरावो ॥रुचिरुचिके लाखंभलगावो ।तोरणबंदनवारसीमंगलामुखीऽनार

सीउत्सवहर्षमनावोरे॥रँगरचनीकेशरला०॥२॥सिंहासनरतनजड़ावोजी॥ वापरसोनेकोछत्रछलगावोजी॥हेजीसिंहासनतोरतनजड़ावोशुभसोनेकोछत्रलगावो॥ नारदमुनिसबदेवताराजसभाछबिदेवतासबबिधिसाजसजावोरे॥ रंगरचनीकेशरला०॥३॥सियरामचंद्रबुलवावोजी॥ गुरुवसिष्ठबोलपठावोजी॥रामचंद्रगादीबैठारो॥ राजतिलकगुरुकरसों धारोकरैकौशल्याआरतिबर्षेंफूलविमानन जय जय त्रैलोकउचारोरे॥ रंगरचनी० ॥४॥ इंद्रादिकध्यावनआवैंजीब्रह्मादिकध्यानलगावैंजी ॥ इंद्रादिकसुरध्यावनआवैंऋषिमुनिअस्तुतिनिजगुदरावैं॥ दासजैलालकीवीनतीमहामूढ़पापीरतिडूबतनावबचावोरे॥ रँगरचनीकेशरलावोरे॥ ५॥ ॥ ॥ ॥

॥ रामनामकीमहिमा ॥

हैरामनामसरनामजगतजोगावैं॥ कटजायकालफंदफेरजन्मनहिंपावै॥ टेर॥ हैरामनामकाबड़ामहा

तमभारी ॥ बेदनकासारगीतामेंकहैबिचारी ॥ सुर ऋषिमुनिजपतेनामअटलयुगचारी ॥ हैसकललोकबिख्यातजपैंनरनारी ॥ यमराजकाँपतारामनाम जोध्यावै ॥ कटजायकालफँदफेरजन्मनहिंपावै ॥ ॥ १ ॥ यकबाल्मीकमुनिभयेजगतबिख्याता ॥ जिनमरामराजपपायत्रिलोकीनाथा ॥ भयेब्रह्मलीनज पउलटानामसुहाता ॥ रहगयानामसंसारसकलयशगाता ॥ जपरामनामजोजीवमुक्तिकोचाहै ॥ कटजायकालफँद० ॥ २ ॥ प्रहलादभक्तनेरामनाम चितधारा ॥ हिरणाकुशदेकरत्रासकईबिधिहारा ॥ जबबांधपुत्रकोहाथलियातरवारा ॥ नरसिंहरूपधर रामदुष्टकोमारा ॥ हैअद्भुतमायाराममंत्रजोध्यावै ॥ कटजायकालफँद० ॥ ३ ॥ लेतेहिनामगजका जग्राहकोमारा ॥ बालकमंजारीपावकबीचउबारा॥ मीरानेपियाजहरअमृतकरडारा ॥ प्रियभक्तहेतनिजधनुषबाणकरधारा ॥ इसरामनामसेदुखसंकटकट

जावैं ॥ कटजायकालफँद० ॥ ४ ॥ नारीसेहोगये पुरुषरामकीमाया ॥ सागरपरबँधगयासेतुनामकी दाया ॥महापापीतरगयेजीवमुक्तिफलपाया ॥होभ क्तशिरोमणिनामप्रेमसेगाया ॥ हैअपारमहिमा कोईपारनहिंपावै ॥ कटजायकालफँद० ॥ ५ ॥ मैंकहँलगबर्णनकरूंतेरीचतुराई ॥ हैनभमंडलपाता लतेरायशछाई ॥ हूंअधमनीचअज्ञानपूर्णकुटिलाई शरणागतबत्सलजानबीनतीगाई ॥ हौंहाथजोड़जे लालतेरायशगावै ॥ कटजाय० ॥ ६ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीकृष्णचंद्रजीकी बिनति ॥

श्रीकृष्णचंद्रमहाराजबेषनटबरधारी ॥ बंसीवारेश्या ममुरारेलाजअबहाथतेरेमथुरावारे ॥ टेर ॥ गिरि वरलियोउठायराखलीलाजबिरजकीमतवारे ॥ सन्न मेघबिचारे ॥ हारचलेइंद्रलोकमेंपुकारे॥आदिपुरुष अवतारसांवरोइनसेती हमसबहारे॥खालीकरडारे॥ नीरजलबरसरहगईछारे ॥ जबइंद्रगयोघबराई॥कहो

कीजैकौनउपाई।।मैंकरीबहुतलरकाई ।। सबबातहाथ
बिगराई।। पडूंअबपांवसाथलेपरिवारे ।। श्यामसु
रारे लाजअबहाथतेरेमथुरावारे ।। १ ।। गिरोगेंदय
मुनामेंसांवरोकूदपड़ोजलकीधारे।।गोकुलरखवारे।।
नागिनिहाथजोड़कैकहैपुकारे ।। नागजहरकीखा
नडरोभगवानकुईपचकरहारे ।। सबकोमथडारे ।।
लड़करकोईनहींइनसेउतरापारे ।। कालीदहकेना
गजिआये सौसौफणकरडरपाये ।। तबकृष्णफिरैंमु
सकाये।।नागनकीबातचितलाये ।। नाथलियोनाग
सीसपरपगधारेमुरलीवारे ।। लाजअबहाथ० ।।
।। २ ।। घरघरसेब्रजनारचलीन्हाने यमुनातटपर
ओरसबचीरउतारे ।। पैठजलभीतरहोगईमतवारे ।।
चीरचोरघनश्यामसांवरोचढ़कदंबबैठोडारे।।ब्रजबनि
तासारे ।। देखिनाहिंचीरतीरगईघबरारे ।। इकनारिक
दंबतरजाई।।कहीचीरछोड़दोसाई।। मुरलीधरबातब
नाई।।तबचीरदेउँहरषाई ।। नग्नहोजलसेजबन्यारे ।।

श्याममुरारे ॥ लाजअबहाथतेरे० ॥ ३ ॥ जरासंधशिशुपालआयकुंडिनपुरमेंकीनाडेरा ॥ सँगसाजघनेरा ॥ व्याहनेरुक्मिणीकामनमेंजेरा ॥ रुक्मिणीपातीलिखीप्रेमकीप्यादेकोयोंकहटेरा ॥ मतमतकरोअबेरा ॥ जायदेश्यामसुंदरकोसमचेरा ॥ ज्योंकुंडिनपुरकृष्णपधारे ॥ सुनतेहीरुक्मीघबरारे ॥ शिशुपालमानमथडारे ॥ सबभिड़इनसेतीहारे ॥ बैठरुक्मिणीसंगरथकोहकारेकृष्णपियारे ॥ लाजअबहाथ० ॥ ॥ ४ ॥ मेहतानरसीएकहुंडीनंदनंदनपरकरदीनी ॥ साधुनकोदीन्ही ॥ द्वारिकाजापहुँचेसाधुदीनी ॥ कहांसांवरोसेठढूंढ़तेफिरेंसाधुकहेपछतानी ॥ हुंडीठगानी ॥ सातसौरुपयेधूलमेंमिलजानी ॥ अबजूनागढ़पीछेजावें ॥ नरसीकीशानगुमावें ॥ तबकृष्णसेठबनआवें ॥ साधुनकोधीर्यबढ़ावें ॥ रुपयेगिनचटहुंडीदईसिकारे ॥ श्याममुरारे ॥ लाजअब० ॥ ५ ॥ क्रीटमुकुटब्रजचंद्रकन्हैयायमुनातटखेलेंजाई ॥ जल

सुगंधसुहाई ॥ बासुरीदईबनवारीबजाई ॥ ब्रजनारीबं
सीकीधुनिसुनियमुनातटझटपटधाई। सबसुधिबिस
राई। देखतीसुरतमाधुरीमदछाई। कईरूपकृष्णजीधारे
॥ गोपिनकोआपाशिंगारे ॥ एकएककेबीचभयेठाढे
॥ फिररासमंडलमिलसारे ॥ खेलतेकृष्णराधिकाम
तवारे॥ श्याममुरारे। लाजअबहाथतेरे॥६॥ सीसमुकुट
पीतांबरबांधेकानोंकुंडलकरबँसुरी ॥ खडेकदंबतरस
खासँगग्वालबालखेलैंहँसरी॥ हैअपारलीलाजगतो
रीकोगावेकबिमतिथोरी ॥ हैगुरुपुरुषोत्तमदासजे
लालकहैयोंकरजोरी ॥ मैंहूँमतिमंदअभागीनिशि
दिनकुकर्मसोंलागी ॥ अबकरोकृपाबरमाँगीदोबुझा
पापकीआगी ॥ नाशकरदुखदलिद्रदोषारे ॥ श्याम
मुरारे ॥ लाजअबहाथतेरेबंसीवारे ॥ ७ ॥

॥ शिवजीकी बिनती ॥

महादेव काशीके बासी ॥ हेमकन्यापति अबि-
नासी ॥ टेर ॥ जटाबिच गंग सीस राजे ॥ चंद्र-

मा मस्तकपर छाजै॥ब्यालगल मुंडमाल राजै ॥ देख भयरूपकाल भाजै ॥ भस्म अभूषण अति घना, भूतनाथ विकराल ॥वृषबाहन बाघंबर साजै, लिये भैरूं करताल॥ बनीछबि गिरिजा कैला-सी॥ महादेव काशीके बासी ॥ १ ॥ लंकपती रावण अधिकारी॥ध्यावत नितप्रति त्रिपुरारी ॥ शीस निज काट हुते बारी॥ उठा कैलास लि-यो भारी॥ भोलानाथ प्रसन्न हो, दियो अमित बरदान॥ बीस भुजा दससीस कर, किये विकट बलवान॥ भये सुर दिग्गज नैरासी॥ महादेव० ॥ २ ॥ धाम रामेश्वर अतिपावन॥ शिवालय सुंदर मनभावन॥जातरी गंग जो चढ़ावन॥ भ-क्ति सायुज्यमुक्ति पावन॥ लिंग थाप पूजा करी, रामचंद्र निजहाथ॥ शिवरघुवरको ध्याइयै, मिटै बिघ्न उत्पात॥जायकटफंदाचौराशी॥ महादेव०॥ ॥ ३ ॥ गंगतटशिवनगरीसुंदर बिराजत बिश्वना

थमंदिर॥बनीछबिबाराणसीअंदर ॥ विभूषितपूनम सोंचंदर ॥शंकरशहरसुहावनो,ब्रह्मारच्योसुहेत॥जा दर्शनसेपापकटतहैं,मनबांछितफलदेत ॥ प्रकटसुर सरितातटकाशी ॥ महादेव० ॥ ४ ॥ त्रिलोचननी लकंठदेवा भूतबैतालकरैंसेवा ॥ बजायेगालमिलैमे वा त्रिशूलीखप्परधरदेवा ॥ सीसपूजैशिवलोकमैं, मृत्युलोकमेंलिंग ॥ चरणपूजैपातालमैं, उमापती अर्द्धंग ॥ गंगारहैसंगसदादासी ॥ महादेव० ॥ ५ ॥ चढ़ैशिरकस्तूरीचंदन दिगंबरबाघंबरअंगन ॥ करैं सुरतेंतीसोंबंदन ॥ धतूराआकभोगव्यंजन ॥बंभोला पदबीनवै,हाथजोड़जैलाल ॥पलकखोलप्रभुदर्शन दीजे,कीजैमोहिंनिहाल॥काटदेउयमपुरकीफांसी ॥ महादे० ॥ ६ ॥ इति० ॥

प्रेमबर्णन.

दोहा–कपटनिपट मिटिजायजहँ, उपजैपूरनक्षेम॥
ताहींसों सब कहत हैं, केशव उत्तम प्रेम ॥

मुमुक्षुलक्षण.

दोहा—जन्ममृत्युसंसारते, कैसेछुटियेनित्त ॥
सोमुमुक्षकहियेसदा, यहैविचारतचित्त ॥ १ ॥

सामायिक.

दो० रचोनदेख्यो नाहिंयह, सुन्यो कनकमृगगात ॥
तऊ रामतृष्णा स्वमति, नाशकाल फिरि जात॥

पात्रदानमाहात्म्य.

दो० क्षीणहोहिं सबदान अरु, यज्ञ होम बलिकीन॥
पात्रदान सब अभय होय, कबहूँ नाहीं क्षीन॥

आशीर्वादवर्णन.

दोहा—मातपितागुरुदेवमुनि, कहतकछूसुख पाय॥
ताहीसों सब कहत हैं, आशिष कबिकेराय ॥

अथ गर्भचिंतामणि.

क्योंजनमगमावोरटोरामरघुराई, मानुषदेहबारंबारस
हजनहिँपाई॥टेर॥नरनारीसंयोगगर्भमेंआयो ॥ म

लमूत्रमासकोपिंडहोयहियरायो॥ पगऊपरतलमेंसी
सरहोलटकायो॥दुखगर्भबासकोदेखबहुतघबरायो॥
पड़तेहिपिंडमेंजीवतनिकसुधिआई॥मानुषदेह० ॥
॥ १ ॥ अग्निजठरजहँतपेपवननहिंआवै ॥ रहैंजी
वकेदमेंजराचैननहिंपावै ॥ करतासोंबारंबारअरज
गुदरावै॥इसफंदसेबाहरजोकोइभांतिकरावै ॥ मैंजपूं
तुझीकोआठपहरचितलाई ॥ मानुषदेहबारंबारसह
जनहिंपाई ॥ २ ॥ जबनिकसगर्भसेमोहजालमें
आयो॥सबभूल्योकौलकराररामबिसरायो ॥माबाप
देखसुतआनँदकरैउछायो ॥ पंडितगुरुदेखैंदशाबहु
तधनपायो ॥ घरबजैनोबतांबटरहीनेगबधाई ॥ मा
नुषदेह० ॥३॥ बालककुछस्यानोभयोखेलनेजावे॥
नितनाचफंदमेंरहैसोधनहिंलावे॥माबापलाड़लीसु
रतदेखहरषावे॥ब्याहनकोसुंदरयोगकहींबनजावे ॥
तिरियाफँददीनोडारगलेमेंलाई ॥ मानुष० ॥ ४ ॥
बालकपनबीतोआयतरुणाईगहराई॥नाहिंभजनभाव

तेचित्तरहैप्रस्ताई ॥ तिरियासँगनिशिदिनरहैगले लिपटाई ॥ भयोगधापचीसीमाहिंजवानीछाई॥ तिरियाफँदमेंहोयअंधकारचितचाई॥मानुषदेह०॥५॥ नितअतरफुलेलसुगंधअरगजालावै ॥ करउबटनमर्दनअंगसुगंधलगावै ॥ पचरंगीचीराबांधछैलबनजावै॥परतिरियातकतेनिजघरनीबिसरावै ॥ धृकयौबनजिननेरामनामबिसराई॥ मानुषदेह०॥६॥बालकपनजवानीबीआयतीबुढ़ापाचेरा॥सबछुटेजगतकेस्वादमोहमदफेरा ॥ मुखकाननाकपगहाथथकेयकबेरा ॥ परवशहोकंपैकालआगयानेरा ॥ दिनरहेबिकलतारातिनींदनहिंआई ॥ मानुषदेहबारंबार०॥७॥ देहछीज२रहगईहाड़कीटट्टी ॥ मुखनयनझरैंदिनरैनभईदुरघट्टी ॥ सबघरकेमिलयोंकहैंमिलैकबमट्टी॥बेटानाहिंमानतहुकुमकरमकीपट्टी ॥ घरकीनारीभीगारीदेबतराई ॥ मानुषदेह० ॥ ८ ॥ तनछीनमलिनमुखबिकलभयोअतिचारी ॥मरनेसे

तोहूंडरेलगेजोकारी ॥ यमदूतखड़ेचहुँओरभयकंर भारी॥मुसकोंसेलीनाबांधमूसलनमारी ॥ लैखींच जीवकोचलेजहांयमराई ॥ मानुषदेह० ॥ ९ ॥ यमराजकोपकरकहोदुष्टलेआवो ॥ लोखंडगरम करदेहउसकीचिपकावो ॥ मुद्गरकीमारोमारजेरबं दलावो ॥ अतिघोरभयंकरनरकमाहिंछिटकावो ॥ जीजंतुनरककेचूंटचूंटतनखाई ॥ मानुषदेह० ॥ ॥ १० ॥रहैजीवनरकमेंदुखीकहींनहिंजावै ॥ करणी केभोगैभोगकहापछतावै ॥ फिरभुगतनरककोचौरा सीमेंआवै॥देहदेहमेंभटकेजीवकोटिदुखपावै ॥यहि भांतिदुर्दशाप्राणीकीहोजाई॥ मा० ॥ ११॥हरिबि मुखनकीयहदशाहोतदोजगमें ॥ जैलालरटोनितरा मनामहरदममें ॥ गुरुपुरुषोत्तमकरयादगर्भप्रणवट में ॥कटजायआगमनफंदतेराचटपटमें।हैतारकमंत्र यहीवेदश्रुतिगाई॥ मानुषदेहबारंबारसहजनाहिंपाई ॥ १२ ॥ इति गर्भप्रभातीसमाप्ता ॥ ॥ ॥ ॥

नकमोतीबर्ण.

दोहा–केशवआनँदकंदफल, सुधाबूँदमकरन्द ॥
मनपतंगदीपगति, नकमोतीजगबंद ॥

भजनप्रभाती.

लंबोदर दातार गजानन लंबोदर दातार ॥ टेर ॥ रणत भँवरगणपति गिरिजासुत ऋधिसिधिके भरतार ॥ गजानन० ॥ १ ॥ वक्रतुंड शोभित कर सुंदर बाहन मूष सवार ॥ गजानन० ॥ २ ॥ कनकछत्र शिर चँवर दुरावै राजत भुजबर चार ॥ ॥ गजानन० ॥ ३ ॥ हेमसुतापति सुतगणनायक अनधन भरत भँडार ॥ गजानन० ॥ ४ ॥ सिंदूराक्षत पुष्प चढ़त अति मोदक भोग बिचार ॥ गजानन० ॥ ५ ॥ युगकरबंदित हर्ष कहतहौं दोजी भवसागर तार ॥ गजानन लंबोदर दातार ॥ ॥ ६ ॥ इति० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कटिवर्णन.

कवित्त–भूतकी मिठाई जैसी साधुकी झुँठाई जैसी स्यारकी ढिठाई ऐसी छीन छहू ऋतु है ॥ धीराकैसो हाँस केशोदास दासीकैसो सुख सूर कीसी शंक अंक रंककैसो बितु है ॥ सूम कैसो दान महामूढ़ कैसो ज्ञान गौरी गौरा कैसो मान मेरे ज्ञान समुदितु है ॥ कौने है सँवारी वृषभानकी कुमारी यह तेरी कटि निपट कपटकैसो हितु है॥

शिवमाहात्म्य.

कबित्त–जग जगमगत भगतजन रसबस भव-भयहर कर करत अचर चर ॥ कनक बसन तन अशन अनल बड़ बदल बसन सजल थल थल कर ॥ अजर अमर अज बरद चरणधर परमधर मगन बरन सरनपर ॥ अमलकमलबरबदनसदन यश हरन मदनमद मदनकदन हर ॥

प्रभाती.

जयजयरघुबरदीनदयानिधि जागोअवधभुवाला ॥ गगनप्रभासचंद्रद्युतिफीकी रविमंडलपगधारा ॥ तिमिरनशावनज्योतिदिवाकरत्रिभुवनकरतउजारा ॥ ॥ १ ॥ किन्नरअरुगंधर्वअप्सरागावहिंगुणजगपाला ॥ नारदशारदशिवचतुराननअस्तुतिकरतरसाला ॥ २ ॥ भोरभयोसुरनरमुनिजागेचिड़ियाकरतचुहाला ॥ मोरमरालकोकधुनिटेरतद्वारपालरखवाला ॥ ३ ॥ घरघरनारिदहीमाथनको उठैंहोतभिनसारा ॥ प्रातकालगौधेनुचरावन चलेबिपिनप्रतिग्वाला ॥ ४ ॥ मातकौशल्यासुतहिंजगावत उठोलालरछपाला ॥ चरणकमलजैलाउसीसधरबंदनकरतदुशाला ॥ ५ ॥ इति प्रभाती ॥ ॥

॥ रामनामप्रभाव ॥

दोहा—तुलसीअघसबदूरिगे, राअक्षरकेलेत ॥
फिरिनेरेआवतनहीं, माअक्षरपढ़िदेत ॥

अथपनघटकीरंगतलँगड़ी.

चलझटपटरीबंशीबटरीकृष्णखड़ेपनघटरी ॥ नागरनटरी ॥ बजावैंबंशीआजयमुनातटरी ॥ टेर ॥ शिरधरघटरीत्यागकपटरीसँगहोझटरीतजहठरी॥प्रगटेघटरी ॥ बिराजेजोजीवनकेघटघटरी ॥ चलोनिकटरीत्वरितसटकरीशीसमुकुटपीलेपटरी।लियेहाथलकुटरीदरससेसबँकटैंगेसंकटरी ॥तजखटपटरीचलझटपटरीमानकहीमेरीसटरी ॥ नागर० ॥ १ ॥ लगिचटपटरीशिमंटशिमटरीमहिघटधरशिरचलिभटरी ॥ काढ़घूंघुटरी ॥ सिनगटसजकेचलीआनिअटपटरी ॥ नहींपनघटरीआयनिकटरीदानदेझटरीमतनटरी ॥ नटखटरी ॥ देखकेआईकहेंआवोइनघटरी ॥ हमइसतटरी ॥ रैनदिनडटरहैंदानचुकातूझटपटरी ॥ नागर० ॥ २ ॥ दीनीअटकरीपकड़केपटरीनटवरनटकीयाहठरी ॥ लपटझपटरीछियेकुचपकड़गईअँगियाफटरी॥एकयारोडडटरीगलेलपट

गयेकंसनिकटरहतअतिशठरी ॥ जोसुनेआझटरी पकड़केसबकोमथुरादेडटरी ॥ कृष्णनिकटरीग्वाल नठटरीजुड़ेरागगावैंसोरठरी ॥ नागर० ॥ ३ ॥ कृष्णप्रगटरीहनेकइशठरीभूमिभारसबगयाहटरी ॥मेरेघटरी ॥ बिबुधमुकुटरीरामचन्द्रपट्टरीकथैख्यालगतअटपटरी॥भागेझटरीसभीशठदेशिरअग्रेपैपटरी॥ नंदलालकैहैसुनशठचलेनारहैंनिकटफड़मैंदटरी ॥ नागर० ॥ इतिप० समा० ॥ ॥ ॥

सीतास्वरूपबर्णन.

कबित्त–कलितकलंककेतुकेतुअरिसेतुगातभोगयोगकोअयोगरोगहीकोथलसो ॥ पूनोंहींकोपूरनपैप्रतिदिनदूनोहोतदिंनक्षिनक्षीनछबिछीलाकोजलसो ॥ चंद्रसोजुबरनतरामचन्द्रकीदुहाईसोइमतिमंदकबिकेशवकुशलसो ॥ सुंदरसुबासअरुकोमलअमलअतिसीताजूकोमुखसखिकेवलकमलसो ॥ ॥ ॥ ॥

सीयस्वयंवर.

दोहा–सीय स्वयंबर बरनिये, मंडल मंच बनाव॥
रूप पराक्रम बंश गुन, बरनिय राजाराव ॥

॥ लोचनबर्णन ॥

दोहा-लोचन चारुचकोर सम,चात्रिक मीन तुरंग॥
अंजनयुत अलिकाम सर, खंजन कंज कुरंग ॥

भृकुटीबर्णन.

दोहा--भ्रकुटी कुटिललता धनुष,रेखाखङ्ग अनूप॥
केशवदास सुपास सम, बरन श्रवन करि कूप ॥

अष्टादशपुराणोंकीसंख्या घनाक्षरी.

ब्रह्महैअयुतपद्मचूपनत्रिविंश विष्णुचतुर्विंशशिवपं
चविंशनारदीयहै ॥ अष्टादशभागवतएतहीबैवर्त
ब्रह्मलिंगएकादशरुअयुत बामनीयहै ।कूर्मसप्तदशम
त्स्यचौदहसहस्रनवसहसमार्कण्ड्यऊनविंशगारुड़ी
यहै ॥ द्वादशब्रह्माण्डचतुर्विंशबराहस्कंदएकसौए

कासीसहस्रजाननीयहै ॥ १॥ पंचशतचौदहसहस
हैमविष्यअग्निपंचदशसहसऔचारिशतमानिये ॥
इनकेएकत्रकियेपद्यस्वच्छलक्षचारिहोतहैं बिचारि
निरधारिजियजानिये ॥ सुनतसुनावतऔगावत
बतावतजेहरिलोकपावतकहावतनजानिये ॥ जन
नमनायससुझायकैमहेशदत्तकहतसुनायमनभाय
तौबखानिये ॥ २ ॥ ॥ इति अष्टादशपुराणोंकी०

विष्णुके२५अवतारोंकेनामऔरचरित

॥घनाक्षरी ॥बामनबराहयज्ञकपिलकुमारपृथुदत्तब
लऋषभनृसिंहहंसठानिये ॥ मत्स्यकूर्महरिहयसुख
व्यासकृष्णबुद्धमोहनीपरशुरामरामचन्द्रमानिये ॥
कल्कीनारायणधन्वंतरिऔरध्रुव एतेपंचविंशगाये
पैअसंख्याकृतिजानिये ॥गायजिनगुणपारजातनग
णेशशेषप्रजनेशऔमहेशक्योंमहेशभानिये ॥ १॥ब
लिजालीबामन नृसिंहप्रहलादपालीहरिगजलाली
रामघालीलङ्कनाहुको ॥मत्स्यवेदउद्धारीऔकूर्मपृष्ठ

गिरिधारीकृष्णकंसदारी मोहनारीमारीराहुको ॥बु
द्धदयाकारीबराहमहिधारी कपिलयोगसञ्चारीराम
मारीसहसबाहुको ॥कल्कीम्लेच्छहारीव्यासवेदबि
स्तारीऋषभज्ञानहिंपसारी पृथुभूमिगारीलाहुको
॥ २ ॥ हयास्यवेदोच्चारीहंसभक्तियोगचारीप्रलम्ब
मारीबलध्रुवउच्चलोकधारीहैं॥ नारायणतपकारीकु
मारआत्मतत्वपारी यज्ञलोकमारीदत्तयोगबिस्तारी
हैं॥लोकरोगदारीबैद्यराजउपकारीसबकहांलौंपुका
रीबलिहारिबलिहारीहैं ॥दुष्टअपकारीहितकारीनि
जदासकेमहेशअघहारीऔअनेककार्यकारीहैं ॥ ३॥
इतिविष्णुके २५ अवतारोंकेनामऔचरितसमाप्त ॥

शंकरजीकी प्रशंसा.

दोहा॥शंकरसेवाकरतजो, सोपावतबहुबित्त ॥बिद्या
मेंअतिप्रबलव्है, रटतशम्भुदैचित्त॥ १ ॥शंकरजीसु
रस्वार्थलगि,कीन्हगरलकोपान॥जाकेकण्ठबिशाल
में, बिषकोबनोनिशान ॥२॥बाणासुरकेसंगव्है, यु-

द्धकीन्हहरिपाहिं॥ऐसेशम्भुकृपालुको, भजनकरहु मनमाहिं ॥ ३ ॥ महादेवकेभजनबिन, नहिंपावत हरिलोक ॥ बिषयभोगकरिबहुतदिन, पुनिभरिभो गतशोक ॥४॥ ऐसेदयानिधानको,भजाकरौदिनरा ति॥प्रतिदिनहोहिंअनन्दबहु,नाशहोहिंआराति५॥

हनुमद्वाहुक.

घनाक्षरी ॥ दिग्गजदवकिजातशेषशीसअलसातह हहलातबाधिघटतद्युतिभानुकी ॥ मेरुधसकतकस कतउररावणकोचलतअवनिछबिछपतकृशानकी ॥ सुभटसकातदैत्यदेखिकैपरातमनरामसुसुकातअति पायनिजजानुकी ॥ गर्भगिरिजातशोकसुरबितता तबननाकअररातसुनिहांकहनुमानकी ॥ १ ॥

उद्धवगोपिकासम्बाद गजल रागकाफी

जानाजराजानाजराजानाजराजाना ॥ १ ॥ जाना जराजानाजराजानाकोसमझाना ॥ २ ॥ कुबिजा केघरबारीफूलीतापरभ्रमरलुभाना ॥ ३ ॥ खाय

खायकुंजनमेंमाखनअबभेजतपरवाना ॥ ४ ॥ ला
गबसंतसंतव्हैछायेकरतिआपनोमनमाना ॥ ५ ॥
बारीउमिरितबतौ सखियनकीजोबनअबहरियाना
॥ ६ ॥ ऊधोसाथआपनेलानादरशपरशकरवाना॥
॥ ७ ॥ कहेद्धारिकाप्रशादकृपानिधिहमकोगले
लगाना ॥ ८ ॥

अथरामबाराखड़ी.

श्रीगणेशायनमः ॥ चौपाई ॥ कका ॥ करुणाम
यरघुवीरकृपाला असअविनाशीदीनदयाला ॥
भंजनअसुरभूमिकेभारा प्रगटभयेरघुवंशकुमारा ॥
॥ १ ॥ खखा ॥ खेलतदशरथआँगनमाहीं बालरू
पछबिवरणिनजाहीँ ॥ लछिमनभरतशत्रुहनभैया
निरखतजननीलेतबलैया ॥ २ ॥ गगा ॥ गौर
श्यामसुंदरदोउजोरी जोकछुकहौंसोउपमाथोरी ॥
करधनुहींकटिकसेनिषंगा चढ़िकैनचवैचपलतुरं
गा ॥ ३ ॥ घघा ॥ घरमुनिविश्वामित्रजुआये

आदरकरिभूपतिबैठाये ॥ तनुधरिजोकछुकारजहो
ई कहोबचनहमकरिहैंसोई ॥ ४ ॥ नना ॥ निशि
चरखलमारीचसुबाहू यज्ञबिध्वंसकरैंउरदाहू ॥ ल
छिमनरामदोउसुतदीजै पूरणयज्ञहोइयशलीजै ॥
॥ ५ ॥ चचा ॥ चकितभयोभूपतिसुनिबानी स
मुझायोतबहींमुनिज्ञानी ॥ दीनपुत्रमुनिमनभय
हारी मारगचलतताडुकामारी ॥६॥ छछा ॥ छांड़ि
बानमारीचउड़ायो पावकबानसुबाहुजरायो ॥पूरण
यज्ञभयोमुनिहरषे जयजयकरतसुमनसुरबरषे ॥७॥
जजा ॥ जनकयज्ञसुनिचलेविचारी पदरजपरसिअ
हल्यातारी ॥ जहाँगयेजगपावनिगंगा स्नानध्यान
करिनिर्मलअंगा ॥ ८ ॥ झझा ॥ झीमरनावनिकट
नहिंलायो देखेचरणप्रभावबढ़ायो ॥ चरणप्रछालि
रामबैठायो उतरेपारजनकपुरआयो ॥ ९ ॥ नना॥
नृपतिजनकपूंछीयकबाता मुनिकौशिकसँगदोऊ
भ्राता ॥ करिपूजासिंहासनदीन्हा आपनजन्मसुफ

१७

लकरिलीन्हा॥१०॥टटा॥टूट्योनहींधनुषनृपहारे र
घुवरराजसभापगुधारे॥तोरेउधनुषकियेदुइखंडा जय
जयजैध्वनिपूरिब्रह्मंडा॥११॥ठठा॥ठाढ़ेधनुषतोरिरघु
राई सीताजयमालापहिराई॥ परशुरामधनुसौंपिसि
धाये सजिबरातनृपदशरथआये॥ १२ ॥ डडा॥
डोमरुभाटनिछावरिपाई चारिउकुँवरविवाहेउभाई॥
दीन्हेउदायजद्रव्यलुटाई धेनुवत्सगजवाजिसजाई
॥ १३ ॥ ढढा ॥ ढाढसवंतवंशलषिराजा रामहिँ
करनचह्योयुवराजा॥ शारदकुबरीमतिभरमाई मि
लिकैकेइहिंकुमतिउपाई ॥ १४ ॥ रानीवरमाँगी
नृपपासा भरतहिंराजरामवनवासा ॥ मातापितागु
रुहिंशिरनाई सीतासहितचलेदोउभाई ॥ १५॥ त
ता ॥ तमसातीरप्रथमदिनआये शृंगवेरपुरगुहहिं
मिलाये ॥ पहुँचेगंगाउतरिप्रयागा मिलेभरद्वाज
हिंअनुरागा ॥ १६ ॥ थथा॥ थोरेहिमेंसबकहौंप्रसं
गा चलेभानुकुलकमलपतंगा ॥ बाल्मीकिआश्रम

प्रभुआये चित्रकूटगृहवासबताये ॥ १७ ॥ ददा ॥
देखिशैलतृणसालबनाई सीतासहितबसेदोउभाई ॥
रामगमनसुनिनृपतनत्यागा चित्रकूटगयेभरतसु
भागा ॥ १८ ॥ धधा ॥ धरिपाँवरीसीसअतिप्रेमा
आयअवधपुरबसेसनेमा ॥ रघुवरपंचवटीकृतबासा
असुरबिनाशकियोसबनासा ॥ १९ ॥ नना ॥
नारीसूर्पनखातहँआई श्रुतिनासाकाटेरघुराई ॥
सहसचतुर्दशराक्षसमारे खरदूषणत्रिशिरासंहारे ॥
॥ २० ॥ पपा ॥ प्रगटबातरावणसुनिपाई लैमारीच
कियोमृगजाई ॥ मृगमारननिकसेप्रभुजबहीं रावण
हरीजानकीतबहीं ॥ २१ ॥ फफा ॥ फिरतसियाढूंढ़तरघु
राई देखिजटायूपितुगतिपाई ॥ शबरीकेफलरुचिसों
पाये हनूमानसुग्रीवमिलाये ॥ २२ ॥ बबा ॥ बालि
मारिअंगदयुवराजा नृपसुग्रीवहिंकियसिरताजा
॥ हनूमानतबदूतपठाये लंकाजारिसियासुधिलाये
॥ २३ ॥ भभा ॥ भालुकपिनकीसेनबनाई साग

रऊपरशिलातराई ॥ सेनसहितउतरेरघुराई मिले विभीषणलंकापाई ॥ २४ ॥ ममा ॥ मारेउरावण सहितसहाई लंकाफिरिगइरामदोहाई ॥ राजस माजबिभीषणदीन्हा पुष्पकयानएकप्रभुलीन्हा ॥ ॥ २५ ॥ यया ॥ यहिबिधिरणजीत्योरघुराई तब हिंजानकीनिकटबुलाई ॥ वामभागशोभितमहरा नी अस्तुतिकरहिंदेवमुनिज्ञानी ॥ २३ ॥ ररा ॥ रामचन्द्रचढ़िचलेविमाना आयेअवधपुरबजेनिसा ना ॥ मिलेसकलपरिजनपरिवारा गुरुपदकरहिँ प्रणामअपारा ॥ २७ ॥ लला ॥ लागिसासुपदसी ताजाई सियहिंअसीसदीन्हसुखदाई ॥ करहिंनि छावरिआरतिमाता हरषिहरषिदेखहिंदोउभ्राता ॥ ॥ २८ ॥ ववा ॥ वहिदिनधन्यघरीशुभजानी मु निवसिष्ठमनमेंअनुमानी ॥ साजसमाजबेदविधि कीन्हा राजतिलककरआज्ञादीन्हा ॥ २९ ॥ शशा ॥ शोभितकनकसिंहासनरामा शिरपरछत्रसियात

नवामा ॥ भरतलषणदोउचमरढुरावैं जयसुरकरतसु मनबरसावैं ॥ ३० ॥ षषा ॥ षिजमतकरैंप्रीतिउर लावैं संतचरणमैंचित्तलगावैं ॥ लछिमनआदिभ रतरिपुसूदन करहिंसेवरघुपतिपदपूजन ॥ ३१ ॥ ससा ॥ सानुकूलजिनपररघुराईश्रीरघुवरकीरतिअ धिकाई ॥ इतिश्रीरामबाहरखड़ीसमाप्ता ॥ ॥ श्री रामचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥

बाललीला.

रागखट—सामरोसलोनोप्यारोपरमदुलारोवारोहु लसिझुलावैनंदरानीसोइपालना ॥ शेषहुनपावैभेद नेतिनेतिगावैवेद ताहिलेखिलावैंहुलसावैंब्रजग्वाल ना ॥ १ ॥ करनकडलाराजैनूपुरपगनबाजैमुकता बुलाकसाजैंश्रोनमोतीहालना ॥ हरिकोविलासगा योगोपिनसुहागपायोमाखनदिखायकैबुलायलेवु लालना ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बंसीलीला.

मेरेप्यारेमोहना, बंसीनेकनजाय ॥ तेरीबंशीमेरोम
नहऱ्या, घरअँगनानसुहाय ॥ १ ॥

पनघटलीला.

अपनेअपनेगेहसों, विवशनेहनँदलाल ॥ सीसमट
कियाधरचलीं, पनघटकोब्रजबाल ॥ १ ॥ पनघट
मिसब्रजगोपिका, श्यामदरसकेहेत ॥ नितउठिजा
तसिंगारकर, जिहिवनप्रभानिकेत ॥ २ ॥ ॥

चुरियाचुभनलीला.

खेमटापीलू ॥ गोरीबहिंयारेरसीलीचुरियाचु
भिचुभिजाय ॥ निपटगँवारिनिऐंठिचढ़ावैजियसौं
सौबलखाय ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

यमुनास्नानलीला,

घटभरिवेसबब्रजबधुचलींजमुनाअसनान ॥ घूमत
मदअनुरागपीगावतमधुभरितान ॥ १ ॥

गागरलीला.

सुनतसखिनकेबचनकूं, नागरनन्दकिशोर ॥ गाग
रपटकीसीसते, बैयांगहिझुकझोर ॥ १ ॥ ॥

काकरवामारनलीला.

देखोनन्दकोलँगरवामेरेकांकरवामोरेरे ॥ नैनपै
नकरसेचलावैचलतडगरघुंघटवाटोरेरे ॥ १ ॥ प्री
तिरीतिपरतीतजनावैछलबलकरगलहरवाडोरेरे ॥
हरिबिलासफिरफिरहरिहेरत लिपटचिपटआंचर
वाफारेरे ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ संतस्वभाववर्णन ॥

दोहा– शशिकुमुदनप्रफुलितकरत, कमलविकास
तभानु॥बिनमांगेजलदेत घन, त्योंहीसंतसुजान ॥

अथब्रजभूमिनन्दग्रामतथाबर- सानेकीरँगीलीहोरीलीला.

मचैधूमफागुनकेमासप्रभुबरसानेखेलैंहोरी ॥ खेल

रहेघनश्यामरंगसेगुलालसेराधेगोरी ॥ नन्दग्रामसे कृष्णपधारेबरसानेराधेप्यारी ॥ लेगुलालराधेजीहाथमोहनकेहाथमेंपिचकारी ॥ परतरंगफरकतहैंअंगमनमोहनकरतेहैंलाचारी ॥ नेत्रनसेटारगुलालझारतुमइतनीमाफकरौप्यारी ॥ रँगकेशरिकाकीचमचाहैकस्तूरीमृगमदघोरी ॥ १ ॥ मचैधूमभीजैचीरबदनकेलिपटैलगतरंगकीपिचकारी ॥ हाथजोड़ राधेजीकहैंप्रभुखेलोअदबसेगिरिधारी ॥ तुमतोईश्वरहौप्रभुमेरेतुमसेबातनहींन्यारी ॥ परतरंगनिरखतहैअंगचौफेरहँसतलसतसखियांसारी ॥ खेलरहेघनश्यामराधिकासुन्दररूपयुगुलजोरी ॥ मचैधूम० ॥ ॥ २ ॥ ग्वालबालसबदेखैंख्यालगोपाललालआनंदकरैं ॥ अष्टसंख्याकसंगरंगराधेजीपिचक्काफेरिभरैं ॥ उड़तगुलाललालभयेबादरमेमरंगकेबूंदझरैं ॥ ब्रह्माणीरुद्राणिखड़ीसबयुगुलरूपकोध्यानधरैं ॥ केशरकोरँगछिनकैंमोहनराधेजिरंगछिनकैंरोरी ॥ म

चैधूम० ॥३॥ घरघरशोरमचाऐसीहोरीखेलैंगिरिधा
री ॥ धन्यआजकोदिवससखीब्रजराजपधारेब्रह्महा
री ॥ एकतरफहोरीकेरसियाएकतरफसखियांसारी॥
भिडैंआययदिपिटैंजायलठियनसेपीटतब्रजनारी ॥
सखियनकिभीड़राधेजीपधारैंरसियनकीगोबिंदहरी
मचैधूम० ॥ ४ ॥ तरुणनारिनौंढ़ाशिंगारहाथ
नपरमेंहदीरंगरची ॥ आगेहुरँगपीछेहुग्वालनमा
मचिरहीखचाखची॥ टूटैंढालउड़जायखाललठिय
नसेपीटतिदचादची ॥ होतरागमचरहाफागनहिं
लागथागजोरंगमचोरी ॥ मचैधूम० ॥ ५ ॥ बा
जैचंगउड़रहारंगआनंदेदखेतनरनारी ॥ सूरजकार
थथकितभयोहैचकितरहेमुनिब्रह्मचारी॥ सुरबिमा
नभटकेआनंदेउनकीशोभादेखैंसारी ॥ देवनकेसा
थजोड़तहैंहाथब्रजनाथधन्यलीलाप्यारी॥ त्रैलोकी
मैंहोयनहींबरसानाजैसीरँगहोरी ॥ मचैधूम० ॥
॥ ६ ॥ अतिपुनीतब्रजरजब्रजभूमीजहँमोहन

अवतारलिया ॥ ब्रजलीलाकेखातिरप्रभुजीगऊलो कछोड़दिया ॥ असुरमारकाटेहैंभारसबभक्तनकाउ द्धारकिया ॥ ब्रजरजसेवननहींकरीजोजन्मपायक रबृथाकिया ॥ ब्रजकीमहिमाअनंतहैसहदेवकही थोरीथोरी ॥ मचैधूम० ॥ ७ ॥ खासरामगढ़बास, शेठश्रीगुरूशाहमल ॥ औघनश्यामकोदास, होली कहीबनायमल ॥ ॥ इति० ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ लिलहारिनलीला लिख्यते ॥

एकसमैनटनागरनेनटिनीकोसमखासिंगारसँवारी॥ जोजोचहीजेहिअंगआभूषणसोसोबनाइकरीहैतया री ॥ जातचलीछबिकौनगनैतबहींवृषभानुपुरापगु धारी ॥ खोरिनखोरिनटेरतुहैंहमहैंलिलहारकिगोद नहारी ॥ १ ॥ बातसुनीयकआलीतबैवृषभानुसु तापहँजाइगुजारी ॥ एकनटीअतिसुंदररूपकही नहिंजातबिरंचिसँवारी ॥ राधेकहातेहिलावोबुलाइ चलीललिताजहँहैनटनारी॥बोलीबुलावतप्यारीतु

म्हैंचलियेलिलहारकिगोदनहारी ॥ २ ॥ संगसखी
केगयोतबहींजेहिभौनबिराजतिकीरतिवारी ॥ दे
खिस्वरूपछकीब्रजनागरिबोलीतबैसुनियेनटनारी॥
बातहमारीकरौतौकहीनाहिंऔरकछूमनमाहिंबिचा
री ॥अंगहिअंगगोदौगोदनाअरीवोलिलहारकिगोद
नहारी ॥ ३ ॥ गोदिदेबाहनमौंब्रजचंदरुगोलक
पोलनकुंजबिहारी ॥ सोपदमाकरयाबिधिसोंलि
खुगोसेगोबिन्दगलेगिरिधारी ॥ याहिसमैनखसे
शिखलौंलिखुकंतकोनामरुकंतहिंप्यारी ॥ सांव
ररसगोदौगोदनाअरीवोलिलहारकिगोदनहारी ॥
॥ ४ ॥ दहिनेकरअंगलिखौसजनीतुमचारिभुजा
गलेबांकेबिहारि ॥ दंतप्रणामदमोदरकोअरुकंठलि
खोश्रीकृष्णमुरारी ॥ हाथप्रणामलिखोहरिकोदोउ
जोबनबीचलिखौबनवारी॥हिरदैबिचनामलिखौम
नमोहनअरीवोलिलहारकिगोदनहारी ॥ ५ ॥ का
रहमारयहैसजनीरोजगारसमेतफिरैंबैपारी ॥ तुम

जोईकहौहमसोईलिखैंतेरेअंगहिंअंगमेंबेधौबिहारी ॥ वृषभानुललीबरसानेघराबड़ेराजनकीतुमराजदुलारी॥ देहोहमेंतुमकाहककहौहमहैंलिलहारकिगोदनहारी ॥६॥ देहौंमैंहारहजारनकेदुलरीतिलरीहसुलीबड़िभारी ॥ देहौंछलादोउहाथनकेकँगनाबड़ेमोलगढ़ेहैंसुनारी ॥तोहिंआभूषणदेहौंसखीअरुओढ़नकोअपनेतनसारी ॥ मोतिनमालअमोलनकेअरीवोलिलहारकिगोदनहारी ॥ ७ ॥ याछ्रुनिकैलिलहारिननेतुरतैअपनेअवजारनिकारी ॥ जोजोकह्योजेहिअंगगोदावनसोसोस्वरूपबनाइसँवारी ॥ देखिछकीवृषभानुसुताजिमिचंदहिंदेखिचकोरकुमारी ॥ मांगोजोईसोईदेईतुम्हैंअरीवोलिलहारकिगोदनहारी ॥ ८॥ दर्शनपाइमिल्योसबहीबिधि औरकहाहममांगहिप्यारी ॥ मातुकिचोरीचलोयमुनातटआवैंअन्हाइसबैब्रजनारी ॥ याबिधिसोंछलछिद्रकियोपहुँचेघरलैजहँमातपितारी ॥ देखनआईंसबैब्रज

कीठगियाठगिलायहुसुंदरिनारी ॥ ९ ॥ बाजतताल मृदंगसबैबिधिनअरुकिनारिसुमंगलगावैं ॥ द्वारकधेनुअलंकृतकैतहँनंदयशोदासहेतलुटावैं ॥ धन्यवईजोखेलैंनितहींध्वनिवेजिनकेसंगधेनुचरावैं ॥ धन्यकहांलोंबड़ाईकरोंप्रभुपूरणब्रह्मचरित्रदिखावैं॥१०॥ ॥ सोरठा ॥ कहतस्वयम्बरटेरि,लिलहारिनलीलाचरित॥पढ़ैंसुनैंजेहेरि, तरिवैकुंठैंजाइहैं ॥ ११ ॥ तिनकोचरितअनूप,नितअमोलगावतरहत॥सुंदरसुखदस्वरूप, बसहुहृदयममस्वामिबर ॥ १२ ॥ इति श्रीलिलहारिनलीलासंपूर्णा ॥ ॥ ॥

अथबिसांतिनलीलालिख्यते

दोहा॥ वेषबिसांतिनकोकियो, जेहिप्रकारयदुनंद ॥ श्रीराधाकेसँगरमे,कहौंतौनरचिछंद ॥छंद ॥ एकसमयब्रजचंदनंदसुतमनमेंयाहि बिचारी ॥ धरिकैबेषबिसांतिनजीकोछलियोराधाप्यारी ॥ कीनखापकोलहँगापहिरेअरुणजरकसीसारी॥अँगियालालस्या

हबंदनकीअतिछबिदेतकिनारी ॥मोतिनकीपहिरेन
कबेसरझालरदारबनाई ॥ मानहुरतिपतिरचीआप
करकहिनजातसुघराई ॥ काननकरनफूलअतिसोहैं
माथेबीचजड़ाऊ ॥ ताऊपरअतिलसतबेंदनीमोति
नमांगभराऊ ॥ कंठलसतदुलरीअरुतिलरीगजमुक्त
नकेहारा ॥ मानोयुगसुमेरबिचव्हेकैधसीगंगकीधा
रा ॥ गरेहमेलमालकंचनकीअरुपहिरेखगबारी ॥
मानहुँकामआपनेकरसोंरुचिरुचिबिबिधसवांरी ॥
बाजूबंदउपरनासोहैसोहतभुजमाहीं ॥ हरीचुरिनबि
चपट्टाखारीउपमाताकीनाहीं ॥ हाथनमेंकंचनके
चूरासोहरीअधिकबनीहैं ॥ उपमाताहिकवनकीदी
जैलागीकनीघनीहैं ॥ दसौंअँगुरियनलसतमुद्रिका
हीरनजड़ितबनाई ॥ कोकहिसकैश्यामसुंदरकीग
हननकीसुघराई ॥ पंचकलीत्रिबलीपरसोहैचुनिचु
निंनीबीबांधी॥ सुंदरनाभिमनोहररूपरतापरकोंछी
साधी ॥ कटिकिंकिणीझुनुकबिछुवनकीघुँघुरूरुनु

झुनुबाजैं ॥ कोटिकलाछबिरंभाकीन्होगजगतिचाल बिराजैं॥बेंदीलसैभालकेऊपरठोढ़ीकोतिलनीको ॥ मानहुँशशिबिचलागिरह्योहैगहबरफूलअरसीको ॥ बिंबाफलसोंअधरविराजैंऔरसुघरसबदेहीं ॥ मृदुमुसकानपिआरलालकीमनहुँमोलजगलेहीं ॥ कमलनयनकाजलअतिसोंहैमेहँदीकरनबिराजै ॥ चरणकमलबिचदियेमहाउरदेखिकामरतिलाजै॥पहिरिलियोनखशिखलोंगहनाजोमोहनमनमाने ॥ सुंदरडब्बाजबाहिरभरिकैडगरिचल्योबरसाने॥पानखातमुसकातजातहरिप्रेमसहितरसभीने॥मनमेंकरतबिचारश्यामजीकेहिविधिराधेचीने।पहुँचेजाइतुरतबरसानेनारिबेषवनमाली ॥ पूंछतभयेएकगोपीसोंसुनहुबातइकआली ॥ कवनभवनवृषभानुरायकोमोसेकहौसहेली ॥ मैंसकुचतिहौंजातराजघरआईइहांअकेली ॥ कौनगांवसेतुमआईहौअतिसुंदरसुकुमारी ॥ काहकामबृषभानुभवनमेंमोसेकहेबरनारी ॥ मथुरा

पुरसेमैंआईहौंजातिजवहरिनकेरी ॥ जोकोइलेइमालमुक्तामणिहैममपासघनेरी ॥हीरामोतीलालजवाहिरलहसुनियाअरुपन्ने ॥ पुष्पराजअरुनीलकपंतीमेरेभरेटेपन्ने ॥ बिरजागईपँवरिकेभीतरराधेखबरिजनाई ॥ मथुरापुरतेएकबिसांतिनिअतिसुंदरिइतआई ॥ खुलेसांवलीपानीसजनीदेखतहीबनिआवै ॥ औरकहांलौंकहियेप्यारीरतिकोलाजलजावै ॥हीरामोतीलालजवाहिरउनकेभरेटेपन्ने॥ लालबांधरालालचूनरीओढ़ेजरदउपन्ने ॥ राधेकहीसुनोंहोललिताकीजेयहैमसौदा ॥ बोलिबिसांतिनिलेहुअटापरकरियेवाकोसौदा॥ ललितागईपँवरिकेबाहरबोलीबचनसयानी ॥तुम्हैबुलावतराधेप्यारीचलहुबिसांतिनरानी ॥ सुनिललिताकेबचनमनोहरअतिसुखपायोमोहन ॥ सुंदरमहलअँटाकेऊपरचलेतासुकेगोहन ॥ चढ़तअँटारीऊपरमोहनमनहींमनमुसकाता ॥ गयेनिकटवृषभानुसुताकेचटकभयेसबगाता ॥ बि

सांतिनकोरूपदेखिकैराधेअतिसुखपायो ॥ धरिकै हाथगलीचाऊपरअपनेढिगबैठायो ॥ पूंछिकुशल वृषभानुनंदिनीबीरालैकरदीनो ॥ प्रेमसहितआनंद मानिकैबिहँसिबिसांतिनिलीनो ॥ राधेकहीसांवली जीसेकौनगांवसेआई ॥ कहानामहैतेरोसजनीमेरे मनअतिभाई ॥ काहानामहैतेरोसजनीकाहनाममह तारी ॥ कौनगांवमेंसखीबिबाहीमोसेकहुबरनारी ॥ मेरोनामसांवलीसजनीपितासुरसुतकहिये ॥ मा ताकोहैनामदेवकीमथुरापुरमेंरहिये ॥ कुंदनपुरससु रारिहमारीनृपभीषमकेदेशा ॥ तुमसेकहूंसत्यमैंप्या रीयामेंनहींअँदेशा ॥ उत्तमकुलक्षत्रीकीबेटीयहबे पारहमारे॥लीजैमालजोनमनभावैआइउँदेनतुम्हारे ॥ देशदेशकेरतनलाड़िलीदेशदेशकीचीजे ॥ देश देशकेमाणिकमोतीदेशदेशकीबीजे ॥ मेरेभरेटेपन्ने सजनीमरजीहोइतौखोंलो ॥ नहिंतौजाउँभवनअप नेकोपायोंदरशअमोलो ॥ बिहँसिकहीवृषभानुनंदि

नीसुनोंसखीपरबीना ॥ खोलिदिखावोहमैंसांवली अपनोमालनगीना ॥ खोलेनडब्बाजबैबिसांति नप्रकटइंदुभइतारा ॥ मानहुँएकठौरधरिराखेइंदुबधू नभतारा ॥ ईदेखोमोतीअतिसुंदररतननगरसेआ ये॥उजरेगोलमोलअतिसुंदरतुमहितमांगिपठाये ॥ ईहीराहैंपद्मपुरीकेउजरेलालहरेरे ॥मोतीचूराहैबंसप तीकोकालेचोहरेपरे॥ पुष्पराजलहसुनियांपन्नेनील कऔरपिरोजा ॥ ईआयेहैंहिंगलाजसोंसबसोंसिरो सिरोजा ॥ यहलीजैदुलरीअरुतिलरीटिकुलीकाशी केरी ॥ अतिसुंदरदामिनिसीदमकैशोभादेतघनेरी ॥ ईककनाहैंप्रयागराजकेहीरनजडितबनाई ॥ पहिरि देखियेराधेप्यारीलागतपरमसुहाई ॥ ईछरलरीगया सेआईसखीपहिरिकैदेखो ॥ गोरेगलेलगतअतिनी कोसबसेअधिकबिशेषो ॥ ईबाजूबँदअवधपुरीकी ब्रह्मावर्तकिडोरी ॥ कुरुक्षेत्रकीचुटबँदचोलीउजैरा धागोरी ॥ ईमूँदरीहैंनीमषारकीलगेनगीनेलोने ॥

पहिरिदेखियेराधेप्यारीमानहुँआइउगौने ॥ ईलीजै
उज्जैनपुरीकेकरणफूलअरुबीजैं ॥ आवोउठिकैपहि
रोराधेमैंनिजकरगुहिदीजे ॥ ईलीजैपुष्करकीदोहरी
मोहरीदारबनीहैं ॥ उपमाताहिकवनकीदीजैलागी
कनीघनीहैं ॥ ईलीजैमथुराकेघुँघूरूसजनीअधिकब
नेहैं ॥ पहिरिदेखियेअपनेपांयनरुनुझुनुबजतघने
हैं ॥ सिगरोमालबिशालआपनोमनिहारिननेदिखा
ई ॥ देखिदेखिबृषभानुसुताकेमनहींमनअतिभाई ॥
राधेकहीबिसांतिनजूसेसुनोबातयकमोसों ॥ क
हियेमोलमालअपनेकोमैंपूछतिहौंतोसों ॥ जवन
जबननगजितनेकोहैजुदाजुदाकरिभाषो ॥ हमको
देबसुनाइसांवलीरंचककपटनराखो ॥ जितनेको
हैलीनहमारोउतनेहीकोदेहों ॥ हमैंतुम्हेंहितभयो
लाड़िलीतुमसोंनफानलेहों ॥ यकयकनगहैलक्ष
टकाकोसत्यकहौंदिलखोली ॥ ईतीनिउहैंबाढ़िमो
लकेबेसरिचुटबँदचोली ॥ईपहिरोतुमकुँवरिराधिका

मैंरुचिसोंपहिराऊं ॥ दामनकीकछुअटकनकीजैदी
जैजबफिरिआऊं ॥ सखीअनोखीवस्तुमिलैगीसोतु
मकादैजैहौं ॥ सत्यकहतिहौंभाइनकिरियातुमसोंन
फानलेहौं ॥ तुमसेअधिकनप्यारीमोरेयहनिश्चयक
रिजानों ॥ सबसेदामअधिकतुमदेहौयहमेरेमनमा
नों ॥ यहकहिकैवृषभानुसुताकोअपनेढिगबैठाई ॥
बेनीगूंथिबिंदिकादीन्होहँसिबेसरपहिराई ॥ चोली
खैंचिजोहरिनिलीन्होमनमेंअतिरुचिबाढ़ी ॥ पहि
रिदेखियेअंगियाराधेढीलहोतकीगाढ़ी ॥ अपनेक
रकमलनपहिरायउँदेबँदमुखतनहेरी ॥ अतिखुलि
परीतुम्हारेराधेभईउमानेकेरी ॥ अरसपरसराधेसोंक
रिकैफेरिजवहरिनिबोली ॥लीजैमालविशालराधि
काचीजैबहुतअमोली ॥ यकयकनगहैलक्षटकाको
सुरुखपरखकैलीजे ॥जबमैंआऊंगांवतुम्हारेतबैदाम
मोहिंदीजैं ॥लेहैंदामआपनोसजनीदरशतुम्हारोले
हैं ॥मोकहँलाभचौगुनोहोइहैतुमसेकहाठगैहैं ॥ य

हकहिकैतबकहीबिसांतिनजोअनुशासनपाऊं॥तौमैं
जाउँभवनअपनेको कालिहपरौंफिरिआऊं ॥ बिहँ
सिकहीबृषभानुनंदिनीसुनुसखिबातहमारी॥कौतु
कएकदिखात्रौंतुमकोआजुइहांरहिजारी ॥ नंदनँद
नयशुदाकेनंदननंदगांवमेंहैंरी ॥ तिनकेदर्शनलेत
सांवलीअतिसुखपैहैंतेरी॥कोटिमदनछबिपटतरना
हींशोभाअधिकबिराजै ॥ औरकहांलोंकहियेसज
नीसुरलीमहाबिराजै॥ पहिरेकरकंचनकेचूरासुरली
करमेंसोहै ॥ बेणुबजावतनाचतगावतसबहीकोम
नमोहै ॥ गरेमालगुंजनकीपहिरेकुंडलझलकतका
नन ॥ गोलकपोलनमेंद्युतिझलकतअतिसोहतछ
बिआनन ॥ माथेमुकुटमोरपक्षनकोमानहुँउयेससे
रे ॥ मटकनिचालमुकुटकीलटकनिसोइमनमाहिं
बसेरे ॥तीनलोकदशचारिभुवनमेंऐसीछबिनहिंआ
ली॥जैसीछबिहैनंदनँदनकीगहतअहैबनमाली॥
भलीबाततुमकहीराधिकामोरेमनअतिमाना॥का

ल्हिदेबारीकादिनहैरीमोहिंबेगिघरजाना ॥ दीजै पानबिदाकोमोहीमैंअपनेघरजैहौं ॥ तुम्हारीशील सुघरताराधेमथुरात्रियनसोंकैहौं ॥ पानखैंचिराधा नेलीन्हौंरुचिसोंबीरालाई ॥ दैकेखीललौंगकीराधे तिनकेहाथगहाई ॥ पानदेतललितानेचीन्हौंबिर जैसयनबुझाई ॥ एतौमोहिंऐसोकछुलागैलंगरढी ठकन्हाई ॥ बिरजाबैठिगईतिनकेढिगऐसीबात उचारी॥घुँघुरुतुम्हारीबहुतबनीहैंकौनगांवकीढारी॥ अरसपरसघुँघुरूनसोंकरिकैहँसिकैपांवउठाई॥लखि कैपद्मकहनअसलागीऐसोबेषनआई ॥ बिरजास खीसबनसोंचंचलक्षणभरिरहिनहिंजाती ॥ हाथपक ड़िमनिहारिनजीकोजाइटटोलीछाती ॥खसिलपडे दोऊछतियनसोंउलटेदियेमंजीरा॥दांतअँगुरियादबी राधिकाधन्यधन्यबलबीरा ॥ मोरेकाजलाजतजिमो हनइतोपरिश्रमकीनो ॥ नारिबेषबनिआयउलालन मोहिंबड़ापनदीनो ॥ जाकोजपतशेषअजशंकरसुर

सुनिजासुबसेरे ॥तेलालनतुमबनेफिरतहौब्रजबनि
तनकेचेरे ॥ नंदकंदआनंदकेबासीबनवारीसुखरा
सी ॥ ऐसोवेषनकीजेमोहनमैंराउरकीदासी ॥ या
ब्रजकेनरना रिचवाईनेकशोधजोपावैं ॥ घरघरघेरुहो
वहैमोहनबड़ीफसादमचावैं ॥ तातेजाउभवनअपने
कोसुनियेमदनगोपाला ॥ हमैंतुम्हैंफिरभेंटहोइगी
नवलकुंजमैंलाला ।अरसपरसराधेसोंकरिकैनयनसों
नयनमिलाये ॥नंदकंदआ नंदमानिकैनंदगाउँचलि
आये ॥ यशुदाकहीसुनोमनमोहनसबदिनकहाँगँ
वायो ॥बलकेसंगकलेवाकरिकैतबतेअबफिरिआयो
॥ खेलतरहेउँसंगग्वालनकेवंशीबटकीछाहीं ॥ काह
कहौंमेरीमातयशोदाखेलनजाउँकिनाहीं ॥ भलीक
हीमेरेप्राणपियारेअबचलिकरोबिआरी ॥ बैठीमह
रितुम्हेंपरखेहैंपरुसिधरीहैथारी॥ नंदसंगहरिभोजन
कीनोबीरामुखमैनाई ॥ सोइगयेपलँगाकेऊपरनिर
खिमातुबलिजाई ॥प्रेमदासबलिबलिचरणनकीली

लागाइसुनाई ॥ जोकोइसुनैकानचितदैकैतरिबैकुंठै जाई ॥ इति श्रीबिसांतिनलीलासम्पूर्णा ॥

॥ बासुरीकेकबित्त ॥

खगमोहेमृगमोहेनगमोहेनागमोहेपन्नगपतालमोहे धुनिसुनिजासुरी ॥ सुरमोहेनरमोहेसुरनसुरेशमोहे मोहिरहेसुनिकैअसुरअरुआसूरी॥भनतगुमानकहौ मोहिबेकीकहाबाचिचरऔअचरमोहेउमँगिहुलाशु री ॥गोपिनकेवृन्दमोहेआनँदमुनीन्द्रमोहेचन्द्रमोहे चन्द्रकेकुरंगमोहेबांसुरी॥१॥भूल्योखानपानभूल्यो पटपरधानसबलोगनकोभूलिगयोनासुऔनिबासु री ॥ चकिरहींगैयांचाराचौंचनचिरइयांदाबिचितव निचलचुखचेतचितुनासुरी ॥ हैपरींभरीसीहैपरीसी वृषभानुजाईजीवतजलावैबेगिआवैदृगआंसुरी॥का न्हरसकेसेकैछणाइमेरीबीरकबिकबकीबिशासिनि बगारैविषबांसुरी ॥ २ ॥ जलकीनघटभरैंमगकीनप गधरैंघरकीनकछुकरैंबैठीभरैंसांसुरी ॥ एकैसुनिलो

टिगईएकैलोटषोटभईऐकनकेहगननिकरिआयेआं
सुरी ॥ कहैरसनायकसोब्रजबनितनबीधवधिकक
हायेहायहुईकुलहांसुरी ॥ करियेउपायबांसडारिये
कटायनाहींउपजैगोबासनाहींबाजैफेरिबांसुरी॥३॥

॥ रासलीला ॥

लावनी ॥ वृन्दावनरचोगुपालरहसकुंजनमें ॥ थेइ
थेइनागरनटनिरतकरतसखियनमें ॥ निशिशरद
चांदनीचन्दपरमसुखदाई ॥ बंशीमेंमदनगोपालम
धुरधुनिनाई ॥ नारदसुरशेषमहेशमुनिनमनभाई ॥
मोहींब्रजबालबिशालसुरतिबिसराई ॥ धुनिरहीम
नोहरछायलोकलोकनमें ॥ थेइथेइनागरनटनिरतक
रतसखियनमें ॥ बाजीबाजीयोंकहैंबांसुरीबाजी ॥
बाजिनकेलागीचोटबिरहकीताजी ॥ उलटेआभूष
णपहिरिकिंकिणीसाजी ॥ अम्बरकीनहींसँभारबि
कलबनभाजी ॥ मुखचन्दसखिनकेबन्दभरेयौबन
में॥थेइथेइनागरनटनिरतकरतकुंजनमें ॥ बोलेगो

पिनसेकठिनबच्चनबनवारी ॥ तजिलोकलाजतुमच
लींकहांकोप्यारी ॥ मृदुबचनकहैंसमुझायबिरजकी
नारी ॥ वंशीकीलागेचोटकरेजेकारी ॥ मनहरणम
घुरधुनभनकपड़ीकाननमें ॥ थेइथेइनागरनटनिरत
करतसखियनमें ॥ बंशीबटमेंक्यारचीनवलहरिमा
या ॥ जितनीगोपीसोइकृष्णरूपदिखलाया ॥ ति
हुँलोकचतुर्दशभुवनपरमसुखपाया ॥ बाजतमृदंग
बंशीमेंरागदरशाया ॥ छबिरहीअनूठीछायनन्दन
न्दनमें ॥ थेइथेइनागरनटनिरतकरतकुंजनमें ॥ डा
लेव्रजबालगोपालगयेबिचबैयां ॥ छमछमकरतींप
गधरफिरैंफिरकैयां ॥ दामिनिदमकैंचहुँओरउमरल
ड़कैयां ॥ सुरबरसतयमुनाकूलफूलवनमैयां ॥ हो
रहींरागिनीरागझुंडझुंडनमें ॥ थेइथेइनागरनटनिर
तकरतकुंजनमें ॥ बिचबिचगोपिनकेदुमुकिचलत
बनमाली ॥ इतउतव्रजबालबिशालबजावैंताली ॥
तातातातथेईकरैंमदनमतवाली ॥ व्रजबालमदनमो

हनकेरिझानेवाली ॥ गावैंगणेशपरसादचरितछन्द नमें ॥ थेइथेइनागरनट निरतकरतकुंजनमें ॥ इति०

॥ यमुनाजलबिहारलीला ॥

रागिनीबिहाग ॥ यमुनाजलक्रीड़तनँदनन्दन ॥ गोपीवृन्दमनोहरचहुँदिशिमध्यअरिष्टनिकन्दन॥प करेपाणिपरस्परछिनकतशिथिलसलिलभुजचन्दन ॥ मानहुँयुवतियूथअहिपतिकोलग्योअंकदैबन्दन ॥ कचभरिकुटिलसुदेशअम्बुकणचुवतअंगगतिमन्दन ॥ मानहुँभरिगंडूषकमलतेडारतअतिआन्दन ॥ भुजभरिअंकअगाधचलतलैज्योंलुब्धकखगफन्दन ॥ सूरदासप्रभुसुयशबखानतनेतिनेतिश्रुतिछन्दन ॥ १ ॥रागिनीबिहाग ॥ राधेछिरकतिछैलछबीली ॥ कुचकुंकुमकंचुकिबँदछूटेलटकिरहीलटगीली ॥ वन्दनशिरताटंकगंडपररतनजटितमणिलीली॥गतिगयन्दमृगराजसुकटिपरशोभितकिंकिणिढीली ॥ मचेउखेलयमुनाजलअन्तरप्रेममुदि

तरसझीली ॥ नन्दसुवनभुजग्रीवबिराजतभागसुहा
गभरीली ॥ बर्षतसुमनदेवगणहर्षितदुंदुभिसरसब
जीली ॥ सूरश्यामश्यामाजलक्रीड़तयमुनतरंगथ
कीली ॥ २ ॥ इति यमुनाजलबिहारलीलासमाप्त

॥ बसन्तवर्णनसवैया ॥

भावैभरीरसआवैछकीसुछकावैरीनैनसोंनैनमिलावै
गावैहिँ डोलबजावैमृदंगहँसावैहँसैसुरतालमिलावै
छावैगुलालरचावहिरंगसखीसुखबीचसुगंधनिला
वै ॥ रीझिरिझावैअनंगजगावैबिहारीको प्यारीबसंत
खिलावै ॥ १ ॥ ॥ इतिश्रीरामचंद्रार्पणमस्तु ॥

॥ राधिकाजीकीबधाई ॥

सुनतजन्मवृषभानुललीकोउठिधाईंव्रजनारीहो ॥
मंगलसाजलियेकरकंगनपहिरैंरँगरँगसारीहो ॥ जो
जैसेतैसेउठिधाईंसुनतहिँ स्वामिनिनामाहो ॥ भा
दौंनदीसरसउमगाईचहुँदिशिव्रजकीबामाहो ॥ बे

णीशिथिलखशित कचझुमुसनलुलितपीठपरसोहैं
हो ॥काजरनयनश्रवणचलतरेखनदेखतहीमनमोहैं
हो॥ झुमझुममंडितमुखशशिशोभितबेंदीहीरजड़ाई
हो ॥ अधरतमालरंगसोंभीनेंगावतसरसबधाईहो ॥
आनँदउँमग्योगातगातमैंसबहियअधिकउछाहहो॥
सबघरपुत्रभयोधनबाढ्योसबहीकोमनुभ्याहहो॥लो
चनतृषितदरशविनव्याकुलपगहूंसोंबढ़िधावैंहो ॥
चौंकिचौंकिचारहुदिशिमगमगमानहुंकंजबिछावैं
हो ॥ आइजुरींवृषभानुभवनमैंमुखनिरखतसुखपा
योहो ॥पगपरितरवाचूमिनिरखिदृगजन्मसुफलकर
वायोहो ॥ धनिदिनधनिछिनधनिपलधनियहघ
रीसोहाईहो॥ जामेंतीनिलौककीस्वामिनिभानुभव
नप्रगटाईहो ॥ नाचतगावतकरतकोलाहलप्रेमउमँ
गिअकुलानीहो॥हँसतप्रमोदकरतमनफूलतबोलत
कोकिलबानीहो ॥ अतिमदमत्तबदतनहिँ काहूउ
छलितरसआवेसाहो ॥ अंचलखुलतनाहिँ सुधित

नकीभईएकहीमेसाहो ॥ सबब्रजकोशृंगाररूपरसभा
गसुहागसुहायोहो ॥ मोहनकीसरबससंपतिसँगमि
लिबरसानेआयोहो ॥ कोकहिसकैकहाकहिभाषैक
बिपैकहिनहिंजाईहो ॥ जोसुखशोभाताक्षणबाढ़ी
अनुभवनयनलखाईहो ॥ नंदभवनतेबढ़िसुखतेहिं
क्षणक्योंप्रगटायोहो ॥ हरिश्चंद्रवल्लभपदबलतेकेवल
यहलखिपायोहो ॥ १ ॥ इति राधाजीकीबधाईस०

॥ मंगलनामोच्चार ॥ रागभैरव ॥

मंगलमाधोनामउच्चार ॥ मंगलसदनकमलकरमंग
लमंगलजनहिसदासंभार ॥ देखतमंगलपूजतमंग
लगावतमंगलचरितउदार ॥ मंगलश्रवणकथारसमं
गलमंगलतनवसुदेवकुमार ॥ गोकुलमंगलमधुबन
मंगलमंगलरुचिवृन्दावनचन्द ॥ मंगलकरनगोब
र्द्धनधारीमंगलवेषयशोदानन्द ॥ मंगलधेनुरेनुभव
मंगलमंगलमधुरबजावतबेनु ॥ मंगलगोपबधूपरिर
भणमंगलकालिन्दीपयफेनु ॥ मंगलचरणकमल

मणिमंगलमंगलकीरतिजगतनिवास ॥ अनुदिनमं गलध्यानधरतमुनिमंगलमतिपरमानँददास ॥ १ ॥ मंगलरूपयशोदानंद ॥ मंगलमुकुटकानमधिकुंड लमंगलतिलकबिराजतचन्द ॥ मंगलभूषणसबअँ गसोहतमंगलमूरतिआनँदकंद ॥ मंगललकुटकाँ खमैंचापेमंगलमुरलिबजावतमन्द ॥ मंगलचालम नोहरमंगलदर्शनकरतमिटतदुखद्वंद्व ॥ मंगलव्रजप तिनामसबनकोमंगलयशगावतश्रुतिछन्द ॥ २ ॥

॥ बधाईबलदेवजीकी ॥

आजुव्रजदूनोबढ्योअनन्द ॥भादौंसुदीपंचमीस्वाती बुधप्रगटेयदुचन्द॥ अग्रजश्रीगिरिधारनजूकेलीला ललितअमन्द ॥ रोहिणिमाताउदरप्रगटभयेहरणभ क्तकेदंद॥दानदेतनंदफूलेआवतगावतदेवसुछन्द ॥३

॥ शिवजीकीवन्दना. छन्दछप्पय ॥

जयमहेशभुजगेशशेषबरहारविभूषण ॥ जयत्रिलो

कभटअजितविजितकामादिकदूषण ॥ जयतिबाल विधुसकलकलितअतिललितभालतल ॥ जयमृकं डमुनितनयविनयबशहरितकालबल ॥ जयजयली लालवतुहिनगिरिकुंवरिमनोहरिमनहरण ॥ जयज यतिबशीकृतकरणममइच्छापूरणकरण ॥४॥ इति०

॥ श्रीराधिकाजीकीवन्दना ॥

छन्दछप्पय ॥ जयतिजयतिश्रीकृष्णचन्द्रमुखचंद्र चकोरी ॥ जयतिजयतिश्रीकृष्णनयनमृगबन्धनडो री ॥ जयतिजयतिश्रीकृष्णकमलमधुमधुपबालिका ॥ जयतिजयतिश्रीकृष्णप्रेमतरुसरसथालिका ॥ जय तिजयतिचातकधरणिकृष्णतनुधरणिमुदभरणि ॥ जयतिजयतिसुखशरणिममइच्छापूरणकरणि ॥१॥

॥ श्रीकृष्णजीकीवन्दना ॥

छन्दछप्पय ॥ जयजयमाखनचोरचारुतरमोरपंखध र ॥ जयजयनन्दकिशोरभक्तजनघोरदुःखहर ॥ ज

यजयरंजितभृंगपुंजघुंजितनिकुंजबर ॥जयजयमंजु लकंसमानभंजनअनूपकर ॥ जयजयप्रभुगोकुलगो पकुलगोपीकुलगौरवभरण ॥ जयजयगोबर्धनधरण ममइच्छापूरणकरण ॥ १ ॥ इति० ॥ ॥ ॥

॥ अथ श्रीकृष्णजन्मसमय ॥

सवैया ॥ पूतसपूतजन्योयशुदायतनीसुनिकैवसुधा सबदौरी ॥ देवनकेहूअनंदभयोसुनिधावतगावत मंगलगौरी ॥ नन्दकछूइतनोजोदियोघनश्यामकुबे रहुँकीमतिबौरी ॥ म्वहिँ देखतब्रजहिँलुटायदियोन बचीबछियाछछियानपिछौरी ॥ १ ॥ फूलगयेगो पग्रहगोपिनकोंभूलगयेहुलसीमचाईमातेप्रेमसरसा ईमें ॥ कीचमचीदधिकीअकिगैलगैलनमेंरंगरसअं गपगेआनँदबधाईमें ॥ छोटीसीचोटीकछोटीकटि मोटीभईगोपीसबैचोपीरूपसागरकन्हाईमें ॥ राजी दिलमोदनविनोदनविहँसनन्दनाचेआजआंगनक न्हाईकीबधाईमें ॥ २ ॥ इति० ॥ ॥ ॥

॥ राधिकाजीकासौभाग्यवर्णन ॥

कवित्त ॥ ब्रह्ममेंढूंढोपुराणनवेदनमंदसुनेचितचौं गुनेचायन॥देख्योसुन्योंनकबौंकितहूंवहकैसोस्वरूपहैकैसोसुभायन ॥ हेरतहेरतहारिफिन्योंरसखानिबतायोनलोगलुगायन ॥ देख्योंकहांवहकुंजकुटीतटबैठ्योपलोटतराधिकापायन ॥ १ ॥ ॥ इति०

॥ गोपिनकोसौभाग्यवर्णन ॥

कवित्त॥शेषमहेशगणेशदिनेशसुरेशहुजाहिनिरन्तरगावैं ॥ जाहिअनादिअनन्तअखण्डअछेदअभेदसुवेदबतावैं ॥ नारदलेशुकव्यासरटैपचिहारेतऊपुनिपारनपावैं॥ताहिअहीरकीछोहरियांछछियाभरिछांछकोनाचनचावे ॥ १ ॥ गुंजगरेशिरमोरपखाअरुचालगयंदकीमोमनभावैं ॥ सांवरोनन्दकुमारसबैब्रजमंडलीमेंब्रजराजकहावैं ॥ साजैंसमाजसबैशिरताजकीलाजकीबातकहीनहिंआवैं ॥ ताहिअहीरकीछोहरियांछछियाभरिछांछकोनाचनचावैं ॥ २ ॥

॥ उमारमासंबादबर्णन ॥

कबित्त ॥ भिक्षुकतिहारोकहांबलिशालामखजहां सर्पनकोसंगीकहुँहोइहैक्षीरसरमैं ॥ एरीबहुरंगीबैल वालोकहांनाचतहैत्रिभंगीकहीहोइहैग्वालवनमैं ॥ चाउरकोचबैयाकहुँहोइहै सुदामाजीकेपासबिषको अहारीकहांपूतनाकेघरमैं ॥सिन्धुसुताआनिमिली तर्कसोंतर्ककरिगिरिजासुसक्यातजातझारीलियेक रमैं ॥ १ ॥ इति॰ रामचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥

॥ शिवस्वरूपबर्णन ॥

सवैया ॥ सांपकोकंकणमालकपालजटानिकीजुटर हीजटियातैं ॥ खालपुरानोपुरानोइबैलसुऔरकी औरकहैबिषमातैं ॥ पारवतीपतिसंपतिदेखिकहैंयह केशवसंभ्रमतातैं ॥ आपुनमांगतभीखभिखारिनदै तदईसुहँमांगीकहांतैं ॥ १ ॥ इति॰ ॥ ॥

॥ श्रीयशोदाजीकोसौभाग्यबर्णन ॥

कबित्त ॥ जासुखकोसुरपत्तिफणपतिपैठिपताल्र

सातलतूम्यौं ॥ जामुखकोशिवलायसमाधिरखाय जटाशिरधूरिमैंघूम्यौं ॥ जामुखकोचतुराननहूँक बिब्रह्मभनैंघटहूघटघूम्यौं ॥ सोमुखनंदकीरानिय शोमतिदाबिकपोलदुहुंकरचूम्यौं ॥ १ ॥ ॥

॥ रामबालरूपवर्णन ॥

कबित्त ॥ तंत्रकोबिचारमंत्रयंत्रनकोसारभुवभारका रबीतरागजोअधारपावई ॥ तत्वनकोअंशचंडअंश कोप्रशंसवंशवृजिनविध्वंशअवतंशछबिछावई ॥ वे दऔनिषेधब्रह्मजीवकोअभेदलखवनजातवेददेवखे दजोनशावई ॥ अवधमहाभागनस्वयम्भुस्वच्छमां गनसोंकोशलेशआंगनमैंकागनकोधावई॥१॥इति०

॥ शीलताबर्णन ॥

कुंडलिया ॥ मंडनहैंऐश्वर्यको, सज्जनतासन्मान॥ वाणीसज्जनसूरता, मंडनधनकोदान ॥ मंडनधनको दानज्ञानमंडनइन्द्रीदम ॥ तपमंडनअक्रोधनियममं

डनसोहतसम ॥ प्रभुतामंडनमाफधर्ममंडनछलछंड
न ॥ सबहिनमैंसरदारशीलतासबकोमंडन ॥ १ ॥

॥ चेतावनी ॥

कवित्त ॥ रहाहैनकोईयहांरहिहैनकोईयहजानैसब
कोईपैनमानैंमोहपरिगे॥हाथीऔरघोड़ेजोड़ेछोड़ेसब
ठौरठौरभौननमैंगाड़ेभूरिभांडेतेविसरिगे ॥ कहैछ
बिनाथरघुनाथकेभजनबिनऐसेहीबिचारेजन्मकोटि
ननिसरिगे ॥ जंगवालेजोरवालेजाहिरजरबवालेजो
सवालेजालिमचिताकीआगिजरिगे ॥ १ ॥

कुदिनवर्णन ॥

कबित्त ॥ वेधाहोतफूहरकलपतरुथूहरपरमहंसचूह
परपढ़ैथापरिपाटीको ॥ भूपतिमँगैयाकामधेनुठांठगै
वागयंदमदचुवतसुचेरोहोतचाठीको ॥ काहेशिव
लालतबधर्मकीन्हेपापहोतबैरीसगबापहोतसांपहो
तसांटीको ॥ निर्धनीकुबेरऔसियारसमशेरहोतदि
ननकेफेरसोंसुमेरहोतमाटीको ॥ इति० ॥

॥ भक्तिबर्णन ॥

सवैया ॥ कामसेरूपप्रतापदिनेशसेसोमसेशील
गनेशसेमानें ॥ हरिचन्द्रसेसाँचेबड़ेबिधिसेमघवासे
महीपविषयसुखसानें ॥ शुकसेमुनिनारदसेबकसे
चिरजीवनलोमशसेअधिकानें ॥ ऐसेभयेतौकहातु
लसीजोपैजानकीजीवनरामनजानें ॥ १ ॥ झू
मतद्वारअनेकमतंगजँजीरजड़ेमदअंबुचुचाते ॥ ती
खेतुरंगमनोगतिचंचलपौनकेगौनहुँतेअधिकाते ॥
भीतरचन्द्रमुखीअवलोकितबाहरभूपजुरेनसमाते ॥
ऐसेभयेतौकहातुलसीजोपैजानकीनाथकेरंगनराते
॥ २ ॥ भोगमैरोगवियोगसँयोगमैयोगमैकायाकले
शकमायों ॥ त्योंपढुमाकरवेदपुराणपढ्योंपढ़िकैब
हुबादबढ़ायो ॥ दौऱ्योंदुराशामैंदासभयोंपैकहूंबि
सरामकोधामनपायों ॥कायाकमायोंसोऐसहीजीव
नहायमैंरामकोनामनगायों ॥ ३ ॥

॥ सोलहशृंगारवर्णन ॥

कबित्त ॥ प्रथमसकलशुचिमंजनअमलबासया वकसुदेसकेशपासनिसुधारिबो ॥ अंगरागभूषणबिबिधमुखबासराग कज्जलकलितलोललोचननिहारिबो॥बोलनिहँसनिमृदुचातुरीचलनिचारुपलपलपतिव्रतप्रीतिंप्रतिपालिबो ॥ केशोदाससबिलासकरहुकुँवरिराधे इहिबिधिसोलहाशिंगारनिशिंगारिबो ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ आभूषणवर्णन ॥

कबित्त ॥ बिछियाआनौठबांकेघूंघुरूजंरायजरीजहरिछबीलीक्षुद्रघंटिकाकीजालिका ॥ मूंदरीउदारपौंचीकंकनऔचूरीचारुकंठकंठमालहारपहिरेंगोपालिका ॥बेनीफूलशीशफूलकर्णफूलमांगफूलखुटिलातिलकनीकमोतीसोहैबालिका ॥ केशोदासनीलवासज्योतिजगिमगिरही देहधरेश्यामसंगमानोंदीपमालिका ॥ इति० ॥

॥ रेखता--रासलीला ॥

रसरहसमेंरसीलोनाचतनवलबिहारी ॥ अद्भुतशृंगारकीन्हेंसंगसोहैकीरतिकुमारी ॥ बाजतमृदंगबीनासुरचंगबजैन्यारी ॥ बाजतकरतालझांझेंमुरलीकोशोरभारी ॥ गातीहैंगीतगोपीशुभरागकोउचारी ॥ लेतींहैंतालसम्पैदेतीहैंसबैतारी ॥ ह्वैकैत्रिभंगकबहूंबंसीमधुरबजावैं॥धुर्पदमलारठुमरीसुंदरसुरागगावैं ॥ करकोपकरिकैकबहूंनाचनप्यारीसिखावैं ॥ यहिभांतिसेमगनह्वैरसरहसमेंबढ़ावैं ॥ प्रियादासआसपाससोहैंगोपकीकुमारी ॥ तिनमध्यसुभगराजतवृषभानुकीदुलारी ॥ १॥ इति० ॥

॥ छद्मदानलीला ॥

॥ राग सुंदरकलीकादादरा ॥ छबिआगरनागरबन्योनारी ॥ लहँगालालबैंजनीसारीरतनजड़ावकीचोलीन्यारी ॥ चंपकलीगरेकंठासोहैनकबेसरिकीहैबलिहारी ॥ भूषणवस्त्रविचित्रअंगमेंछबिपैरतिछ

बिदीजैवारी ॥ प्रियादासमडुकीशिरसुंदरेदखिछ
कींछबिगोपकुमारी ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ उलाहनलीला ॥

दोहा ॥ अरीचलौसबबेगहीं, आजयशोदापास ॥
वाकेसुतकेगुणनको, करैंबेगिपरकास ॥ १ ॥ ताही
छिनमेसांवरे, धऱ्योत्रियाकोरूप ॥ भूषणबसनबि
चित्रजे, पहिरेसाजिअनूप ॥ २ ॥ यशुदाजीकेनिक
टपै, करीजायपरनाम ॥ रूपदेखिमोहींसबै, जेढिग
ठाढ़ीबाम ॥ ३ ॥ राग–कलिँगड़ा ॥ यशोदातवसुत
गुणमैंसुनाऊं ॥ कालिहमिल्योमगमोहिमनमोहन
चौंट्योअंगसोकाहदिखाऊं ॥ बांहपकरिलैगयोबि
पिनमोहिंकरीजोवहांसोकाहबताऊं ॥ घूंघुटखोलि
करीजोमोहनकहतमहरिमैंसोसकुचाऊं ॥ ठाकुर
प्रियादासकोब्रजमैंकरैराजहमअबतजिजाऊं ॥ १ ॥
रेखता–बरजोयशोदाश्यामकोप्रगटेबड़ेदुलारे ॥ कर
ताफिरेढिठाईतकितकिकैगेंदमारे ॥ अरीतुमकोतुम्हा

रेप्यारेलागतहैंअबहिंबारे ॥ गुणवाकेसुनोयशुदाहु नियातेहैंगेन्यारे ॥ एकदिवसमेरेघरमोहनचोरीगये तिहारे ॥ ऊखलकोनीचेधरिनीकेछीकेसेदहीउतारे॥ माखनकोसबैखायकैभाँड़नकोफोरिडारे ॥ आतेही हमैंदेखिकैछिपतेहैंजायअंध्यारे ॥ ढूँढ़नभवनमैंपैठी तबहींचतुर्भुजधारे॥ नैनरूपदेखिमोहेप्रियारसिकभ वनसिधारे ॥ १ ॥ दोहा ॥ यहलीलाजोगावही, प ढ़ैसुनैकरिनेम ॥ प्रियादासतारसिकको, अचलर हैगोप्रेम ॥ ४ ॥ इति० ॥

॥ अथचंपकलतागृहगमनलीला ॥

रागईमनदेश ॥ श्यामसखीदोउकरतकलोल ॥ आ लिंगनचुंबनपरिरंभनअपनेअपनेरूपहितोल ॥ छू टीलटअलकैकपोलपैनागिनिसीरहींडोल ॥ प्रिया दासआनँदनिधिलूटीप्रेमविवशबिनमोल ॥ १ ॥ ॥ रागदेवगंधार ॥ प्रेमहिंडोलेसखीप्रभुकोझुलावे ॥ नेहकेखंभपीतिकीडोरीपलकपाटपैहरिहिंरमावे ॥

झोंकादेतरसिकनागरजबतबगोपीनिजकंठलगावे ॥ देखिदेखिमोहनमूरतिकोगोपीहियेबिचहर्षबढ़ावे ॥ प्रियादासछबिलखिदृगछोंके उपमाअधिककहननहिँ आवे ॥ २ ॥ दोहा ॥ चंपकलताकोसुखदियो, निशिमेंसुंदरश्याम ॥ होतप्रातहीचलिभये, मोहनअपनेधाम ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ अथपंडितलीला ॥

॥ राग पीलू॥पंडितरूपबनेबनवारी ॥पीतांबरकीधोतीपहिरेरचिपचिपट्टुलिसँवारी ॥ तिलकभालरच्योमालगलेबिचपोथीकांखतरसोहतन्यारी ॥ शिरपैपान्गुलाबीसोहतकोबरणैछबिअतिशुभकारी ॥ प्रियादासकेठाकुरपहिरिखराऊंबरसानेतनचलेसिधारी१।

॥ अथवैद्यलीला ॥

लावनी ॥ वैद्यबन्योनटवरनंदकिशोर ॥ पुकारतमदनमंजरीकीओर ॥ टेक ॥ वैद्यहमवृन्दाबनबासी ॥

हरतहमबिबिधिव्याधिखांसी ॥ रोगकीनीकेहमैंप हिंचान ॥ दिखावेंरोगीहमैंकोउआन ॥ दो० ॥ वृद्धज्वाननरनारिहो, कोईहोयविकार ॥ हरैंपीरइ कगोलिमैं, सोहमकरतपुकार ॥ टेक ॥ बातएसां चीजानोमोर ॥ बैद्यकोबचनसुनतब्रजनार ॥ निक लिसबद्वारेकरतपुकार ॥वैद्यतूनिकटहमारेआव ॥ प्रगटसबअपनेगुननसुनाव ॥ दो० ॥ हैंव्याकुलय कगोपिका, सुनोवैद्यमहराज ॥ दैवबिदाईगोध नी, जोनीकीकरिहौआज ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ गोपीगजल ॥

नंदकेफरजंदविनमुझकोसखीभातानहीं ॥ चैनइस बेदर्ददिलकोएकछिनआतानहीं ॥क्याकरूंकिस्सेक हूंइसदर्दकोअच्छाकरै ॥ बेदमेरीमर्जकाइससमयतो दिखातानहीं ॥हरतरहसमुझायामैंनेक्याकरूंबेबसभ ई॥प्रियादासकेठाकुरबिनाकोईतरहजातानहीं॥ १॥

॥ नटवरलीला ॥

नटवरलीलाकरतगोपाल ॥ नटवरबेषसजेजैसेमोह नतैसेसजेसबसंगकेग्वाल ॥ कबहूंकलाबांसपैखेल तकबहूंकूदतमहिदैताल ॥ नटलीलामेंचतुरशिरोम णिमोहिलईसबव्रजकीबाल॥प्रियादासकीरतिकीकु मारीरीझिदईउरमोतिनकीमाल ॥ दोहा ॥ नटवर लीलाकान्हकी, पढ़ैसुनैमनलाय ॥ नटनागरआ गरगुणन, लेतवाहिअपनाय ॥ १ ॥ इति० ॥ ॥

॥ हिंडोलालीला ॥

॥ राग पीलू ॥ आजबनझूलतहैंपियप्यारी ॥ हम हूंदेखिआईहनसजनीझूलापऱ्योकदमकीडारी॥ य मुनानिकटतीरबंशीबटश्रीवृन्दावनअतिशुभकारी। गावतरागमलारसोहावनमनभावनहितगोपकुमा री॥प्रियादासवृषभानुसुताकोकबहुँझुलावतछैलबि हारी ॥ १ ॥ राग मलार ॥ सावनमाससोहावन

प्यारी ॥ देखौदामिनिकैसीदमकतनभमंडलमेंघटा आईकारी ॥ मोरशोरवनओरकरतहैंऔरकैलियाकू कतन्यारी ॥ बरसतमेघगरजतहैंनान्हींनान्हींबूंदपर तमहिप्यारी ॥ प्रियादासकहैरसिकशिरोमणिगाव तसावनतनमनवारी ॥ २ ॥ इति० ॥ ॥

॥ फूलबिननलीला ॥

॥ राग षट ॥ फूलनकेहितसखिनसंगचलीश्रीवृष भानुकुमारीहै ॥ अतिसुकमाररूपनिधिश्यामावाछ बिपैबलिहारीहै॥ लहँगालालछरेसमीसोहै[illegible]छबि देतकिनारीहै ॥ तापैसौहैंरंगबैजनीकी[illegible]सारी है ॥ कंठसिरीदुलरीऔतिलरीकौस्तुभमणिउरन्या रीहै ॥ दमकतजुगनूउभयकुचनबिचशोभाकहिबु धिहारीहै ॥ जातबतातमध्यगोपिनकेकीरतिराज कुमारीहै ॥ गजगामिनिसुकुमारिछबीलीहँसतब जावततारीहै ॥ प्रियादासआनंदरसलूटतललिता दिकव्रजनारीहै ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथसांझीलीला ॥

राग देशबागेश्वरी॥प्रियाजीकीसांझीहरिदेखनआये ॥ प्यारीआवतदेखश्यामकोउठकेकंठलगायेसखी लायआसनसुंदरशुचितापैश्यामबिठाये ॥ करकोप करिवृषभानुनंदिनीहरिकेंचित्रदिखाये ॥ देखौप्यारे चित्रतिहारेसांझीकेबिचकैसबनाये ॥ तबहींबचन श्यामशुभमधुरेयोंफिरिकहतसुनाये ॥ तेरेभेदवेदन हिंपावततवदर्शनकोममदृगअकुलाये ॥ तबहिंला लकोकुँवरिकिशोरीसुमनमालपहिराये॥ प्रियादास मिलेयुगुलपरस्परसखीसुमनबरसाये ॥१॥इति० ॥

॥ चतुरताबर्णन ॥

कबित्त ॥गृहीदरिद्रगृहत्यागिनबिभूतिदीन्ह्योपापि नप्रमोदपुण्यवंतसोछलागयो॥ग्रसितग्रहेशकीन्होंश निहिंसुचित्तलघुव्यालनअनंदशेषभारसोंदलागयो ॥ गुणिनफिरावतगृहिनगृहद्वारद्वारगुणतेबिहीनता

हिंबैठकेभलाभयो ॥ कहांलौंबखानकरौंतेरीएकआ
ननसोंनामचतुराननपैचूकतैचलागयो ॥१॥ इति ॥

॥ अथनवदुलहिनलीला ॥

दुलहिनिकोहरिरूपबनायो ॥लहँगापहिरिओढ़िचू
नरियाघूंघुटपटमुखपैपलटकायो ॥ज्योंकेत्योंबैठेबन
ठनकेनखशिखलौंनिजबपनदुरायो।सखीआयदेखी
जबदुलहिनिढिगसजनीकोऔंघतपायो ॥ करझक
झोरिजगायताहिपुनिहर्षतसकलवृत्तांतसुनायो ॥
नारायणबहुकेलेबेकोभानुकुँवरिनेमोहिंबुलायो ॥१॥

॥ अथ मनावनलीला ॥

लावनी ॥ उठौअबमानतजौगोरी ॥ रहीहैरनबहु
तथोरी ॥ सदाकीमनकीतुमभोरी ॥ कहूंमैंशपथखा
यतोरी ॥ दोहा ॥ औरनकेबहँकायेप्यारी,तुमकरि
बैठीरोस ॥ झूठसाँचपरखतनहीं,वृथादेतिहौदोस ॥
यहीमोहिअँचरजहैभारी ॥ १ ॥ तनकहँसिचित

वोसुकुमारी ॥ भनकघुँघुरुनकीबलिहारी ॥ दो० ॥ अपनीओरनिहारिके, देउअलिंगनदान ॥ क्षमाक रौसबचूकमम, जोकछुभईअजान ॥ विनयमेरीमा नोहेगोरी ॥ २ ॥ तिहारेगुणनितप्रतिगाऊं॥ विना आज्ञानकहुँजाऊं ॥ दोहा ॥ ताहूपैदृगअरुणकरि, भृकुटीलेतचढ़ाय ॥ जोरावरसोंनिबलकी, काहूँबि धिनसमाय ॥ हारेहूंहारजीतेहूंहार ॥ ३ ॥ जिन्हे तुमसमुझौहितकारी ॥ सोईअतिकपटीव्रजनारी ॥ दोहा॥हममेंफूटकरायके, आपअलगमुसक्यात ॥ नारायणतुमनेकरी, खरीन्यायकीबात ॥ भलेकोदं डबुरेकोप्यार ॥ ४ ॥ इति० ॥

॥ तमाखूका कवित्त ॥

ज्वरकीहैसासुदुष्टदुलहीहलाहलकीवीछीकीबहि निपरपंचरूपसाजीहैं ॥ नानीकरियारेकीधतूरेकीम मानीपितियानीबच्छनागकीजहानमेंविराजीहै॥क हैंगंगादत्तवेपचावैंधन्यप्राणीजेअफीमकीजिठानी

विषसंखियाकीआजीहै ॥ माहुरकीमौसीमहतारी कालकूटकीतमाखूदईमारीकिसनेएउपराजीहै ॥१॥

॥ कुनारि वर्णन ॥

कबित्त ॥ सासुकेदेखेसिंहिनीसीजमुहाईलेतससुरके देखेबाघिनीसीमुँहबावती ॥ ननँदकेदेखेनागिनी सीफुफकारैंबैठिदेवरकेदेखेडाकिनीसीडरपावती ॥ भाषतप्रधानमूछैंजारतीपरोसिनकीखसमकेदेखेखां उखांउकरिधावती ॥ कर्कशाकसाइनीकुबुद्धिनीकुल च्छनीएकरमकेफूटेघरऐसीनारिआवती ॥ १ ॥

॥ रेखता–इश्कचमन ॥

लगाहैइश्कतुमसेतीनिबाहोगेतौंक्याहोगा?॥मुझेहै शौकमिलनेकामिलावोगेतोक्याहोगा? ॥ हुस्नच स्मोंकेभरप्यालेपिलावोगेतोक्याहोगा?॥ चमनबि चआनकरमुखड़ादिखावोगेतोक्याहोगा?॥ भरमध रताहैकुलआलमहँसावोगेतोक्याहोगा? ॥ सजनतु

मबिनतड़पताजीजिलाओगेतोक्याहोगा?॥ मेरेइस दिलदिवानेकोमनावोगेतोक्याहोगा ? ॥ अजबदी दाररोशनहैछिपावोगेतोक्याहोगा? ॥ चुराकरदि लपरायेकोदिलावोगेतोक्याहोगा? ॥ जिगरकेदर्द कीदारूबतावोगेतोक्याहोगा? ॥ रसिकगोबिंदसी नेसेलगावोगेतोक्याहोगा ? ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ जनकपुरगतरामझांकी ॥

॥ राग भोपाली ॥ देखुसखीझांकीक्याबांकीअति प्यारीप्यारेबनरेकी ॥ अजबअनूपछयलनटनागर कामनिछावरिहैसँवरेकी ॥ शीसमोरमणिजड़ितज गामगतापरछबिहैशेहरेकी ॥ जामाघेरदारजरबीला कटिफेंटापटपियरेकी ॥कंकणलसतकमलकरमाहीं गजमोतीहियगजरेकी ॥ ब्याहविभूषणभूषितअंग नछटाछिटकरहीसगरेकी॥मधुरअलीअलियनकरि घायलनयनरेखवाकजरेकी ॥ सियकोदूलहगजबअ तूलालखिसुधिनरहतिहियहमरेकी ॥१॥रागदेश ॥

सुनौतुमयारननँदोई ॥ तुम्हैंबिनरहबकसहोई ॥ तिहारेनैनरतनारे ॥ बानसमहायहँसिमारे ॥ तबैते पीरनहिंभूलै ॥ हमारेकरतहियेशूलै ॥ तुम्हैंलखि प्राणहैंतनमैं ॥ बिचारौआपहीमनमै ॥ सुरतिकरि भेजियोपाती॥विनयअबकरौंकौनभांती ॥ विरहके सुनतमृदुबैना ॥ लालकेभरेहैंजलनैना ॥ समैनहिँ कहिसकतकोऊ ॥ मधुरअलिप्रेममेंदोऊ ॥ २ ॥

॥ अथरामबिवाहरसवर्णन ॥

॥ रागदेश ॥ छैलयहिगैलआजआया ॥ छबीली छबिक्यादरसाया ॥ मोरअतिसुभगशीशसोहै ॥ जड़ितमणिमाणिकमनमोहै ॥ कुंडलदोउकानमेंह लकैं ॥ कामकीमनहुँमीनछलकैं ॥ दोहा ॥ व्याह विभूषणअंगमें, लसतसुदेशबहार ॥ छटाछिटिकि क्षितिमेंरही, सुषमाअमितअपार ॥ रूपलखिसब केमनभाया ॥ कमलकरकड़ेबड़ेराजैं ॥ मालमोति नकेउरभ्राजैं ॥ तूणकटिकसनिपीतपटकी ॥ मंदग

तिगालिमसियबरकी ॥ दोहा ॥ कमलनयनबाँके बड़े, मनहुँमयनकेबान ॥ सानभरेघायलकरत, भृकुटीपायकमान ॥ बाढ़कजरेकीधरिलाया ॥अवधकोअजबबीररसिया ॥ मजेसेसबकोदिलफँसिया ॥ नहींकहुँअसछबिदेखिपरै ॥ कहैकबिकैसेबुद्धिहरै ॥ दोहा ॥ हँसनिहारचितकीफँसनि, बचनअमीबरसाथ ॥ मधुरअलीतृणतोरिकै, बारबारबलिजाय ॥ सखीसियदूलहुभलपाया ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ मधुरमूर्तिरघुनन्दनवर्णन ॥

राग भोपाली ॥सखीसियकोसजनप्यारा ॥ दिलौंतेहोतनहिंन्यारा ॥ सुरतिअबहायनाहिंभूलै ॥ सांवलारूपदृगझूलै ॥ छटाछबिछयलकीबांकी ॥लखीमैंजबैतेछाकी ॥ नयनदोउमयनकेतीरै ॥ करेंजेलागिदैपीरै ॥हँसनिमृदुबोलनिअतिखांसी ॥ मेरेजनुप्राणकीफांसी ॥ जौंहरीजुल्फमदनछलकैं ॥ चस्ममेरेदेखनकोललकैं ॥सलोनाअवधकोलाला॥ मधुरअलिजेहिंमोहीबाला ॥ १ ॥ इति० ॥ ॥

॥ शामछयलवर्णन ॥

राग बिहाग ॥ छयलछबिहृदयबीचखटकी ॥ सुभगपागसिरपैंचजड़ितमणिकलँगीक्यालटकी ॥बसनबिभूषणललितमनोहरकमरपीतपटकी ॥मधुरअलीनयननमेंझूलतद्युतिनागरनटकी ॥१॥ इति० ॥

॥ रसिकरेखता ॥

जहांब्रजराजकलपायेचलौसखिआजवाबनमें ॥ बिनावारूपकेदेखेबिरहकीदौंलगीतनमें ॥ नकलपड़तीहैबेकलकोनजीलगताहैबिनजानी ॥ भईफिरतीं हौंयोगिनसीअरीबाजारगलियनमें ॥ करूंकुर्बान दिलउसपरजनमभरगुणनभूलौंगी ॥ मेरामहबूबजोलाकरबिठादेमेरेआँगनमें ॥ नहींकछुगर्जदुनियाँसेनमतलबलाजसेमेरा ॥ जोचाहोसोकहोकोईब्रसाअबतौवहीमनमें ॥ तेरीयहबातहैसांचीनहींशकइस्में ॥ नारायणजोसूरतिकाहैमस्तानावोमानैंकैसेबातनमें ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ अथ सुकविप्रशंसा ॥

दोहा–सबसौंऊंचेसुकविजन, जानतरसकोसोत॥
जिनकेयशकीदेहको, जरामरणनहिंहोत॥

॥ अथ काव्यप्रशंसा ॥

सोरठा–प्रभुज्योंसिखवैवेद,मित्रमित्रज्योंसतकथा।
काव्यरसनिकोभेद,सुखसिखदातियानिज्यों॥१

॥ अथ श्रीकृष्णचन्द्रछबिवर्णन ॥

दोहा–मोरपंखकोमुकुटशिर, उरतुलसीदलमाल॥
यमुनातीरकदम्बढिग, मैंदेखोनँदलाल॥

॥ अथ सत्संगमहिमा ॥

दोहा–जडताईमतिकीहरत, पापनिबारतअंग॥
कीरतिसत्यप्रसन्नता, देतसदासत्संग॥

॥ ब्राह्मणमाहात्म्य–सवैया ॥

ब्राह्मणपैठिपतालछल्योबलि, ब्राह्मणसाठिहजार
कोजाऱ्यो॥ ब्राह्मणशोखिसमुद्रलियोअरु, ब्राह्मण

हीपद्दुवंशउजाऱ्यो ॥ ब्राह्मणलातहनीहरिकेउर, ब्राह्मणक्षत्रिनकोदलमाऱ्यो॥ ब्राह्मणसेजनिवैरकरो कोउ, ब्राह्मणसेपरमेश्वरहाऱ्यो ॥ १ ॥

यशोदापूर्णभाग्यवर्णन

यशोदापूरनभागनिधान ॥ देखदेखसुतचरितमनो हरआनँदउरनसमान ॥ कबहूँबानकृपानगहतहरि कबहूँवृषभविखान ॥ कबहूँहरिमुखदेतअंगुरीपरस तकबहुँकृशान॥अतिआतुरजननीउठिधावतपरबस पकरतपान॥ हरिबिलासद्विजबोलपढ़ावतसुतहित देतसुदान ॥ १ ॥

॥ अथ शृंगाररसलक्षण ॥

दोहा—उचितप्रीतिरचनावचन, सोशृँगाररसजान॥
सुनतप्रीतिमयचितद्रवै, तबपूरणकरिमान॥

॥ अथ हासरसलक्षण ॥

दोहा—हँसीभऱ्योचितहँसिउठै, जोरचनासुनिदास॥
कविपण्डिततताकोकहैं, यहपूरणरसहास ॥

॥ अथ करुणारसलक्षण ॥

दोहा–शोकचित्तजाकेसुने, करुणामयव्हैजाइ ॥
ताकविताईकोकहैं, करुणारसकबिराइ ॥

॥ अथ वीररसलक्षण ॥

दोहा–जोउत्साहिलचित्तमें, देतबढ़ाइउछाह ॥
सोपूरणरसवीरहै, रचैंसुकविकरिचाह ॥

॥ अथ रुद्र, भयानक, बीभत्स, अद्भुत रसलक्षण ॥

दोहा–व्हैरिसबाढ़ैरुद्ररस, भयहिभयानकलेखि ॥
घृणतेहैबीभत्सरस, अद्भुतविस्मयदेखि ॥

॥ अथ शांतरसलक्षण ॥

दोहा–मनविरागसमअशुभशुभ, सोनिर्वेदकहन्त ॥
ताहिबढ़ेतेहोतहै, संतहियेरसशान्त ॥

जलभरनलीला.

गागरनाभरनदेततेरोकान्हमाई ॥ हँसिहँसिमुखमो

रमोरगागरछिटकाई ॥ घूंघटपटखोलखोलसामरो कन्हाई ॥ यशुमतितैंभलीबातलालकोसिखाई ॥ अगरबगरझगरोकरतशरतौमचाई ॥ हौंतोबीरयमुनातीरनीरभरनजाई ॥ गिरिधरकेचरणऊपरमीराबलिजाई ॥ १ ॥

॥ दादरा ॥

अलकजालकेफंदेपरोना ॥ जोचाहोकुशलातहियेकीमृदुसुखयानअरोनअरोना ॥ तुमनलिनीमनमोहनमधुकरभूलेवाकीगैलढरोना ॥ ललितकिशोरीऔघटचलियेभोराघाटभरोनभरोना ॥ १ ॥

॥ नवनिधिनारीवर्णन सवैया. ॥

भोरहितेउठिगायदुहावतआनतहैगगरीदशपानी ॥
रूपसुरूपअनूपपतिव्रतसुव्रतप्रीतमकोसनमानी ॥
खाबसँवारिबनावतहैबिद्यापतिपूरुषकेमनमानी।पा
नीकेमांगतदूधपरोसतनारिनहींघरनौनिधिआनी॥

॥ अथ जीवन्मुक्तवर्णन--सवैया।

भूखेअघानेरसानेरिसानेहितूअहितूनसोंस्वच्छ
हैं ॥ दूषणभूषणकंचनकांचजुमृत्तिकामाणिकए
गनेहैं ॥ शूलसोंफूलसोंशालपलाशसों दासहिये
समसारसनेहैं ॥ रामकेनामसोंकेवलकाम, तेईजग
जीवनमुक्तबनेहैं ॥ १ ॥

॥ अथ शमदमलक्षण ॥

रोकनमनविषयनतेरोकनो,शमतिहिंकहतसुधीर॥
इन्द्रियगणकोरोकनो, दमभाषतबुधवीर॥१॥

॥ अथ श्रद्धासमाधानलक्षण ॥

...वेदगुरुवाक्यहैं, श्रद्धाअतिविश्वास ॥
...धानताकोकहत, मलविक्षेपकोनाश ॥

...धिकाविरहवर्णन-सवैया ॥

...हमैबिसरायगेयमथुरापितुधामजहांहैं ॥
...कैयदुनन्दनकूबरिकूबरमेंद्योतहांहैं ।

...वुवंशरहेरमिवाढिगयाहीतेशोचमहाउमहाहै ॥
...पैसखीकहैंलाजकरो,जबलागगईतबलाजकहांहै।

॥ अथ पंचपरमेश्वरवर्णन-सवैया ॥

स्वारथऔपरमारथमाहिं, यथारथबातऔसबजानी ॥ रंकऔरावकोएकहिभाव, निशंकनिभावनिपाटहिंछानी ॥ संकटप्राणपरेहूप्रधान... आननभाषहिंबानी ॥ लांचनओरलखैं... सांचनकोपरमेश्वरजानी ॥ १ ॥

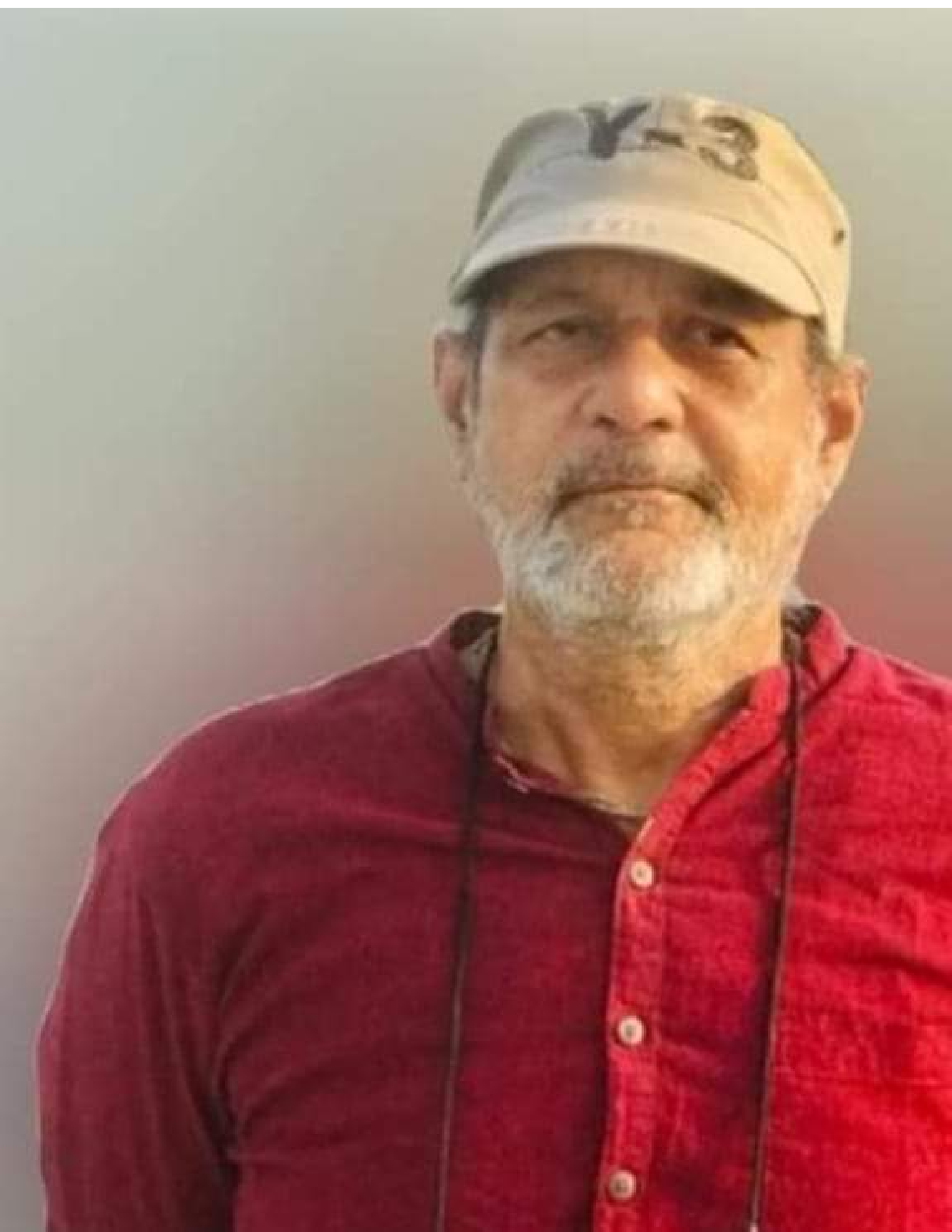
परपंचवर्णन-सवैया

न्यायकीरीतकोजानैंनहींझगराझुनि... सावैं ॥ धोरकीओरनियावकरैंसा... लाघरावैं ॥साखीबदैंअपराधिनको... कलंकलगावैं ॥ नर्कपरैंउनकेपुरिखाजेकरैंपरपंचकहावैं ॥ १ ॥ इति सूर्यपुराणादि १९

समाप्त.




क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप॥


Y-3